सारस्वत व्याकरण सटीक

पञ्चसन्धि

जिसमें

संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसन्धि, प्रकृतिभाव, व्यंजन सन्धि और विसर्गसन्धि का विस्तार-पूर्वक वर्णन है ॥

जिसको

उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुलने श्रीमुंशीनवलकिशोर(सी,आई, ई) के व्यय से अनुभूतिस्वरूपाचार्य के मूल और किशोरकवि के दोहाओंके आशयसे व्याकरणके पढ़नेवालों के अनुरागकेलिये भाषामें टीका रचना कियाहै ॥

दूसरीवार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

जनवरी सन् १८९२ ई०

सारस्वत व्याकरण सटीक

पञ्चसन्धि

संज्ञाप्रक्रिया

प्रणम्य परमात्मानं बालधीवृद्धिसिद्धये ॥
सारस्वतीमृजुं कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम् १

इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुःशब्दवारिधेः ॥
प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य क्षमोवक्तुं नरःकथम् २

अथ रामविहारीसुकुलकृत सारस्वतटीकायां संज्ञा-प्रक्रिया प्रारभ्यते ॥

अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य इस सारस्वत व्याकरण के बनाने वाले कहते हैं कि मैं परमात्मा श्रीपरमेश्वरजी के नमस्कार कर बालकों की बुद्धि के बढ़नेके निमित्त अत्यन्त छोटी जो प्रक्रिया सारस्वतनामक व्याकरणहै तिसको सरलकरताहूं १ जिस शब्दरूपी समुद्र व्याकरण के अन्त को इन्द्रादिक देवता भी न जासके तिसी सम्पूर्ण प्रक्रिया अर्थात् सारस्वत ग्रन्थके सम्पूर्ण कहबेको मैं मनुष्य कैसे योग्य होसक्ता हूं २ ॥

तत्र तावत्संज्ञा संव्यवहाराय संगृह्यन्ते
अ इ उ ऋ लृ समानाः

अनेन प्रत्याहारग्रहणाय वर्णाः परिगण्यन्ते तेषां समानसंज्ञा च विधीयते । नैतेषु सूत्रेषु सन्धिरनुसन्धेयोऽविवक्षितत्वात् विवक्षितस्तु सन्धिर्भवतीति नियमात् लौकिकप्रयोगनिष्पत्तये समयमात्रत्वाच्च ॥

अथ कवि किशोरकृत सारस्वत दोहाओं में संज्ञाप्रक्रिया प्रारम्भ हुई ॥

दोहा । अ इ उ ऋ लृ ये सकल समान संज्ञा मान ॥
इन सूत्रन में नहीं है सन्धी अनुसन्धान १
वक्ता की जब विविक्षा होय सन्धि के हेत ॥
सन्धि योग ता अस्थल में पूरण शोभा देत २
पद उपसर्ग समास अरु धातुवाक्य जहँहोय ॥
सन्धि तहाँहीं नित्यहै कहै सुकवि नर लोय ३
समय मात्र ये सूत्रसब लोक प्रयोगन हेत ॥
भने विभूषण युत सरस कियो रूप संकेत ४

पहले तहां संज्ञाप्रक्रिया सन्धि निमित्त वर्णन करते हैं अ इ उ ऋ लृ ये सब समान हैं इन में सन्धियां होसक्ती थीं परन्तु नहीं कीगईं क्योंकि यह नियम है कि वक्ता की जिन स्थलों में सन्धि करने की इच्छा होवे वहीं सन्धि होवे पद, उपसर्ग, समास और धातु वाक्य इन में सन्धि अवश्य हैं अ इ उ ऋ लृ इस में वक्ता की इच्छा नहीं थी इस से ऐसाही रक्खा गया है ॥ और समयमात्र ये सब सूत्र लोक के प्रयोगों की सिद्धि के लिये हैं ॥

ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः सवर्णाः

एतेषां ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः परस्परंसवर्णा भण्यन्ते लोकाच्छेषस्य सिद्धिरिति वक्ष्यति ततोलोकतएव ह्रस्वादिसंज्ञाज्ञातव्या । एकमात्रोह्रस्वः, द्विमात्रोदीर्घः । त्रिमात्रः प्लुतः, व्यञ्जनंचार्द्धमात्रकम्—एषां मध्ये तूदात्तादिभेदाः सन्ति । उच्चैरुपलभ्यमानउदात्तः । नीचैरनुदात्तः । समवृत्यास्वरितः ।

दोहा । सकलसवर्णीपरसपर स्वर ह्रस्वादिबखान ।
मात्र एक द्वै तीन की क्रमते संख्या जान ॥
अर्द्धमात्र व्यंजन कहौ ह्रस्व मात्रा एक ।
दीर्घप्लुत द्वैतीनकल समझहु चतुर विवेक ॥

सब स्वरों में ह्रस्व दीर्घ और प्लुत ये तीन प्रकार के स्वर होते हैं इन की सिद्धि लोकही से जानवे योग्य है इन में एक मात्रा वाला ह्रस्व होताहै—जैसे—अ इ उ—और दो मात्रा का दीर्घ होता है जैसे आ ई ऊ—और तीन मात्रा का प्लुत होता है जैसे कृष्णा—और आधी मात्रा का व्यंजन होता है जैसे क् च् ट् त् प्—इनके मध्य में और भी उदात्तादि के भेद हैं जैसे जो ऊंचे स्वर से बोला जावे वह उदात्तहै—जैसे श्रीकृष्णा और जो नीचे स्वर से बोला जावे वह अनुदात्त है जैसे अय हरि और जो मध्यम स्वर से बोला जावे वह स्वरित है जैसे अय राम कृष्ण ॥

ए ऐ ओ औ संध्यक्षराणि
एषां ह्रस्वा न सन्ति

दोहा । भने जो वेद सुवर्ण ये सन्धी अक्षर सोय ।
दीर्घ प्लुत परसिद्ध हैं ह्रस्व भेद नहिं होय ॥

ए ऐ ओ औ इन चार स्वरोंमें ह्रस्व नहीं होता ये दीर्घही कहाते हैं और ये चारों सन्धि के अक्षर भी हैं ॥

उभये स्वराः

अकारादयः पंच, चत्वार एकारादय इत्युभये स्वरा उच्यन्ते

दोहा। पांच अकारादिक बहुरि एकारादिक चार।
सो उभय स्वर मानिये मनमें लेहु विचार॥

अ इ ऊ ऋ ऌ ये पांच अकारादिक और ए ऐ ओ औ ये चार एकारादिक ये नव उभयस्वर कहाते हैं ॥

अवर्ज्जानामिनः

अवर्णवर्ज्जाः स्वरानामिनउच्यन्ते

दोहा। अवर्ण वर्जित स्वर सबै संज्ञानामि सुजान।
यह संज्ञा आवे जहाँ स्वर समस्त परमान॥

अकार को छोड़ के बाकी सब स्वर नामी कहाते हैं ॥

अनुक्रान्तास्तावत्स्वराः प्रत्याहारं जिघ्राहयिषया व्यंजनान्यनुक्रामति--हयवरल ञणनङम झढधघभ जडदगब खफछठथ चटतकप शषसेति ॥

आद्यन्ताभ्याम्

प्रत्याहारं जिघृक्षता आद्यन्ताभ्यामेते वर्णग्राह्याः आदिर्वर्णोऽन्त्येन सह गृह्यमाणस्तन्नामा प्रत्याहारः तथाहि अकारोबकारेण सह गृह्यमाणः अब्प्रत्याहारः सच अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ हयवरल ञणनङम झढ धघम जडदगब--इत्येतावत्संख्याकस्सम्पद्यते चटतकप इति चपप्रत्याहारः। जडदगब-इति जब्प्रत्याहारः। झ

ढधघभ-इति झभ्प्रत्याहारः। ञणनङम-इति ञम्प्रत्याहारः एवं यत्र यत्र येन येन प्रत्याहारेण कृत्यं स तत्र तत्र ग्राह्यः संख्यानियमस्तु नास्ति॥

हसाव्यंजनानि

हकारादयः सकारान्तावर्णा हसाव्यंजनानि भवन्ति। स्वरहीनं व्यंजनं तेष्वकारः सुखमुखोच्चारणार्थत्वादित्संज्ञकोभवति॥

इतना तो स्वरों का वर्णन हुआ अब प्रत्याहार ग्रहण कराने की इच्छा करके व्यंजनों का वर्णन करते हैं॥

प्रत्याहार वर्णन॥

दोहा। प्रत्याहार प्रमाण यों कहैं सुकवि मनहर्ण।
आदि अंत अक्षरनसँग समझ मध्यहूवर्ण॥

प्रत्याहार उदाहरण॥

ह य व र ल ञ ण न ङ म झ ढ ध घ भ ज ड द ग ब ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स॥

अन्त वर्ण के साथ ग्रहण किया हुआ जो आदि वर्ण है सोही प्रत्याहार कहलाता है जैसे अकार को बकार के साथ उच्चारण करने से अब् प्रत्याहार बोला जायगा और मध्य के अक्षरजो अ इ उ ऋ लृ ह य व र ल ञ ण न ङ म झ ढ ध घ भ ज ड द ग ब हैं ये सम्पूर्ण भी अब् प्रत्याहारही में समझे जायँगे इसी तरहसे च ट त क प--च--से--प -तक ये चप् प्रत्याहार हैं—ज ड द ग ब-ज-से-ब-तक ये जब् प्रत्याहार हैं—झ ढ ध घ भ--झ -से भ-तक ये झभ् प्रत्याहार हैं--ञ ण न ङ म--ञ--से म-तक ये ञम् प्रत्याहार कहाते हैं इसी तरह से और भी जानो इनमें कुछ संख्या का नियम नहीं है आदि के अक्षरसे लगा के अन्त के अक्षर पर्य्यन्त के सब अक्षर उसी प्रत्याहार

में गिने जायँगे--ह--से लगाके स पर्य्यन्त ३३ व्यंजन हैं व्यंजन स्वरहीन होते हैं स्वरहीनका उच्चारण अच्छीतरह से नहीं होता इससे इनमें अकार स्वर लगादिया जाताहै ॥

कार्यायेत्

प्रत्ययाद्यतिरिक्तः कस्मैचित्कार्यायोच्चार्यमाणोवर्ण इत्संज्ञकोभवति; यस्येत्संज्ञा तस्य लोपः प्रत्ययाऽदर्शनंलुक् ॥

वर्णादर्शनंलोपः

वर्णविरोधोल्लोपश्, मित्रवदागमः, शत्रुवदादेशः ॥

स्वरानन्तरिताहसाः संयोगः

कुचुटुतुपुवर्गाः, उकारः पंचवर्णपरिग्रहणार्थः ॥

अरेदोनामिनोगुणः

नामिनस्थानिका अर् ए ओ एते गुणसंज्ञकाभवन्ति

आरैऔवृद्धिः

आ आर् ऐ औ एते वृद्धिसंज्ञकाभवन्ति ॥

अन्त्यस्वरादिष्टिः

अन्त्योयः स्वरस्तदादिर्वर्णः सटिसंज्ञकोभवति ॥

दोहा। प्रत्ययसों अतिरिक्त जो इत संज्ञा सो जान।
ताको लोप प्रमानिये भनैं सुबुद्धि निधान ॥

प्रत्यय आदिको छोड़ के और वर्ण की इत् संज्ञा है जिसकी इत् संज्ञा है उसका लोप होजाता है प्रत्यय का न दिखलाई देना उसको लुक् कहते हैं वर्ण के न दिखलाई देनेको लोप कहते हैं आगम मित्र के तुल्य होता है आगम वह है जो वर्णों के बीच में किसी सूत्र से कोई वर्ण आ जावे उसको आगम कहते हैं आदेश शत्रु के तुल्य होता है अक्षर की जगह में जो

अक्षर होजाता है उसको आदेश कहते हैं स्वरों को छोड़ के सब व्यंजनों की हस् संज्ञा है (कु चु टु तु पु) ये वर्ग कहाते हैं इन पांचों वर्गों में जो उकार मात्रा है वह पांचों वर्गों के ग्रहण के लिये है जैसे (कु) से क ख ग घ ङ ये पांच कवर्ग हुये (चु) से च छ ज झ ञ ये पांच चवर्ग हुये (टु) से ट ठ ड ढ ण ये पांच टवर्ग हुये (तु) से त थ द ध न ये पांच तवर्ग हुये (पु) से प फ ब भ म ये पांच पवर्ग हुये—(ऋ) के अर् (इ) के ए (उ) के ओ होजाना यह गुण कहलाता है (अ) के आ (ऋ) के आर् (इ) के ऐ (उ) के औ होजाना यह वृद्धि कहलाता है ॥

अन्त्यके स्वर के आदि के वर्ण की (टि) संज्ञा होती है ॥

अन्त्यात् पूर्वोपधा

अन्त्यात् वर्णमात्रात्पूर्वो योवर्णः सउपधा संज्ञको भवति ॥

असंयोगादिपरोह्रस्वोलघुः

विसर्गानुस्वारसंयोगादिपरोदीर्घश्च गुरुः

दोहा। अन्त वर्ण के आदि जो उपधा अक्षर सोय।
विसरग संयोगी बहुरि अनुस्वार नहिं होय ॥

अन्त्य वर्ण के आदि के वर्ण की उपधा संज्ञा है ॥

असंयोगादि के परे ह्रस्व लघु होता है—विसर्ग, अनुस्वार संयोगादि के परे दीर्घ भी गुरु होता है ॥

मुखनासिकावचनोनुनासिकः

मुखनासिकाभ्यामुच्चार्य्यमाणोवर्णो ऽनुनासिकः । द्विविन्दुर्विसर्गः । शिरोविन्दुरनुस्वारः। अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः। इचुयशानांतालुः। ऋटुरषाणांमूर्द्धा। ऌतुलसानांदन्ताः । उपूपध्मानीयानामोष्ठौ । ञमङण नानांनासिकाच ✕ क इतिजिह्वामूलीयः। ✕ पइत्युप

ध्मानीयः । अं इत्यनुस्वारः । अः इति विसर्गः ॥

इत्यनुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृते सारस्वते
संज्ञाप्रक्रिया समाप्ता ॥

दोहा। मुख नासाते बुलैं जो अनुनासिक सो वर्ण।
या प्रकार वर्णन करैं सुन्दर कवि मन हर्ण ॥

इति कविकिशोरकृत सारस्वत दोहाओंमें
संज्ञाप्रक्रिया समाप्त हुई ॥

मुख और नाक से जो अक्षर बोले जाते हैं उनको अनुनासिक कहते हैं दो बिन्दियों (:) को विसर्ग कहते हैं अक्षर के शिर पर जो बिन्दी होती है उसको अनुस्वार कहते हैं जैसे (कं) इसमें (क) की बिन्दी को अनुस्वार कहते हैं--अ आ क ख ग घ ङ और विसर्ग (:) येकण्ठसे बोले जाते हैं और कण्ठ्य कहलाते हैं। इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालुसे बोले जातेहैं और तालव्य कहाते हैं। ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ये मूर्द्धा से बोले जाते हैं और मूर्द्धन्यकहाते हैं। ऌ ॡ त थ द ध न ल स ये दांत से बोलेजाते हैं और दन्त्य कहाते हैं। उ ऊ प फ ब भ म और उपध्मानीय अर्थात् ᳵप ये ओष्ठसे बोले जाते हैं और ओष्ठ्य कहाते हैं। ञ म ङ ण न ये निज वर्गोक्तस्थान और नासिका से बोले जाते हैं और अनुनासिक कहाते हैं। ᳵक यह जिह्वामूलीय कहाता है ।ᳵप यह उपध्मानीय कहाता है (अं) इसमें (अ)के शिरपर जो बिन्दीहै उसकोअनुस्वारकहते हैं (अः) इसमें (अ) के आगे जो दो बिन्दी हैं उनको विसर्ग कहते हैं ॥

इति रामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां
संज्ञाप्रक्रिया समाप्ता ॥

अधुनानुभूतिस्वरूपाचार्यकृतस्वरसन्धिर्विधीयते ॥

इयंस्वरे

इवर्णोयत्वमापद्यते स्वरे परे

दधिआनयइतिस्थिते दध्य्आनय इति तावत् भवति

अथकविकिशोरकृतदोहाओंमेंस्वरसन्धिप्रारम्भहुई ॥

दोहा । स्थितिहोय जो स्वरपरे इस्वरसों सुनमीत ।
सोई यवरण कीजिये लखव्याकरणसुरीत ॥

अथ रामविहारीसुकुलकृत सारस्वतभाषाटीकायां स्वरसन्धिः प्रारभ्यते ॥

ह्रस्व इकार वा दीर्घ ईकार के आगे जो कोई स्वरहोवे तो इकार वा ईकारका यकार होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे दधिआनयहै इसमें दधि धकारकी इकार के आगे आनय की आकार स्वरहै तो धकारकी इकार का यकार होगया तो दध्यआनय ऐसा रूप हुआ ॥

हसेर्हसः

स्वरात्परो रेफहकारवर्जितो हसोहसेपरे द्विर्भवति इतिधकारस्यद्वित्वं पुनर्द्वित्वेप्राप्तेनाद्विरुक्तस्य द्विरुक्तिःद्वित्वविधानसामर्थ्यात् द्वावेवशिष्येते अन्येहसालुप्यन्ते ॥

दोहा । वर्जित रेफ हकार सों जैहसहो द्वितहोत ।
परन्तु स्वरते परेहो बरणत बुद्धि उदोत ॥

हस् प्रत्याहार के परे रकार और हकार को छोड़के जो हस् स्वरतेपरे होवे वह द्वित्व होजायगा—परन्तु रकार हकार नहीं होसक्ता ॥

उदाहरण॥

यहां द धू यू आनय इसमें हस् प्रत्याहार यकारकेपरे धकार हस् स्वर दकार की अकार के परे है तो धकार द्वित्व होगई तो द धू धू यू आनय यह रूप हुआ अब इसमें फिर भी धकार इसी हसेर्हसः सूत्र से द्वित्व होसक्तीथी तिसमें यह लिखा है कि एकबार जो द्वित्व होगयाहो और फिर द्वित्व होसक्ताहो तो द्वित्व के द्वित्व नहो द्वित्वविधान की सामर्थ्य से दोही धकारें रहीं और जो हसेर्हसः इससूत्र से द्वित्वकर दी भी जावें तो उन हसोंका लोप होजावे॥

झबे जबाः

झसानां झबेपरे जबाभवन्ति। इतिपूर्वधकारस्य दकारः। सवर्णत्वात् "वर्ग्योवर्ग्येण सवर्णः" इति वचनात्। यथासंख्यंवावक्तव्यं। स्वरहीनंपरेण संयोज्यं। दद्ध्यानय इति सिद्धम्॥

दोहा। झसहो जो झबते परे यही रीति उरधार।
झसको जब करलीजिये वर्गनुसार विचार॥

झब् प्रत्याहारके परे जो झस्होवें तोझस के जब होजाते हैं—इसमें द धू धू यू आनय में झब् प्रत्याहार में अन्त की धकार है और झस् प्रत्याहार में दूसरी पहले की धकार है तो पहले की धकार का दकार होगया तो द द् धू यू आनय ऐसा रूप हुआ॥

दोहा। पर अक्षर संयुक्तकर जो अक्षर स्वरहीन।
दद्ध्यानय याविधिभयो समझहु पर्म प्रवीन॥

फिर जब धकार का दकार होगया तो यह लिखते हैं कि धकार का दकारही क्यों हुआ और कोई जब् प्रत्याहार का अक्षर होजाता तो उसके उत्तर में यह भी नियम है कि जिस संख्यावाला झस् होता है उसी संख्या का जब् होजाताहै इस

में झस् तीसरा अक्षर धकारथा उसका तीसराही अक्षर दकार होगया। और स्वरहीन जो अक्षरहोवे वह आगे के स्वर में मिलजाता है--इसमें द द् ध् य् आनय में द् ध् य् ये तीनों अक्षर स्वरहीनथे सो आनयकी आकारमें मिलगये तो द-द्ध्यानय यह पद सिद्धहोगया॥

गौरी अत्र। अर्हइति विशेषणान्नरेफस्य द्वित्वं किन्तु

राद्यपोद्विः

स्वरपूर्व्वाद्रेफात्परो यपोद्विर्भवति।

जलतुंबिकान्यायेन रेफस्योर्ध्वगमनम् गौर्य्यत्र॥

दोहा। स्वरते उत्तर रेफ जो तापर यपद्वितहोत।

रेफहोत जलतुम्बिका बरणत बुद्धि उदोत॥

स्वरते उत्तर जो रेफ तातेपरे जो यप् सो द्वित्व हो॥

उदाहरण॥

जैसे गौरी अत्र में इयंस्वरे करके गौरी सों गौर्य् हुआ और राद्यपोद्विः करके यकार यप्को द्वित्व किया फिर जल-तुम्बिका अर्थात् जैसे जलमें तुम्बी उतराती है इसीतरह से रकार व्यंजन के ऊपर उतराती है इसन्यायकरके यकार के ऊपर रेफहोगई तो गौर्य्यत्र यह पद सिद्धहोगया॥ ऐसेही और भी जानो॥

स्वरइत्यनुवर्त्तते। एवमन्यत्रापि यत्रनसूत्राक्षरैः कार्य-सिद्धिस्तत्रसर्वत्र सूत्रान्तरात्पदानुवृत्तिर्ज्ञातव्या। ग्रन्थ-भूयस्त्वभयान्नास्माभिर्लिख्यते॥

उवम्

उवर्णो वत्वमापद्यते स्वरेपरे॥

दोहा। उकार सों जो स्वरपरे सो वकार होजाय।

यही सूत्रको अर्थ है सुनो मित्र चितलाय॥

जहां सूत्र अक्षरनसों काम न चलै सुजान।
अनुवृत्ति वा अपकृषण करनो पड़ै निदान॥

इस उवम्सूत्रमें पूर्वसूत्र से स्वरे अनुवर्त्तन किया जाता है तब वृत्तिका अर्थ लोपहोताहै—अर्थात् उवम् सूत्रमें उवम् स्वरे यह होनाचाहिये था क्योंकि इसी सूत्र की वृत्ति में स्वरे परे यहपाठहै तिसपर अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य इसपुस्तकके आचार्य्य ने लिखाहै कि ग्रन्थके बढ़ने के कारण से हमने नहीं लिखाहै-- जहां सूत्र के अक्षरों से कार्य्यकी सिद्धि नहो तहां और सूत्रों से कार्य्यकी सिद्धि करनी चाहिये उकार के आगे जो कोईस्वरपरे होवे तो उकार का वकारहोजावे॥

उदाहरण॥

यहां मधुअत्र ऐसी स्थितिहुई इसमें उकार जो मधुशब्दमें धकार में है तिसके आगे अत्रका अकार स्वरपरे है तो उकारका वकार होगया तो मध्व् अत्र हुआ फिर हसेहसः सूत्र करके धकार को द्वित्व हुआ तो म ध् ध् व् अत्र ऐसा रूप हुआ अब झबेजबाः सूत्र करके पहली धकार को दकारबनाया और हीन स्वर मानके तीनों को अत्र की अकारमें मिलादिया तो मद्ध्वत्र यह सिद्धरूप हुआ--ऐसेही और भी जानो॥

ऋरम्॥

ऋवर्णो रत्वमापद्यते स्वरेपरे॥

दोहा। ऋवर्ण सों जो स्वर परे रेफहोत तत्काल।
कविकिशोरवरणनकरतसुन्दरसुगमसुचाल॥

ऋकार के आगे जोकोई स्वर परेहोवे तो ऋकार के रकार होजाता है--

उदाहरण॥

जैसे पितृअर्थः ऐसी स्थितिहुई इसमें पितृ शब्दकी तकार की ऋकार के आगेअर्थः की अकार स्वर है तो ऋकार के रकार

होगया तो पितर् अर्थः हुआ अब स्वरहीन तकार और रकार अर्थः की अकार में मिल गये तो पित्रर्थः यह सिद्धरूप हुआ॥

लृलम्

लृवर्णो लत्वमापद्यते स्वरेपरे॥

दोहा। लृ लकारहो स्वरपरे समझहु परम सुजान।
लृ आकृति के लाकृती उदाहरण परिमान॥

लृकार के आगे जो कोई स्वर परे होवे तो लृकारके लकार होजाता है॥

उदाहरण॥

जैसे लृ आकृतिः ऐसी स्थिति है इस में लृकार के आगे आकृतिः की आकार स्वर परे है तो लृकार के लकार होगया ल् आकृतिः की आकार में मिलगई तो लाकृतिः यह सिद्ध रूप हुआ॥

एअय्

एकारो अय्भवति स्वरेपरे॥

दोहा। जो ए सों हो स्वरपरे रूपबदल अयहोत।
ने अनं नयनंभयो जिमि बरणतबुद्धिउदोत॥

एकार के आगे जो कोई स्वर परे होवे तो एकार का अय् हो जाता है॥

उदाहरण॥

जैसे ने अनं ऐसी स्थिति है इस में नकार की एकारके आगे अनं की अकार स्वर परे है तो एकार के अय् होगया तो न् अय् [अनं] ऐसाहुआ नकार अय्की अकारमें मिलगई यकारअनंकी अकार में मिलगई तो नयनं यह सिद्धरूप हुआ॥

ओअव्

ओकारो अव्भवति स्वरेपरे॥

दोहा । अब ओकार विचारिये जो स्वरपरै निदान ।
भोअतिभवतिहोतजिमि उदाहरणपरिमान ॥

ओकार के आगे जो कोई स्वर परे होवे तो ओकार के अव् हो जाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे भो अति ऐसी स्थिति है इसमें भकार की ओकार के आगे अति की अकार स्वर परे है तो ओकार के अव् होगया तो भ् अव्अति ऐसा हुआ भकार अव् की अकारमें मिल गई और वकार अति की अकार में मिलगई तो भवति ऐसा सिद्ध रूप हुआ ॥

गवादेरवर्णागमोक्षादौ वक्तव्यः ॥

दोहा । शब्द गवादिक सों परे अक्षादिक जो होत ।
अवर्ण आगमहोय तब बरणत बुद्धिउदोत ॥

गवादिक अर्थात् गो, प्र, स्व, अक्ष इन के आगे जो अक्षादिक अर्थात् अक्ष, अजिन, इन्द्र, ऊढ, इर, ईरिणी, ऊहिणी ये शब्द आवें तो दोनों शब्दों के बीच में अवर्ण का आगम हो जाताहै ॥

उदाहरण ॥

जैसे गो अक्षः ऐसी स्थिति है तो इस में गवादिकों में गो शब्द है और अक्षादिकों में अक्ष शब्द है तो अक्ष और गो शब्द के बीच में अवर्ण का आगम आ गया तो गो अ अक्षः ऐसा हुआ अब ओअव् सूत्र करके गकार की ओकार के अव् होगया तो ग् अव्अ (अक्षः) ऐसा हुआ फिर सवर्णे दीर्घस्सह इस सूत्र करके अवर्ण की अकार और अक्षः की अकार दोनों मिलके दीर्घ आकार होगई तो ग् अव् आक्षः ऐसा हुआ गकार अव् की अकार में मिलगई वकार आक्षः की आकार में मिलगई तो गवाक्षः यह सिद्ध रूप हुआ ऐसेही गवाजिनम्

भी जानो ॥ फिर गो आगे इन्द्रः की इकार है इस में भी गवादिकों में गो शब्द और अक्षादिकों में इन्द्रः शब्द परे है तो दोनों शब्दों के बीच में अवर्ण का आगम आ गया तो गो अ इन्द्रः ऐसाहुआ फिर ओअव् सूत्र करके गकार की ओकार के अव् हुआ तो ग् अव् अ इन्द्रः ऐसा हुआ फिर अ इ ए सूत्र करके अवर्ण की अकार और इन्द्रः की इकार दोनों मिल के एकार होगये तो ग् अ व् एन्द्रः ऐसा हुआ गकार अव् की अकार में मिलगई वकार एन्द्रः की एकार में मिलगई तो (गवेन्द्रः) ऐसा सिद्ध रूप हुआ ॥ स्व आगे इरं है इस में भी अक्षादिकों में इरं शब्द है और गवादिकों में स्व शब्द परे है तौ दोनों के बीचमें अवर्णका आगम आ गया तो स्व अ इरं ऐसा हुआ फिर अ इ ए सूत्र करके अवर्ण की अकार और इरं की इकार दोनों का एकार होगया तो स्व अ एरं ऐसा हुआ फिर ए ऐ ऐ सूत्र करके स्व की अकार और एरं की एकार दोनों का ऐकार होगया तो स्व् ऐरं हुआ स्व् ऐरं की ऐकार में मिलगई तो (स्वैरं) यह सिद्ध रूप हुआ ऐसेही स्वैरिणी भी जानो ॥

प्र आगे ऊढः है इस में गवादिकों में प्र शब्द और अक्षादिकों में ऊढः शब्द परे हैं तो दोनों शब्दों के बीच में अवर्ण को आगम आगया तो प्र अ ऊढः ऐसा हुआ फिर उ ओ सूत्र करके अवर्ण की अकार और ऊढः की ऊकार के ओकार होगया तो प्र ओढः ऐसाहुआ फिर ओ औ औ सूत्रकरके ओढः की ओकार और प्रकीअकार दोनों के औकार होगये तो प्र् औढः ऐसाहुआ प्र् औढः की ओकारमें मिलगये तो प्रौढः यह पद सिद्धहुआ ऐसेही अक्षौहिणी भी जानो ॥ अक्षौहिणी सेना को कहते हैं ॥

अयुतंचनागास्त्रिगुणीरथानां लक्षैकयोधादशलक्षवाजिनाम् ॥
पदातिसंख्याषट्त्रिंशत्कोटयः अक्षौहिणीं तां मुनयो वदंति १

जिसमें दशहज़ार हाथी, तीसहज़ार रथ, एकलाख योधा और दशलाख घोड़े और छत्तीस करोड़ पैदल हों उसको मुनि लोग अक्षौहिणी कहते हैं ॥

अब स्वैरिणी का लक्षण कहतेहैं ॥

पतिं त्यक्त्वा तु या नारी गृहादन्यत्र गच्छति ।
परेषु रमते नित्यं स्वैरिणीं तां विनिर्दिशेत् ॥

जो स्त्री अपने पति को छोड़के घर से बाहर जाके परपुरुषों के संग रमणकरै उसको मुनिलोग स्वैरिणी कहते हैं ॥

क्वचित्स्वरवद्यकारः ॥

यथाध्वपरिमाणे गव्यूतिः अन्यत्र गवां मिश्रीभावे गोयूतिः ॥

दोहा । स्वर सम मार्ग प्रमाणमें यकारहू को रूप ।
गोयूति गव्यूति जिमि जानो पर्म अनूप ॥

कहीं २ यकार भी स्वर के तुल्य माना जाता है जैसे मार्ग के प्रमाण में अर्थात् दो कोसकी एकगव्यूति होती है तहां गो आगे यूतिः है इसमें मार्ग का प्रमाणही अर्थ है इससे यकार स्वर के तुल्य मानीगई तब ओ अव् सूत्र करके गकारकी ओकार के अव् होगया तो ग् अव् यूतिः ऐसा हुआ गकार अव् की अकारमें मिलगई वकारयूतिकी यकारमें मिलगई तो गव्यूतिः यह सिद्धरूप हुआ और जगह जहां गाइयों का मिलाना अर्थ है वहां गोयूतिः ऐसाही बनारहा ॥

ऐ आय्

ऐकारो आय् भवति स्वरे परे ॥

दोहा । ऐ आय होजात है जो स्वर परै सुजान ।
नैअकसोंनायकभयो उदाहरणपरिमान ॥

ऐकार के आगे जो कोई स्वर परे होवे तो ऐकार के आय् होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे नै अकः इसमें नकार की ऐकार के आगे अकः की अकार स्वरपरे है तो ऐकार के आय् होगया तो न् आय् अकः ऐसाहुआ नकारआय् की अकार में मिलगई यकार अकः की अकारमें मिलगई तो नायकः यह सिद्धरूपहुआ ॥

औ आव्

औकारो आव् भवति स्वरे परे ॥

दोहा । औकार सों आवहो जो स्वर होय परै ।
तौ इह ताविह भयो जिमि ऐसे रूपधरै ॥

औकार के आगे जो कोई स्वर परेहोवे तो औकार के आव् होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे तौ इह इसमें तकार की औकार के आगे इह की इकारस्वरपरे है तो औकारके आव् होगया तो त् आव् इह ऐसा हुआ तकार आव् की आकार में मिलगई वकार इहकी इकार में मिलगई तो ताविह ऐसा रूपहुआ ॥

य्वोर्लोपश् वा पदान्ते

पदान्ते स्थितानामयादीनां यकारवकारयोर्लोपश् वा भवति स्वरे परे ॥

दोहा । पदान्त माहीं अयादिक विकल्पकरहो लोप ।
विकल्प हो जासूत्र में कह न सकै प्रण रोप ॥

जो स्वर आगे परे होवे तो पदके अन्त में जो स्थित अयादिक अर्थात् अय्, आय्, अव् आव् तिनकी यकार वकार का लोप विकल्प करके हो अर्थात् एकबार लोपहोवे दूसरी बार न होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे ते आगताः इसमें ए अय् सूत्रकरके एकार के अय् होगया तो त् अय् आगताः हुआ अब इसमें स्वरोंमें आगताः की आकारपरे है और अयादिकों में अय् की यकार पद के अन्त में स्थितभी है तो यकार का लोप होगया तो त् अ आगताः ऐसा हुआ फिर तकार अय् की अकार में मिलगई तो तआगताः ऐसा सिद्धरूपहुआ दूसरीवार जब लोप न भया तो तकार अय् की अकारमें और यकार आगताः की आकार में मिलगई तो तयागताः ऐसा सिद्धरूपहुआ ऐसेही ओ अव् सूत्र से पटविह पटइह और ऐ आय् सूत्र से तस्माइदं तस्मायिदं और औ आव् सूत्रसे ताइमौ ताविमौ ये सब भी जानो ॥

लोपशि पुनर्न सन्धिः ॥
छन्दसि तु भवति ॥

दोहा । लोप हुए पै प्रयोजन रहो सन्धिसों नाहिं ।
विकल्पयुतयहरीतिनहिं निश्चयगिनमनमाहिं ॥

लोपकरनेसे फिर संधिनहींहोतीहै परन्तु वेदमें होजाती है ॥

उदाहरण ॥

जैसे हे सखे इति इसमें ए अय् सूत्रकरके एकार के अय् हो गया और ग्वोर्लोपश् वा पदान्ते इससूत्रकरके यकार का लोप होगया तो हे सखइति ऐसाहुआ फिर छन्द (वेद) मानिके अ इ ए सूत्रकरके खकारकी अकार और इतिकी इकार दोनों का मिलके एकारहोगया और खकार एकार में मिलगया तो हे सखेति यह सिद्धरूपहुआ । दूसरे रूप में ए अय् करके अय् हुआ तो हे सख् अय् इति ऐसाहुआ खकार अय्की अकार में और यकार इति की इकार में मिलगई तो हे सखयिति यह सिद्ध रूपहुआ ॥

एदोतोऽतः

पदान्ते स्थितादेकारादोकाराच्च परस्याकारस्य लोपो भवति ॥

दोहा। पदान्त माहीं जो कहीं एकाररु ओकार।
तासोंपरे अकारको लोप होत तत्कार ॥

पदके अन्तमें स्थित एकार वा ओकार के आगे जो अकार होवे तो उसका लोपहोजाताहै ॥

उदाहरण ॥

जैसे ते अत्र इसमें एकार पदान्त में स्थितहै और इसके आगे अकारहै तो अकारका लोपहोगया तो तेऽत्र यह सिद्ध हुआ इसीतरह से पटोअत्र में भी ओकार पदके अन्तमें स्थित है तिसके आगे जो अत्रकी अकारहै तिसका लोप होगया तो पटोऽत्र यह सिद्धहुआ ॥

सवर्णे दीर्घः सह

सवर्णस्य सवर्णे परे सह दीर्घो भवति ॥

दोहा। सवर्ण परे सवर्णको दीर्घ रूप मिलहोत।
भानुउदय भानूदय बरणत बुद्धि उदोत ॥

सवर्ण के परे जो सवर्णही होवे तो द्वित्व होजाता है जैसे इकार इकार, उकार उकार, अकार अकार, ऋकार ऋकार, इत्यादि सवर्ण होवें तो दोनों मिलकर दीर्घ होजाता है ॥

अदीर्घोदीर्घतांयाति नास्तिदीर्घस्यदीर्घता।
पूर्वदीर्घस्वरंदृष्ट्वा परलोपोविधीयते १
सामान्यशास्त्रतोनूनं विशेषोबलवान् भवेत्।
परेणपूर्ववाधो वा प्रायशोदृश्यतामिह २

जो दीर्घ नहीं है वह दीर्घको प्राप्त होवे और दीर्घ के दीर्घ नहीं होवे पूर्वका दीर्घ स्वर देखके पर का लोप होवे ॥ १ ॥

सामान्य शास्त्रसे विशेष शास्त्र निश्चयकरके बली होता है

बहुधा तो पर सूत्र करके पूर्व सूत्र का बाधा होताहै और कभी २ पूर्व सूत्र करके भी पर सूत्रका बाधा होताहै ॥

अ इ ए

अवर्ण इवर्णे परे सह ए भवति॥

दोहा । अवर्ण पर जो इवर्ण हो मिलकर ए होजात।
जिमि तव इदं तवेदं उदाहरण सुनतात ॥

अकार वा आकार के आगे इकार वा ईकार होवे तो दोनों मिलके ए होजाता है ।

उदाहरण ॥

जैसे तव इदं इसमें वकार की अकार के आगे इदंकी इकार परे है तो दोनों मिलके दीर्घ होगया तो तव् एदं हुआ वकार एदं की एकार में मिलगई तो तवेदम् यह सिद्ध हुआ इसीतरह से ममेदं इत्यादि जानो ॥

हलादेरीषादौ टेर्लोपो वक्तव्यः ॥

दोहा । शब्द हलादिक में समझ लोपअकार सुजान ।
जो ईषादिक हो परे यही सुरीति प्रमान ॥

ईषादिक अर्थात् ईषा शब्दको आदि लेके जे अंगः, अंधुः, अटा , अंतः, अंजलिः ये शब्द हैं तिनके पहिले जो हलादिक अर्थात् हलको आदि लेके जो लांगल, मनस, सार, करक, सक सीमन, पतत ये शब्दहोवें तो हलादिकोंकी टी का लोप होजावे॥

उदाहरण ॥

जैसे हल इषा इस में ईषादिकों में ईषा शब्द है और हलादिकों में हल शब्द है टी हल शब्द की लकार की अकार है तिसका लोप होगया तो हल् ईषा हुआ लकार ईषा की ईकार में मिलगई तो हलीषा यह सिद्ध होगया इसी तरह से लांगलीषा, मनीषा, सारंगः, सकंधुः, कर्कन्धुः, कुलटा, सीमन्तः, पतंजलिः ये भी जानो॥

ओ मि च

ओमि परे नित्यं टेर्लोपो भवति ॥

ओम्‌शब्द जो आगे परे होवे तो नित्यहीटीका लोपहोजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे अद्य ओम् इसमें ओम् शब्द परे है द्य में जो अकार टी है तिसका लोपहोगया तौ अद्योम् सिद्धहोगया ॥

उ ओ

अवर्ण उवर्णे परे सह ओ भवति ॥

दोहा। अवर्णपर जो उवर्णहो मिलकर हो ओकार।
गंगा उदकम सों भयो गंगोदकम विचार ॥

अकार वा आकार के आगे जो उकार वा ऊकार होवे तो दोनों मिलके ओ होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे गंगा उदकम् इसमें गंगा शब्द की आकार के आगे उदकम् की उकार परे है तो दोनों मिलके ओकार होगया तो गंग् ओदकम् हुआ गकार ओदकम् की ओकार में मिलगई तो गंगोदकम् यह सिद्ध हुआ ॥

ऋ अर्

अवर्ण ऋवर्णे परे सह अर् भवति ॥

दोहा। अवर्णपर जो ऋवर्ण हो सो अर होत सुजान।
कृष्ण ऋद्धिसों जानिये कृष्णर्द्धी परिमान ॥

अकार वा आकार के आगे जो ऋकार होवे तो दोनों मिलके अर् होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे कृष्ण ऋद्धिः इसमें कृष्ण शब्द की अकार के आगे ऋद्धिःकी ऋकार स्वरहै तो दोनों मिलके अर् होगया तो कृष्ण्

अर्द्धिः हुआ ष् ण् अर् की अकार में मिलगई अर् की रकारद्धिः के ऊपर चढ़गई तो कृष्णार्द्धिः यह सिद्ध हुआ इसी तरह से तवार्द्धिः ममार्द्धिः इत्यादिजानो ॥

क्वचिदार्

अवर्ण ऋवर्णे परे सह क्वचिदार् भवति ॥

दो० । कहीं आर भी होतहै सुनियो पर्म प्रवीन ।
वसनऋणंवसनारणं उदाहरणअसचीन ॥

अकार वा आकार के आगे जो ऋकारही होवे तो कहीं कहीं आर् भी होजाताहै ॥

उदाहरण ॥

जैसे वसन ऋणं इसमें नकार की अकार के आगे ऋणं की ऋकार परे है तो दोनों मिलके आर् होगया तो वसन् आर् णं हुआ नकार आर् की आकारमें मिलगई और आर् की रकारणं की णकार के ऊपर चढ़गई तो वसनार्णं यह सिद्ध हुआ इसी तरह से शीतार्तः ऋणार्णं इत्यादि जानो ॥

ऌ अल्

अवर्ण ऌवर्णे परे सह अल् भवति ॥

दोहा । अवर्ण परे ऌवर्ण हो मिलकर अलहोजात ।
तवऌकारसों भयो जिमि तवल्कार सुनतात ॥

अकार वा आकार के आगे जो ऌकारहोवे तो दोनों मिलके अल् होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे तव ऌकारः इसमें तव शब्दकी अकार के आगे ऌकारः की ऌकार परे है तो दोनों मिलके अल् होगया तो तव् अल्-कारः हुआ वकार अल् की अकार में मिलगई लकार कारः की काकारमें मिलगई तो तवल्कारः यह पद सिद्धहुआ ॥

ऋलृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वा वक्तव्यं ॥

ऋकार और लकार की सावर्ण्यता विकल्पकरके है अर्थात् एकबार ऋकार की लकार होजावे दूसरीबार लकार की ऋकार होजावे यह सवर्णता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे होतृ लृकारः इसमें होतृ शब्दकी तकार की ऋकारके आगे लृकारःकी लृपरे है तो पहलीबार लृ की ऋ होगई तो होतृ ऋकारः भया अब सवर्णे दीर्घः सह करके दोनों ऋकारें मिलके दीर्घ ॠकार किया तो होत् ॠकारःहुआ तकार ॠकारः की ॠकार में मिलगई तो होतॄकारः यहपद सिद्धहुआ ॥ अबदूसरीबार होतृ शब्द की ऋकारकी लृकार होगई तो होत् लृ लृकारःहुआ फिर सवर्णे दीर्घःसह करके दोनों लृकारें मिलके दीर्घ लॄकार होगई तो होत् लॄकारःभया अब तोर्लिलः सूत्र करके तकार का लकार किया तो होल् लॄकारःहुआ लकार लॄकारः की लॄकार में मिलगई तो होल्लॄकारः यह पद सिद्धहुआ ॥

रलयोः सावर्ण्यं वा वक्तव्यम् ॥

रकार लकार की भी सावर्ण्यता विकल्पकरके है अर्थात् एकबार में रकारके लकार और दूसरी बारमें लकार के रकार होजाताहै ॥

उदाहरण ॥

जैसे परिअंकः इसमें इयंस्वरे करके इकार के यकार हुआ तो प र य् अंकः हुआ अब राद्यपोद्विःकरके यकार द्वित्व होगई तो परय्य् अंकः भया दोनों यकारें अंकः की अकार में मिल गईं और रकार यकारों के ऊपर चढ़गई तो पर्य्यंकः यह पद सिद्धहुआ । दूसरीबार में इयंस्वरे करके इकारके यकार हुआ तो परय्अंकः हुआ अब परकी रकार का लकारहोगया तो

पल्य्अंकः भया लकार और यकार अंकः की अकारमें मिल गये तो पल्यंकः यहपद सिद्धहुआ ॥

ए ऐ ऐ

अवर्ण एकारे ऐकारे च परे सह ऐकारो भवति ॥

दोहा । अवर्ण पर एकार सों ऐकार होजात ।
तवएषारु तवैषा इत्यादिक लखतात ॥

अकार वा आकार के आगे जो एकार वा ऐकारहोवे तो दोनों मिलके ऐकार होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे तव एषा इसमें तव शब्द की वकार की अकार के आगे एषा की एकार स्वर परे है तो दोनों मिलके ऐकारहो-गया तो तव् ऐषा हुआ वकार ऐषा की ऐकार में मिलगई तो तवैषा यह पद सिद्ध हुआ ऐसेही तवैश्वर्य्यं इत्यादि जानो ॥

ओ औ औ

अवर्ण ओकारे औकारे च परे सह औकारो भवति ॥

अकार वा आकार के आगे जो ओकार व औकारहोवे तो दोनों मिलके औकार होजाता है ॥

उदाहरण ॥

जैसे तव ओदनम् इसमें तव शब्द की वकार के आगे ओदनम् की ओकार परे है तो दोनों मिलके औकारहोगई तो तव् औदनम् भया वकार औदनम् की औकार में मिलगई तो तवौदनम् यहपद सिद्धहुआ ऐसेही तवौन्नत्यम् इत्यादि जानो ॥

ओष्ठोत्वोर्वौ समासे

अवर्ण ओष्ठोत्वोः परयोः सह वा औत्वं भवति ॥
इत्यनुभुतिस्वरूपाचार्य्यकृते सारस्वते
स्वरसन्धिस्समाप्ता ॥

अकार वा आकार के आगे जो ओष्ठ वा ओतु शब्द परेहो तोदोनों मिलके ओकार विकल्पकरके होता है-अर्थात् एक बार ओकार और दूसरेपद में (ओ औ औ) करके औकार हो जाता है ॥

इतिकविकिशोरकृतसारस्वतदोहाओंमें
स्वरसन्धिसमाप्तहुई ॥

उदाहरण ॥

जैसे बिम्बओष्ठः इसमें अकार के आगे ओष्ठशब्द परे है तो दोनों मिलके ओकार होगया तो बिम्ब्ओष्ठः भया मकार बकार ओष्ठः की ओकारमें मिलगये तो बिम्बोष्ठः पदसिद्धहुआ दूसरी बारमें(ओ औ औ) करके औकार होगया तो बिम्ब औ-ष्ठः हुआ मकार बकार ओष्ठः की औकारमें मिलगये तो बिम्बौ-ष्ठः यह पद सिद्धहुआ स्थूल ओतुः इसमें ओतुशब्दपरे है इस के भी बिम्बोष्ठः बिम्बौष्ठः की तरह स्थूलोतुः स्थूलौतुः दोपद सिद्ध हुये ॥

इति रामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां
स्वरसन्धिस्समाप्ता ॥

अथानुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृतप्रकृतिभाव सन्धिर्विधीयते ॥

नामी ॥

अदसोऽमीशब्दः संधिन्न प्राप्नोति ॥

अथ कविकिशोरकृत सारस्वत दोहाओं में प्रकृतिभाव सन्धि प्रारम्भ हुई ॥

दोहा। अदसशब्दको अमी जो तामेंसंधि न होय।
उदाहरण जिमिजानिये अमी अत्रमेंसोय ॥
अमिन शब्दके अमीमें सन्धी निस्सन्देह।
अम्यत्र कहने उचित यही रीति है तेह ॥

अथ रामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां प्रकृतिभावसंधिर्विधीयते ॥

अदस् शब्द के अमी सिद्धहुए रूप में सन्धि न होवे और अमिन् शब्द के अमी सिद्धहुए रूपमें निस्सन्देह सन्धिहोवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे अमी अत्र इसमें अदस् शब्दही का अमी सिद्धहुआ रूप है इससे (इयंस्वरे) सूत्र की प्राप्ति भी थी तिसपर भी संधि नहीं की गई क्योंकि 'नामी' इस सूत्रमें सन्धिका निषेध किया है और जहां अमिन् शब्दका अमी सिद्धरूप है उसमें(इयंस्वरे) करके इकार को यकार होगया तो अम्यत्र सिद्ध होगया इसी तरहसे अमी आदित्याः, अमी उष्ट्राः, अमी एडकाः इन पदों में भी अदस् शब्दही का अमी सिद्ध शब्दहै इससे (इयं स्वरे)करके इकार की यकार नहीं होसकी ॥

य्वे द्वित्वे ॥

ई च ऊ च ए च य्वे ईकारान्त ऊकारान्त एकारान्तश्च

शब्दोद्वित्वेवर्त्तमानःसन्धिंनप्राप्नोति ॥ मणीवादिवर्जम्

दोहा। वर्त्तमान जो द्वितविषय ईकार और उकार।
जैसे अग्नीअत्र में सन्धी नाहिं विचार ॥

द्विवचन के ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त के शब्द सन्धिकोन प्राप्तहोवें अर्थात् सन्धि नहीं होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे अग्नी अत्र इसमें अग्नि शब्द का अग्नी द्विवचन का रूपहै और ईकारान्त शब्द भी है इससे (इयंस्वरे)करके इकार को यकार नहीं होसका अग्नी अत्र ऐसाही बनारहा इसीतरहसे पटू अत्र में द्विवचन और ऊकारान्त शब्द है और माले आनय में एकारान्त शब्द है और द्विवचन भी है दोनों शब्दों में सन्धि नहीं होसकी ॥

औ निपातः ॥

आकार ओकार निपात एकस्वरश्च सन्धिंनप्राप्नोति॥

दोहा। एकस्वर जो निपात है आकाररु ओकार।
तामें सन्धि न होयगी मनमें लेहु विचार ॥

आकार वा ओकार निपात और एकस्वरके सन्धिनहोवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे आएवंमन्यसे इसमें (ए ऐ ऐ)सूत्रकी प्राप्तिसे ऐवंमन्यसे होसक्ता था तिसमें आकार निपात के कारण से सन्धि नहीं होसकी इसी तरह से नो अत्रस्थातव्यम् इसमेंभी (ओग्रव्) सूत्र से नवत्रस्थातव्यं होसक्ता था तहां ओकार निपातके कारण से सन्धि नहीं होसकी ऐसेही उउत्तिष्ठ। अ अपेहि। इइंद्रंपश्य इन में(सवर्णेदीर्घःसह) सूत्रसे दीर्घ होसक्ता था तहां एकस्वर के कारण से सन्धि नहीं हुई वैसेही सब रूपबने रहे ॥

प्लुतः ॥

प्लुतश्च सन्धिन्न प्राप्नोति ॥

दोहा। जहां प्लुतहोवे तहां सन्धि प्राप्त नहिं होय।
देवदत्त एहिकहैं जब सन्धि न पावे सोय॥

प्लुत अर्थात् त्रिमात्रावाला जिसको ऊंचे स्वर से पुकारें उसके भी सन्धि नहीं होवे॥

उदाहरण॥

जैसे देवदत्त ३ एहि- अर्थात् हेदेवदत्त यहां आवो इसमें प्लुत है इसकारण से सन्धि नहींहोसकी देवदत्त एहि ऐसाही बनारहा॥

दूरादाह्वानेटेः प्लुतः॥

दूरादाह्वाने गाने रोदने विचारे च टेः प्लुतो भवति॥

इत्यनुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृते सारस्वते प्रकृति भावसन्धिस्समाप्ता॥

दोहा। भयो दूरसे वाक्य जो ध्वनिके बिषयसुजान।
प्लुत न हो ता ठौह में मान यही अनुमान॥

इतिकविकिशोरकृतसारस्वतदोहाओंमेंप्रकृति भावसन्धिसमाप्तहुई॥

दूरसे पुकारने में, गाने व रोने व विचारने में जो टि है तिसके प्लुत होवे

उदाहरण॥

जैसे देवदत्त एहि इसमें(ए ऐ ऐ)करके देवदत्तैहि होने की प्राप्ति थी तहां दूरसे पुकारना है इसकारण से देवदत्त शब्द की तकार प्लुतहोगई तो प्लुत के कारण से सन्धि न होसकी तो देवदत्त एहि ऐसाही बनारहा॥

इति रामबिहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां प्रकृतिभावसंधिस्समाप्ता॥

अथानुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृतव्यंजनसंधिर्विधीयते ॥

चपा अबे जबाः ॥

पदान्ते वर्त्तमानाश्चपा जबा भवन्त्यबे परे॥

अथ कविकिशोरकृत सारस्वत दोहाओंमें व्यंजन सन्धिप्रारम्भहुई ॥

दोहा ॥ चप अबपरै पदान्तमें सम्पूरण जब होत।
यथासंख्य परमाणगिन बरणतबुद्धिउदोत॥

अथ रामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां व्यंजनसन्धिः प्रारभ्यते ॥

अब् प्रत्याहार के परे चप् प्रत्याहार जो पदके अन्तमेंहोवें तो चप् प्रत्याहार के जब् प्रत्याहार होजावें॥

उदाहरण ॥

जैसे षट् अत्र इसमें अब् प्रत्याहारके परे चप् प्रत्याहार पद के अन्त में है तो टकार के जब् प्रत्याहार की डकारहोगई तो डकार अत्रकी अकार में मिलगई तो षडत्र यह सिद्धरूपहुआ इसी तरह से अजंतः वाग्यथा आदि भी जानो॥

ञमे ञमा वा ॥

पदान्ते वर्त्तमानाश्चपा ञमे परे ञमा वा भवन्ति ॥

दोहा ॥ पदान्तमें जो चपपरे यथासंख्य ञमहोत।
ततनयनं सों भयो जिमि तन्नयनंउद्दोत॥

ञम प्रत्याहार के परे पद के अन्त में वर्त्तमान चप् प्रत्याहारों के ञम् प्रत्याहार बिकल्पकरके होवें अर्थात एकबारहोवें दूसरीबारमें न होवें॥ उदाहरण॥

जैसे वाक्मात्रम् इसमें ञम्प्रत्याहारमें मात्रम् की माकार परे है और चप्प्रत्याहार की ककार पद के अन्त में वर्त्तमान

है तो ककार के ञमप्रत्याहार की ङकार होगई तो वाङ्मात्र-म् हुआ दूसरीबारमें ञमप्रत्याहार न हुए तो (चपाश्रबे जबाः) सूत्रकरके ककार को गकार होगया तो वाग्मात्रम् हुआ ऐसेही षट्मम षड्मम षण्मम इत्यादि भी जानो ॥

चपाच्छशः ॥

चपादुत्तरस्य शकारस्य छो वा भवत्यबेपरे ॥

दोहा । चपउत्तर जो शकार है ताको होय छकार ।
वाकशूर सों जिमिभयो वाकछूर उरधार ॥

अब् प्रत्याहार के परे चप्प्रत्याहार के उत्तर शकारको छकार विकल्प करके होवै ॥

उदाहरण ॥

जैसे वाक्शूरः इसमें चप्प्रत्याहार के उत्तर शकार है और अब् प्रत्याहार में ऊरः की उकारपरे है तो शकार को छकार हो-गया तो वाक्छूरः हुआ दूसरीबार वाक्शूरः ऐसाही बनारहा ॥

होझभाः ॥

चपादुत्तरस्य हकारस्य झभा वा भवन्ति ॥

नन्वेकहकारस्यपञ्चझभाः प्राप्ताःकेनक्रमेणभवन्ति। यद्वर्गकश्चपस्तद्वर्गकश्चतुर्थो भवति ॥

दोहा । हकार जो चपउत्तरहि सो झभहोत सुजान ।
परन्तु झभ हो चतुरथो चपके वर्गनुमान ॥

चप्प्रत्याहार के उत्तर हकार को झभ्प्रत्याहार विकल्पकर-के होवें–अर्थात् एकबार में हों दूसरीबार नहीं हों ॥

जो कहो कि हकार एक है और पांच झभ हैं तो किस क्रम से झभ होवें तो कहते हैं कि जिस बर्ग का चप् होवे उसी वर्ग का चौथा अक्षर होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे (वाक्हरिः) इसमें चप् प्रत्याहार के उत्तर हकार है तो

हकार को कवर्ग का चौथा वर्ण घ होगया तो (वाक्घरिः) हुआ फिर (चपा अबे जबाः) सूत्र करके ककार को गकार होगया और गकार घरिः की घकार में मिल गई तो (वाग्घरिः) ऐसा हुआ दूसरी बारमें (चपा अबे जबाः) सूत्र करके ककारके गकार होगया और गकार हरिः की हकार में मिल गया तो (वाग्हरिः) ऐसा रूप हुआ ऐसेही तत्हविः तद्धविः तद्हविः इत्यादि जानो॥

स्तोः श्चुभिःश्चुः॥

स्तोः सकारस्य तवर्गस्यच शकारेण चवर्गेण च योगे शकारचवर्गौ यथासंख्येन भवतः सकारस्य शकारः। तवर्गस्य चवर्गः॥

दोहा॥ सतु शचु योग बिचार जहँ शचु क्रमते तहँ होत।
कसचरति कशचरति जिमि बरणत बुद्धि उदोत॥

शकार और चवर्गका योग होय तो सकार और तवर्गको शकार और चवर्ग होजायँ अर्थात् सकार को शकार और तवर्ग को चवर्ग होजायँ॥

उदाहरण॥

जैसे कस्चरति इसमें चवर्गमें चकारका योगहै तो सकार की शकार होगई तो कश्चरतिहुआ शकार चरतिकी चकार में मिलगई तो कश्चरति यहसिद्धहुरूपहुआ ऐसेहीतत्चित्रम् इसमें चकार के योग से तकार की चकार होगई चकार चित्रम् की चकार में मिलगई तो ताच्चित्रम् यह सिद्धरूप हुआ इसी तरहसे तत्शास्त्रम् इस में शकारके योग से तकार की चकार हुई फिर (चपाच्छशः)सूत्रसे चकार के योगसे शकार की भी छकार होगई चकार छकार में मिलगई तो तच्छास्त्रम् यह सिद्धरूप हुआ ऐसेही और भी जानो॥

नशात् ॥

शकारादुत्तरस्य तवर्गस्य चुत्वं न भवति ॥

दोहा। तवर्ग होय शकारते जो कहुं उत्तरमाहिं।
चवर्ग ता सतवर्ग को कभूंहोत कहुंनाहिं ॥

शकार के परे जो तवर्ग में से कोई वर्ण होवै तो उस को चवर्ग नहीं होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे विश्नः इसमें (स्तोःश्चुभिःश्चुः)इस सूत्र से शकार के योग से नकारकी ञकार होके विश्ञः होने की प्राप्ति थी तिस में (नशात्)सूत्र करके नकार की ञकार न हुई तो विश्नः, प्रश्नः ऐसेही रूप बनेरहे ॥

ष्टुभिःष्टुः ॥

स्तोः सकारतवर्गयोः षकारटवर्गाभ्यां योगे ष्टुर्भवति। सकारस्य षकारः। तवर्गस्य टवर्गः ॥

दोहा। सतु अरु षटुको योगजहँ षटु होते नहिं बार।
कसषष्ठः कष्षष्ठः जिमि मनमें लेहु विचार ॥

षकार और टवर्ग के योग में सकार और तवर्ग होवे तो सकार के षकार और तवर्ग के टवर्ग होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे कस् षष्ठः इसमें षकार का योग है तो सकार की भी षकार होगई षकार षष्ठः की षकार में मिलगई तो कष्षष्ठः यह सिद्धरूप हुआ ऐसे ही कस् टीकते इस में टकार के योग से सकार की षकार होगई षकार टीकते की टकार में मिलगई तो कष्टीकते यह सिद्धरूप हुआ इसी तरहसे तत् टीकते में टवर्ग के योग से तकार की भी टकार होगई और टकार टीकते की टकार में मिलगई तो तट्टीकते यह सिद्ध रूप हुआ ऐसेही और भी जानो ॥

तोर्लि लः ॥

तवर्गस्य लकारे परे लकारो भवति ॥

दोहा। तवर्ग होय लकार जहँ तापर तहां लकार।
तत्लुनाति तल्लुनाति जिमि देखो हृदय विचार ॥

लकार के परे जो तवर्ग होवे तो तकार की भी लकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे तत् लुनाति इसमें लकार के परे तकार है तो तकार की भी लकार होगई और लकार लुनाति की लकार में मिल गई तो तल्लुनाति यह सिद्धरूप हुआ ॥

अन्तस्था द्विप्रभेदाः-रेफवर्जिता यवलाः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च। तत्र सानुनासिक एव नकारस्य लकारो भवति ॥

रेफकरके वर्जित अंतस्थ वर्ण अर्थात् य, व, ल—ये सानुनासिक और निरनुनासिक भेदों से दोप्रकारके हैं तहां नकार को सानुनासिक अर्थात् अर्द्धचन्द्र सहित लकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे भवान् लिखति इसमें नकार लकार के परे है तो नकार के सानुनासिक लकार होगई और लकार लिखति की लकार में मिलगई तो भवाँल्लिखति यह सिद्धरूपहुआ ॥

न षि ॥

षकारेपरे तवर्गस्य टुत्वं न भवति ॥

दोहा। होषकार जो मूरधी तवर्गपर सुनमीत।
सो तवर्ग टवर्ग नहिं होतकभूं लखरीत ॥

षकार के परे तवर्ग अर्थात् नकार के टुत्व अर्थात् णकार न होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे भवान् षष्ठः इसमें (ष्टुभिःष्टुः) इससूत्र से षकारके योग से नकार की णकार होके भवाण्षष्ठः होने की प्राप्तिथी तहां (न षि) सूत्रकरके जब नकार को णकार न हुआ तो भवान्षष्ठः ऐसाही बनारहा ॥

टोरन्त्यात् ॥

पदान्तेवर्त्तमानाट्टवर्गात्परस्य स्तोःष्टुर्न भवति ॥

दोहा । टवर्गपर जो सकार अरु तवर्ग जो कहुं होय ।
षकार और टवर्ग नहिं होत तवर्गहि सोय ॥

पद के अन्त में वर्त्तमान टवर्ग से परे सकार और तवर्ग को षकार और टवर्ग नहीं होवें ॥

उदाहरण ॥

जैसे षट्नरः इसमें (ष्टुभिःष्टुः) सूत्रकरके टकारके योगसे नकार की णकार होने की प्राप्ति थी यहां (टोरन्त्यात्) सूत्रके निषेध से नकारकी णकार न हुई तो (चपा अबे जबाः) सूत्रकरके टकारकी डकार होगई तो षड्नरः ऐसा सिद्धरूपहुआ । इसी तरह से षट् सीदन्ति इसमें भी (ष्टुभिःष्टुः) सूत्रकरके टकार के योग से टोरंत्यात् सूत्रके निषेध से सकारकीषकार न हुई तो षट्सीदन्ति ऐसाही सिद्धरूप बनारहा ऐसेही और भी जानो ॥

नः सक् छते ॥

नान्तस्य पदस्यछते परे सगागमो भवति ।
टित्कितावाद्यन्तयोर्वक्तव्यौ । टित्त्वादादौ कित्त्वादंते ॥

दोहा । होत सकागमनांतपद छतपर प्रत्याहार ।
राजनचित्र जो भयो जिमि राजंश्चित्र विचार ॥
टकार इतहो आदि में ककार इतहो अंत ॥
निश्चयकर या रीति कह कविकिशोर लखतंत ॥

सक आगम पुरसान पर होत नहीं सुनमीत ।
जिमि पुरसानतनोति है लखव्याकरणसुरीत ॥

छत्प्रत्याहारके परेनकार जिसपद के अन्त में हो उसके सक् का आगमहोवे। टित् पद के आदि में होवे और कित् अन्त में हो—टकार का लोप होजाता है वह टित् कहलाता है और जिसमें ककार का लोप होजावे वह कित् कहाताहै ॥

उदाहरण ॥

जैसे पुरसान् तनोति इसमें नान्तपद भी है और छत् प्रत्याहार में भी तनोति की तंकारहै तो सक् का आगम कित् है इससे पुरसान् शब्द के अन्तमें आया और सक् की ककार का लोप भी होगया तो पुरसान स् तनोति हुआ सकार तनोति की तकारमें मिलगई और नकारकी अनुस्वार होगई तो पुरसांस्तनोति यह पद सिद्धहुआ इसीतरह से राजन्चित्रम् में सक् का आगम आके (स्तोःश्चुभिःश्चुः) से सकार की शकारहोके और नकारकी अनुस्वारहोके राजंश्चित्रम् भी पद सिद्धहुआ ॥

शे चक् वा ॥

नान्तस्य पदस्य शे परे वा चगागमो भवति ॥

दोहा। होतचकागमनान्तपद शकारपरजोसमर्थ ।
ककारहैकितकार्य्यको अकारुचारणअर्थ ॥

शकार के परे नान्तपद के चक् का आगम विकल्प करके होय अर्थात् एकबार होवे दूसरी बार नहीं होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे भवान्शूरः इसमें नान्तपद और शकार दोनों परे हैं तो भवान् के अन्तमें चक् का आगम आगया और ककारका लोपहोगया तो भवान् च शूरः हुआ फिर(चपाच्छशः)सूत्रकरके शकारकी छकारहोगई और (स्तोःश्चुभिःश्चुः)सूत्र से नकार

की ञकार होगई तो भवाञ्चूछूरः हुआ ञकार चकार छूरः की छकार में मिलगये तो भवाञ्च्छूरः यह पद सिद्ध हुआ। दूसरी बार जब चक् का आगम हुआ तो (स्तोःश्चुभिःश्चुः) सूत्रकरके नकारकी ञकारहोगई और(चपाच्छशः)सूत्रसे शकार की छकार न हुई तो भवाञ्च्शूरः यह पद सिद्धहुआ। तीसरीबारमें जब न चक् का आगमहीहुआ और न शकारकी छकारही हुई क्योंकि (शेचक्वा) और (चपाच्छशः) ये दोनोंसूत्र विकल्पपक्षी हैं तो (स्तोःश्चुभिःश्चुः) से नकारकी ञकार होके भवाञ्शूरः यह पद सिद्ध होगया ॥

ङणनोह्रस्वाद् द्विः स्वरे ॥

ङकारणकारनकाराः ह्रस्वादुत्तराः द्विर्भवन्ति स्वरे परे पदान्ते च ॥

दोहा। त्रियनकारह्रस्वतेपरे द्वितपदान्तमेंहोत।
परन्तुस्वरतेहोपरे वरणतबुद्धिउदोत ॥

ह्रस्वते उत्तर ङकार, णकार, नकार ये तीनों जो आगे स्वर परे होवे तो द्वित्व होजावें ॥

उदाहरण॥

जैसे प्रत्यङ्इदं इसमें स्वरोंमें इदं की इकारहै और ह्रस्वत्य तेहिते उत्तर ङकारहै सो द्वित्व होगई प्रत्यङ्ङिदंहुआ ङकार ङिदं की ङकारमें मिलगई तो प्रत्यङ्ङिदं यह पद सिद्ध हुआ ऐसेही सुगण्णिह, राजन्निह इत्यादि जानो॥

छः ॥

ह्रस्वादुत्तरश्छकारो द्विर्भवति ॥

दोहा। छकारउत्तरह्रस्वते ताकोद्वितहोजात।
असस्रुरीतिबर्णनकरै कविकिशोरविख्यात॥

ह्रस्व के उत्तर जो छकार होवे तो द्वित्व हो जावे ॥

उदाहरण॥

जैसे तव छत्रम् इसमें ह्रस्व वकार ते उत्तर छकार है तो छकार द्वित्व होगई तो तव छ् छत्रम् हुआ॥

खसे चपा झसानाम्॥

झसानां खसे परे चपा भवन्ति॥

दोहा। झसके चपहोजायँगे जो खसपरे सुजान।
याविधि वरणनकरत जे कविहैंबुद्धिनिधान॥

खस् प्रत्याहारकेपरे झस् प्रत्याहारों के भी चप्होजावें॥

उदाहरण॥

जैसे ऊपर जो तव छ् छत्रं ऐसा पद सिद्ध कियागया है तो इसमें खस् प्रत्याहारमें छत्रम् की छकार परेहै और झसों में दूसरी छकार के चपों में चकार होगई तो तवच् छत्रम् हुआ चकार छत्रम् की छकार में मिलगई तो तवच्छत्रम् यह पद सिद्ध हुआ॥

क्वचिद्दीर्घादपिवक्तव्यः॥

कहीं २ दीर्घ ते उत्तर भी छकार द्वित्व होजावे॥

उदाहरण॥

जैसे ह्री छः इसमें दीर्घसे उत्तर छकार है तो छकार द्वित्व होगई तो ह्री छ् छः हुआ फिर खसे चपा झसानाम् सूत्रकरके पहली छकार को चकार होगई तो ह्री च् छः हुआ चकार छः की छकार में मिलगई तो ह्रीच्छः यह पद सिद्ध हुआ ऐसे-ही म्लेच्छः इत्यादि पद जानो॥

मोनुस्वारः॥

मकारस्यानुस्वारो भवति हसे परे पदान्ते च॥

दोहा। पदान्त में जो हसपरै हो मकार अनुस्वार।
तमहसति तंहसतिलिमि लेहुसुघरउरधार॥

हस् प्रत्याहार के परे पद के अन्त में जो मकार होवे तो उस मकार का अनुस्वार होजावे॥

उदाहरण ॥

जैसे तम् हसति इसमें हस् प्रत्याहारों में हसति की हकार परेहै और तम् शब्द में मकार पदके अन्तमें वर्त्तमान है तो मकार को अनुस्वार होगया तो तं हसति यह पद सिद्ध होगया ऐसेही और भी जानो ॥

स्वरे मः ॥

अनुस्वारस्य मकारो भवति स्वरे परे ॥

दोहा । अनुस्वार माकारहो स्वरपर समझ सुजान ।
जैसे देवं अरचियत देवमरचियत मान ॥

अनुस्वार के आगे स्वरपरे होवे तो अनुस्वार को मकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे देवं अरचियत इसमें अनुस्वारके आगे अरचियत की अकार स्वरपरे है तो अनुस्वार को मकार होगई तो देवम् अरचियत हुआ मकार अरचियत की अकार में मिलगई तो देवमरचियत यह पद सिद्ध हुआ ॥

नश्चापदान्ते झसे ॥

नकारस्य मकारस्य चापदान्ते वर्तमानस्यानुस्वारो भवति झसेपरे ॥

दोहा । झसपर और मकारपर नकार जो अपदान्त ।
अनुस्वारहो तासुको यही समझ वृत्तान्त ॥

झस् प्रत्याहारके परे अपदान्तमें वर्त्तमान नकार और मकारको अनुस्वार होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे यशान् सि इसमें झस् प्रत्याहार में सि परे है और नकार अपदान्त में है तो नकार को अनुस्वार होगया तो यशांसि यह पद सिद्ध हुआ इसी तरह से आक्रंस्यते में भी जानो ॥

यमा यपेस्य ॥

अनुस्वारस्य यमा वा भवन्ति यपे परे। अस्य यपस्य सवर्णः ॥

दोहा। अनुस्वार जो यमपरे यपविकल्प कर होत।
अरु यमयपके शरणहो वरणतबुद्धिउदोत ॥

यप् प्रत्याहार के परे अनुस्वार के यम् विकल्प करके हों अर्थात् अनुस्वार के आगे कवर्ग होवें तो अनुस्वार के ङकार, चवर्गहोवें तो ञकार, टवर्ग होवेंतो णकार ऐसेही तवर्ग में नकार और पवर्ग में मकार होजाता है ॥

उदाहरण॥

जैसे तं करोति इसमें अनुस्वार के आगे ककार है तो अनुस्वार को ङकार होगया तो तङ्करोति ऐसापद सिद्धहुआ ऐसेही तन्तनोति इत्यादि पद जानो ॥

यवलपरे यवला वा ॥

अनुस्वारस्य यवलपरे यवला वा भवन्ति ॥

दोहा। अनुस्वार पदान्त में यम विकल्पकरहोत।
यवलपरेहों यवलपुनि विकल्पकरउद्दोत ॥

इति कविकिशोरकृत सारस्वत दोहाओंमें व्यञ्जन सन्धि समाप्तहुई ॥

अनुस्वार के आगे जो य, व, ल ये तीन अक्षरपरे हों तो अनुस्वार के भी य, व, ल होजावें अर्थात् यकार परे हो तो यकार और वकारपरेहो तो वकार और लकार परे हो तो लकारही होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे सं यंता इसमें अनुस्वार के आगे यकार परे है तो अनुस्वार के भी यकारही हुई तो सँय्यन्ता ऐसारूप सिद्धहुआ ऐसेही सँव्वत्सरः । यँल्लोकं इत्यादि पद जानो ॥

ग्वं छन्दसि

छन्दस्यनुस्वारो ग्वंकारमापद्यते शषसहरेफेषुपरतः ॥

इत्यनुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृतेसारस्वतेव्यंजनसन्धिस्समाप्ता ॥

वेदमें जो अनुस्वारके आगे श,ष,स, ह और रकार होवे तो अनुस्वार के ग्वं होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे हं सः इसमें अनुस्वारके आगे सकार परे है तो अनुस्वारकी ग्वं होगई तो हग्वंसः ऐसा पद सिद्ध हुआ ऐसेही औरभी वेदहीके शब्द जानो ॥

इतिरामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां व्यंजनसन्धिस्समाप्ता ॥

अथानुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृतविसर्ग्गसंधिर्विधीयते ॥

विसर्ज्जनीयस्यसः ॥
विसर्ज्जनीयस्य सकारो भवति खसे परे ॥
शषसेवा ॥
विसर्जनीयस्य सकारो वा भवति शषसे परे ॥

अथकविकिशोरकृतसारस्वतदोहाओंमेंविसर्ग सन्धिप्रारम्भहुई ॥

दोहा । विसर्ज्जनीयसकारहो जोखसपरेसुजान ।
शषसःजोहोवेंपरे तो विकल्प परिमान ॥

अथरामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां विसर्गसन्धिःप्रारभ्यते ॥

खस्प्रत्याहार जो परेहोवें तो विसर्ग के सकार होजावे और श, ष, स ये तीनअक्षर जो परे होवें तो विकल्पकरके सकारहोवे अर्त्थात् एकपद में सकार होवे और दूसरे में विसर्गही बनीरहे ॥

उदाहरण ॥

जैसे कः तनोति इसमें खस्प्रत्याहार में तनोति की तकार परे है तो विसर्ग को सकारहोगया तो कस्तनोति यहपद सिद्धहुआ ऐसेही कः शेते इसमें विसर्ग के आगे शकार परे है तो एक रूप में विसर्ग को सकार होगया तो कस्शेते ऐसा हुआ फिर (स्तोःश्चुभिःश्चुः) सूत्रकरके शकारके योगसे दन्त्यसकार का भी तालव्य शकारकिया तो कश्शेते यह सिद्धहुआ । दूसरे रूप में विसर्गही बनीरही अर्त्थात् कः शेते ऐसाही बनारहा ऐसेही और भीजानो ॥

कुप्वोः ⨯ क⨯पौवा ॥

विसर्ज्जनीयस्य कवर्गपवर्गसम्बन्धिनि खसे परे ⨯क-⨯पौ वा भवतः। कपावुच्चारणार्थौ ॥

दोहा। खसकवर्ग पवर्ग युत जो विसर्ग पर होय।
तहां विसर्ग विकल्पकर⨯क⨯पाकर सोय ॥

विसर्ग के आगे जो कवर्ग व पवर्ग सम्बन्धी खस् प्रत्याहार परे होवें तो विसर्गके ⨯क वा ⨯ पविकल्प करके होवें अर्थात् एक पद में जो कवर्गसम्बन्धी होवें तो ⨯क और दूसरे पद में वैसाही बनारहे और जो पवर्ग सम्बन्धी होवें तो ⨯पभी विकल्प ही से होवे ॥ ककार व पकार केवल उच्चारण के लिये है ॥

उदाहरण ॥

जैसे कः करोति इसमें खस्प्रत्याहारकी कवर्ग सम्बन्धी करोति की ककार परे है तो विसर्ग के ⨯क होगई तो क ⨯करोति ऐसा पद सिद्धहुआ ऐसेही क ⨯पचति इत्यादि जानो ॥

वाचस्पत्यादयः संज्ञाशब्दा निपातात्साधवः। यल्लक्षणेनानुत्पन्नं तत्सर्व्वं निपातात्सिद्धम्। तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट्तलोपश्च ॥

दोहा। वाचस्पत्यादिकसकल जेतिकशब्दसँभार।
सो निपातकरसिद्ध हैं यहरीति उरधार ॥

वाचस्पतिआदिक जो संज्ञाशब्दहैं सो निपातकरके सिद्ध हैं निपात उसको कहते हैं जो लक्षणों अर्थात् सूत्रों से सिद्ध न होसके तो विसर्ग की जगह में सकार होजावे। ऐसेही तत्शब्द और बृहत् शब्द वा कर शब्द और पतिशब्द में जो ये शब्द चोर वा देवता के अर्थ के होवें तो सकार होजावे और तकारका लोप भी होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे वाचः पतिः इसमें विसर्ग की सकार होगई तो वाचस्पतिः ऐसापद सिद्धहुआ । ऐसेही तत् करः इसमें तत् और कर शब्द भी है और तस्कर चोरको भी कहते हैं तो तत् शब्द और करशब्द के बीच में सकार होगई और तत्शब्द की तकार का लोप होगया तो तस्करः पदसिद्धहुआ ऐसेही बृहस्पतिः देवतार्थ वाच्य में भी जानो ॥

अह्नोरोऽरात्रिषु ॥

अह्नोविसर्ज्जनीयस्य पदान्ते रो भवति रात्र्यादिगणवर्जितेषुपरतः ॥

विसर्ग के आगे रात्र, रूप, रथंतरादि ये रात्र्यादिगण हैं सो न परे होवें तो विसर्ग के रकारहोजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे अहः पतिः इसमें रात्र्यादिगणों में कोई नहीं है तो विसर्गकी रकारहोगई तो अहर्पतिः यहपद सिद्धहुआ ॥ और जहां अहः रात्रः इसमें रात्र्यादिगण हैं अर्थात् रात्रशब्दही है तो विसर्गके रेफ न हुई तो (हबे) सूत्रकरके विसर्गकी उकार होगई और (उ ओ) सूत्रकरके ओकारहोगई तो अहोरात्रः यह पद सिद्धहुआ ऐसेही अहोरूपं, अहोरथंतरं इत्यादि पदजानो॥

अतोत्युः ॥

अकारात्परस्यविसर्जनीयस्यउकारोभवति आतिपरतः॥

दोहा । अकार उत्तर होय अत समझ पूर्वहूमीत ।
सोइविसर्गउकारहो निश्चय समझ सुरीत ॥

अकारके परे जो अकारही से परे विसर्ग भी होवे तो विसर्ग के उकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे कः अर्थः इस अवस्था में अर्थः की अकार परे है

और ककार की अकार के आगे विसर्ग भी है तो विसर्ग की उकार होगई और (उ ओ) सूत्र करके उकार की भी ओकार होगई तो कोअर्थः भया फिर (एदोतोतः) करके अकारकालोप होगया तो कोऽर्थःयह पद सिद्ध हुआ ॥

हबे ॥

अकारात्परस्य विसर्जनीयस्य उकारो भवति हबे परे ॥

दोहा । अवर्ण परे विसर्ग को हबपर होय उकार ।
कविकिशोरवर्णनकरत समझहुहृदयविचार ॥

अकार ते परे विसर्ग के आगे जो हब् प्रत्याहारपरे होवे तो विसर्ग के उकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे कः गतः इसमें हब् प्रत्याहार में गतः की गकार परे है और ककार की अकार के आगे विसर्ग भी है तो विसर्ग की उकार होगई और (उ ओ) सूत्र करके उकार के ओकार हो गई तो को गतः यह पद सिद्ध हुआ ऐसेही देवोयाति, मनोरथः इत्यादि पद जानो ॥

आदबेलोपश्

अवर्णात्परस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यबेपरे ॥

दोहा । अवर्णपरे विसर्ग का लोपश समझ सुजान ।
परन्तु हो जो अब परे यही हृदय धर ध्यान ॥

अब् प्रत्याहार जो आगे परे होय तो अकार व आकार के आगे जो विसर्ग है तिसका लोपश् होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे देवाः अत्र इसमें अब्प्रत्याहार में अत्रकी अकार परे है और देव शब्द की आकारके आगे विसर्ग भी है तो विसर्ग

का लोपश्करदिया तो देवा अत्र ऐसा पद सिद्ध हुआ ऐसेही वातावान्ति इत्यादि पद जानो ॥

स्वरे यत्वं वा ॥

अवर्णात्परस्य विसर्ज्जनीयस्य यत्वं वा भवति स्वरे परे ॥

दोहा । यपविसर्गहो स्वरपरे विकल्प कर सुनमीत ।
देवायत्र विचारिये लखव्याकरण सुरीत ॥

स्वरपरे अकार वा आकार के आगे जो विसर्ग होवे तिसके यकार विकल्पकरके होवै अर्थात् एकरूप में विसर्ग के यकार होजावे दूसरी बारमें (आदबेलोपश्) से विसर्ग का ही लोपश् होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे देवाः अत्र इसमें स्वरों में अत्रकी अकार परे है और देव शब्द की आकार के आगे विसर्ग भी है तो विसर्ग के यकार होगया तो देवायत्र रूप हुआ । दूसरी बार में जब विसर्ग के यकार न हुआ तो (आदबेलोपश्) सूत्र करके विसर्ग का ही लोपश् होगया तो देवा अत्र ऐसा पद सिद्ध हुआ ऐसेही और भी जानो ॥

भोसः ॥

भोस् भगोस् अघोस् इत्येतस्य विसर्जनीयस्य लोपश् भवत्यबे परे ॥

अब् प्रत्याहार जो परे होवे तो भोस् भगोस् अघोस् इन शब्दों की विसर्ग का लोपश् होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे भोः एहि इसमें अब्प्रत्याहारों में एहि की एकार परे है तो भोस् शब्दकी विसर्ग का लोपश् होगया तो भो एहि ऐ-

सा पद सिद्ध हुआ ऐसेही भगोनमस्ते अघोयादि इत्यादि पद जानो ॥

नामिनोरः ॥

नामिनः परस्य विसर्जनीयस्य रेफो भवत्यबे परे ॥

दोहा । विसर्ग नामी ते परे रेफ होय तत्कार ।
परन्तु हो जो अबपरे यहीरीति उरधार ॥

अबूपरे नामी अर्थात् अकार स्वर को छोड़ के और सब स्वरों के आगे जो विसर्ग होवे तो विसर्ग के रकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे पटुः यजते इसमें अबूप्रत्याहारों में यजते की यकार परे है और पटु शब्दकी टकार की उकार के आगे विसर्ग भी है तो विसर्ग के रकार होगया और रकार यजते की यकार के ऊपर चढ़गई तो पटुर्यजते पद सिद्ध होगया ऐसे-ही अग्निः अत्र में विसर्गकी रकार होगई तो अग्निरत्र पद सिद्ध हुआ ऐसेही और भी जानो ॥

उषसो रो बुधः

उषसो विसर्जनीयस्य रेफो भवति बुधे परे ॥

बुध शब्द जो परे होवे तो उषस् शब्द की भी विसर्ग के रकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे उषः बुधः इसमें बुध शब्द परे है तो उषस् शब्दकी विसर्ग के रकार होगया और रकार बुध की बकार के ऊपर चढ़ गया तो उषर्बुधः पद सिद्ध जानो ॥

रेफप्रकृतिकस्य खपे वा ॥

रेफप्रकृतिकस्य विसर्जनीयस्य खपेपरे वा रेफोभवति ॥

खप् प्रत्याहार जो परे होवें तो रेफप्रकृतिक अर्थात् रेफ

की प्राप्तिवाली विसर्ग के रकार विकल्प करके होवे अर्थात् एक पदमें रकार होजावे और दूसरे पदमें न होवे ॥

उदाहरण ॥

जैसे गीः पतिः इसमें खपूप्रत्याहारमें पतिः की पकार परे है और रेफ होनेवाली विसर्ग भी हैं तो विसर्गों के रकार हो गई और रकार पतिः की पकारके ऊपर चढ़गई तो गीर्पतिः यहपद सिद्धहुआ दूसरी बार जब विसर्ग के रकार न हुई तो (विसर्जनीयस्य सः) सूत्र करके विसर्ग के सकार होगया और निपातः से सकारका षकारहोगया तो गीष्पतिः यह भी पद सिद्ध होगया ऐसेही और भी जानो ॥

रः

रेफसम्बन्धिनो विसर्जनीयस्य रेफो भवत्यबेपरे ॥

अब् प्रत्याहार जो परे होवें तो रेफसम्बन्धी विसर्ग के रकार होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे प्रातः अत्र इसम अबूप्रत्याहारोंमें अत्रकी अकार परे है तो विसर्ग के रकार होगया तो प्रातरत्र पद सिद्ध होगया ऐसेही अन्तर्गतः आदि पदसिद्ध जानो ॥

रिलोपो दीर्घश्च

रेफस्य रेफे परे लोपो भवति पूर्वस्य च दीर्घः ॥

दोहा। रेफपरे जो रेफ हो ताको लोप प्रमान।
पूर्व ह्रस्वते दीर्घ हो समझहु परम सुजान ॥

रकारके परे जो रकारहोवे तो पहले की रकारका लोप होजावे और रकारके पहलेका जो अक्षरहै सो दीर्घ होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे पुनः रमते इसमें (रः) सूत्र करके विसर्ग का रकार होगया तो पुनर् रमते हुआ फिर (रिलोपो दीर्घश्च) सूत्र करके

पहली रकार का लोप होगया और रकार के पहले की नकार दीर्घ होगई तो पुनारमते पद सिद्धहुआ ऐसेही औरभी जानो ॥

सैषाद्धसे ॥

सशब्दादेषशब्दाच्च परस्य विसर्जनीयस्य लोपो भवति हसे परे ॥

दोहा। शब्दएष सहसा परे विसर्ग हसपर होय।
ताकोलोप प्रमानिये निश्चयसमझोसोय ॥

इतिकविकिशोरकृत सारस्वत दोहाओं में विसर्गसन्धि समाप्तहुई ॥

हस् प्रत्याहार जो परेहोवें तो स शब्द और एष शब्द ते परे विसर्ग का लोप होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे सः चरति इसमें हस्प्रत्याहार में चरति की चकार परे है और स शब्द ते परे विसर्ग भी है तो विसर्ग का लोप होगया तो सचरतिपद सिद्धहुआ ऐसेही एषहसति भी जानो ॥

सैषादितिसंहिता ॥

श्लोक। सैष दाशरथी रामः सैष राजा युधिष्ठिरः।
सैष कर्णो महात्यागी सैष भीमो महाबलः ॥

इत्यादौ पादपूरणे संध्यर्था ॥

यह दशरथजी के पुत्र रामचन्द्रजी हुए और यह राजा युधिष्ठिर भी भये और यह महादानी कर्ण हुए और यह महाबली भीमसेनजी हुए--इस ऊपर के श्लोक में उदाहरण के लिये यह श्लोक लिखागया है सब सैष शब्द में विसर्ग का लोप होगया है इनमें सन्धिका प्रयोजन पादपूरणार्थ है ॥

श्लोक । यदुक्तं लौकिकार्येह तद्वेदे बहुलं भवेत् ।
सेमां भूम्याददे सोषामित्यादीनामदुष्टता ॥

जो लौकिकके अर्थ कहागया है वह वेदमें बहुल अर्थात् अनिश्चित होता है बामन जीने राजाबलिकी पृथ्वी ग्रहण करली और अनिरुद्धने बाणासुर की कन्या ऊषाको ग्रहण करलिया है इन में कुछ दुष्टता नहीं है ॥

क्वचिन्नामिनो लोपश्॥

क्वचिन्नामिनः परस्य विसर्जनीयस्य लोपश्भवत्यबे परे ॥

कहीं २ अब्प्रत्याहार के परे नामी अर्थात् अकारको छोड़ के और सब स्वरोंके आगे जो विसर्गहोवे तो विसर्गका लोपश् होजावे ॥

उदाहरण ॥

जैसे भूमिः आददे यहां अब्प्रत्याहार में आददे की आकार परेहै और नामीते परे विसर्ग भी है तो विसर्गका लोपश् होगया तो भूमिआददे हुआ फिर (इयंस्वरे) करके इकारके यकार होगया और मकार यकार आददे की आकार में मिलगये तो भूम्याददे पदसिद्ध हुआ सोई ऊपर के श्लोक में भी भूम्याद दे पदरक्खा हुआ है ॥

श्लो० । क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः ।
क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ॥
विधेर्विधानं बहुधासमीक्ष्य ।
चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति १
वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च ।
द्वौचापरौ वर्णविकारनाशौ ॥

धातोस्तदर्थातिशयेन योग-।
स्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् २
वर्णागमो गवेन्द्रादौ।
सिंहे वर्णविपर्य्ययः॥
षोडशादौ विकारः स्या-।
द्वर्णनाशः पृषोदरे ३
वर्णविकारनाशाभ्यां।
धातोरतिशयेन यः॥
योगः स उच्यते प्राज्ञै-।
र्मयूरभ्रमरादिषु ४॥

इत्यनुभूतिस्वरूपाचार्यकृते सारस्वते
विसर्गसन्धिः समाप्ता॥

कहींतो प्रवृत्ति अर्थात् अप्राप्त सूत्रसे सन्धिहोजावे औरकहीं २ अप्रवृत्ति अर्थात् प्राप्तसूत्रसे सन्धि नहीं होवे कहीं २ विकल्प और कहींऔरही होवे इस तरहसे विधिकाविधान बहुत प्रकारसे देख के आचार्यलोग चारप्रकार का बाहुलक कहतेहैं १ वर्णका आगम अर्थात् बीचमें कोई अक्षर और होजावे और विपर्य्यय अर्थात् वर्णका उलटा होजाना और वर्णका विकार अर्थात् अक्षरकी जगहमें दूसरा अक्षर होजाना और वर्णका नाश और धातु का तदर्थ अतिशय करके योग सो मुनिलोग पाँच प्रकारका कहतेहैं २ गवेन्द्रादिकों में तो वर्णका आगम होता है और सिंह शब्द में वर्ण का विपर्य्यय होजाता है और षोडशशब्द में वर्ण का विकार होताहै और पृषोदर शब्द में वर्णका नाश होताहै ३

वर्ण के विकार और नाश करके जो धातु का अतिशय करके योग है सो बुद्धिमानों ने मयूर भ्रमरादि शब्दों में कहा है ॥

इतिउन्नामप्रदेशान्तर्गततारगांवनिवासिपण्डित रामविहारीसुकुलकृतसारस्वतभाषाटीकायां विसर्गसन्धिः समाप्ता ॥

इति सारस्वते पञ्चसन्धयः समाप्ता ः ॥

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपी जनवरी सन् १८९२ ई०

Chhadami Lal

भाषा भास्कर।

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण।

काशी नगर के पादरी एथरिङ्गटन साहिब ने
विद्यार्थियों की शिक्षा निमित्त
बनाया

यीसुहि शीश नवाइ के कियो नयो यह ग्रन्थ।
भाषा भास्कर याहि लखि लखैं लोग पद पन्थ॥

BHÁSHÁ BHÁSKAR.

A GRAMMAR
OF THE
HINDI LANGUAGE:
DESIGNED FOR NATIVE STUDENTS

BY THE
REV. W. ETHERINGTON,
Missionary, Benares.

श्रीयुतडाइरक्टरपब्लिकइन्स्ट्रक्शन समालिकमग़रबी शिमाली
व अवधकी आज्ञानुसार मदर्सोंकेलिये इलाहाबाद
गवर्नमेण्टप्रेसमें छापागया
वही
श्रीमान्डाइरक्टरपब्लिकइन्स्ट्रक्शनममालिक मग़रबीशिमाली
व अवधकी इजाज़तसे विद्यार्थियोंके लाभके लिये
लखनऊ
मुंशीनवलकिशोरके छापेख़ानेमें छापागया
नवम्बर सन् १८८० ई०

ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार रजिस्ट्री हुई

2nd edition 20,000 copies, } { दूसरी बार २०,००० पुस्तकें
Price, per copy 4 annas, } { मोल फ़ी पुस्तक ।) आने

भाषा भास्कर।

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण।

काशी नगर के पादरी एथरिङ्गटन साहिब ने
विद्यार्थियों की शिक्षा निमित्त
बनाया

यीसुहि शीश नवाइ के कियो नयो यह ग्रन्थ।
भाषा भास्कर याहि लखि लखैं लोग पद पन्थ॥

BHÁSHÁBHÁSKAR.

A GRAMMAR

OF THE

HINDI LANGUAGE.

DESIGNED FOR NATIVE STUDENTS,

BY THE

REV. W. ETHERINGTON,

Missionery, Benares.

श्रीयुतडाइरक्टरपब्लिकइन्स्ट्रक्शनममालिकमगरबी शिमाली
व अवधकी आज्ञानुसार मदर्सोंकेलिये इलाहाबाद
गवर्न्मेण्टप्रेसमें छापागया

वही

श्रीमान्डाइरक्टरपब्लिकइन्स्ट्रक्शनममालिकमगरबीशिमाली
व अवधकी इजाज़तसे विद्यार्थियोंके लाभके लिये
लखनऊ
मुंशीनवलकिशोरके छापेख़ानेमें छापागया
नवम्बर सन् १८८७ ई०

ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार रजिस्ट्री हुई

सूचीपत्र।

सूचीपत्र ॥

PREFACE TO THE FIRST EDITION.

"The Student's Grammar of the Hindí Language," published by me last year, was reviewed by the Director of Public Instruction, North-Western Provinces, and recommended to Government for a prize. "Being a work in the English language, it hardly comes within the scope of the Prize Notification, which relates only to vernacular literature;" but His Honor the Lieutenant-Governor suggested that the book, if put into a form suitable for use in vernacular education, "would be a valuable contribution to the vernacular literature, and, as such, a fit subject for a prize"* In accordance with this suggestion, the little book in the hands of the reader was prepared.

Being designed for Native youth, this is not a mere translation of the "Student's Hindí Grammar," which would not have served the purpose, that book being adapted to the wants of Europeans having no knowledge of the Indian dialects. In the following pages the reader will find much that is new as regards both matter and arrangement, in every chapter, especially in the treatment of the noun and the verb. I have taken advantage of the criticism of scholars who reviewed the former book here and in England, and have felt it necessary to omit or to modify some points that I formerly held as correct. In several instances I have ventured to differ from well-known Hindí scholars; but in no case hastily, or without being, as I supposed, justified by what seemed to me to be the facts of the case.

I have read whatever came in my way that seemed likely to aid me in the preparation of the book, and have made use of whatever promised to afford help to Native students in acquiring a competent knowledge of the structure of their mother-tongue. I am in a great measure indebted to the advice and suggestions of the accomplished Pandit Vishan Datt, who prepared the greater part of the last chapter and revised the entire book with me.

BENARES,
October, 1871, } W. ETHERINGTON.

* A prize of five hundred rupees was awarded to the author on the appearance of the first edtion of this book. The copyright of this second and improved edition has been purchased by Government.

भाषाभास्कर

अर्थात

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥

अथ प्रथम अध्याय ।

---

१ भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा बोलकर मनुष्य अपने मन के बिचार का प्रकाश करता है ॥

२ व्याकरण के विन जाने शुद्ध २ बोलना वा लिखना किसी भाषा का नहीं होता ॥

३ उस विद्या को व्याकरण कहते हैं जिस से लोग बोलने और लिखने की रीति सीख लेते हैं ॥

४ भाषा वाक्यों से बनती है वाक्य पदों से और पद अक्षरों से बनाये जाते हैं ॥

५ व्याकरण में मुख्य विषय तीन हैं जो अक्षरों से पदों से और वाक्यों से सम्बन्ध रखते हैं ॥

६ पहिला विषय वर्णविचार है जिस में अक्षरों के आकार उच्चारण और मिलने की रीति बताई जाती है ॥

७ दूसरा विषय शब्दसाधन है जिस में शब्दों के भेद अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन है ॥

८ तीसरा विषय वाक्यविन्यास है उस में शब्दों से वाक्य बनाने की रीति बताई जाती है ॥

प्रथम विषय—वर्णविचार ॥

९ हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखी जाती है वे देवनागरी कहाते हैं ॥

१० शब्द के उस खण्ड का नाम अक्षर है जिसका विभाग नहीं हो सकता और उसके चीन्हने के लिये जो चिन्ह बनाये गये हैं वे भी अक्षर कहाते हैं ॥

११ अक्षर दो प्रकार के होते हैं स्वर और व्यंजन और इन्हीं दोनों के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं ॥

१२ स्वर उन्हें कहते हैं जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं और जिनका उच्चारण आप से हो सकता है ॥

१३ व्यंजन उन वर्णों को कहते हैं जिनके बोलने में स्वर की सहायता पाई जाय ॥

स्वर ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ* ए ऐ ओ औ

व्यंजन ।

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म य र ल व
श ष स ह

१४ व्यंजनों का स्पष्ट उच्चारण स्वर के योग से होता है जैसा क् + अ=क ख्+अ=ख इत्यादि । और जब क आदि व्यंजनों में स्वर नहीं रहता तो उन्हें हल् कहते हैं और उनके नीचे ऐसा ् चिन्ह कर देते हैं ॥

किसी अक्षर के आगे कार शब्द जोड़ने से वही अक्षर समझा जाता है ॥

१५ अनुस्वार और विसर्ग भी एक प्रकार के व्यंजन हैं । अनुस्वार का उच्चारण प्रायः हल् नकार के समान और विसर्ग का हकार के तुल्य होता है ॥

१६ अनुस्वार का आकार स्वर के ऊपर की एक बिन्दी और विसर्ग का स्वरूप स्वर के आगे का खड़ी दो बिन्दियां हैं । अनुस्वार जैसे हंस बंश में विसर्ग जैसे प्रायः दुःख इत्यादि में है ॥

स्वर के विषय में ॥

१७ मूल स्वर नव हैं उनके स्वरूप ये हैं अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ । इन में से पहिले पांच ह्रस्व और पिछले चार दीर्घ और संयुक्त भी कहाते हैं । संयुक्त कहने का अर्थ यह है कि अ + इ = ए आ + ई = ऐ अ + उ = ओ और आ + ऊ = औ ॥

१८ अकार के बोलने में जितना समय लगता है उसे ही मात्रा कहते हैं । जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा होवे उसे ह्रस्व वा एक

---

* ॠ ऌ ॡ ये वर्ण हिन्दी शब्दों में नहीं आते केवल देवनागरी वर्णमाला की पूर्णता निमित्त रक्खे गये हैं ॥

मात्रिक कहते हैं और जिनके बोलने में इसका दूना काल लगे वे दीर्घ अथवा द्विमात्रिक कहाते हैं। जैसे अ इ उ ऋ ऌ ये ह्रस्व वा एकमात्रिक हैं।

आ ई ऊ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ ये दीर्घ वा द्विमात्रिक हैं।

ए ऐ ओ औ ये दीर्घ और संयुक्त भी हैं॥

१९ जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व के उच्चारण से तिगुना काल लगता है उसे प्लुत वा त्रिमात्रिक कहते हैं और उसका प्रयोजन हिन्दी भाषा में थोड़ा पड़ता है केवल पुकारने और चिल्लाने आदि में बोला जाता है। उसके पहचानने को दीर्घ के ऊपर तीन का अंक लिख देते हैं। जैसे हे मोहना ३ यहां अंत्य स्वर को प्लुत बोलते हैं॥

२० अकार आदि स्वर जब व्यंजन से नहीं मिले रहते तब उन्हें स्वर कहते हैं और वे पूर्वोक्त आकार के अनुसार लिखे जाते हैं परंतु जब ककार आदि व्यंजनों से मिलते हैं तो इनका स्वरूप पलट जाता है और ये मात्रा कहाते हैं। प्रत्येक स्वर के नीचे उसकी मात्रा लिखी है॥

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	ॄ	ॢ	ॣ	े	ै	ो	ौ

व्यंजनों के विषय में॥

२१ सम्पूर्ण व्यंजनों के सात विभाग हैं। वर्णमाला के क्रम के अनुसार ककार से लेकर मकार लों जो पचीस व्यंजन हैं जिन्हें संस्कृत में स्पर्श कहते हैं उन में पांच वर्ग होते हैं और शेष आठ व्यंजनों के दो भाग हैं अर्थात अंतस्थ और ऊष्म। जैसे।

क	ख	ग	घ	ङ	यह क— वर्ग	है॥
च	छ	ज	झ	ञ	" च— वर्ग	"
ट	ठ	ड	ढ	ण	" ट— वर्ग	"
त	थ	द	ध	न	" त— वर्ग	"
प	फ	ब	भ	म	" प— वर्ग	"
य	र	ल	व		ये अंतस्थ	हैं॥
श	ष	स	ह		ये ऊष्म	हैं॥

२२ प्रयत्न के अनुसार व्यंजनों के दो भेद होते हैं अर्थात अल्पप्राण और महाप्राण। प्रत्येक वर्ग के पहिले और तीसरे अक्षरों को अल्पप्राण और

दूसरे और चौथे को महाप्राण कहते हैं। जैसे कवर्ग में क ग अल्पप्राण और ख घ महाप्राण हैं। इसी प्रकार से चवर्ग आदि में भी जानो। जैसे

अल्पप्राण।	महाप्राण।
क ग	ख घ
च ज	छ झ
ट ड	ठ ढ
त द	थ ध
प ब	फ भ

२३ रकार और ऊष्म को छोड़कर शेष अक्षरों के भी दो और भेद हैं सानुनासिक और निरनुनासिक। जिनका उच्चारण मुख और नासिका से होता है उन्हें सानुनासिक कहते हैं और जो केवल मुख से बोले जाते हैं वे निरनुनासिक कहाते हैं॥

२४ वर्णों के सिर पर ऐसा ँ चिन्ह देने से सानुनासिक होता है परंतु भाषा में प्रायः अनुस्वार ही लिखा जाता है और निरनुनासिक का कोई चिन्ह नहीं है॥

२५ प्रत्येक वर्ग के पांचवें वर्ण को सानुनासिक अल्पप्राण कहते हैं। जैसे

ङ ञ ण न म

२६ जब व्यंजन के साथ मात्रा मिलायी जाती है तब व्यंजन का आकार मात्रासहित हो जाता है। जैसे

क का कि की कु कू कृ कॄ क्ऌ क्ॡ के कै को कौ

इसी रीति ख आदि मिलाकर सब व्यंजनों में जानो। परंतु जब उ वा ऊ की मात्रा र के साथ मिलाई जाती है तब उसका रूप कुछ विकृत होता है। जैसे रु रू॥

संयुक्त व्यंजन॥

२७ जब दो आदि व्यंजनों के मध्य में स्वर नहीं रहता तब उन्हें संयोग कहते हैं और वे एकही साथ लिखे जाते हैं। जैसे पत्थर इस शब्द में त् और थ का संयोग है॥

२८ बहुधा संयुक्त अक्षरों की लिखावट में मिले हुए व्यंजनों का रूप दिखाई देता है परंतु क्ष त्र ज्ञ इन अक्षरों में जिनके संयोग से बने

हैं उनका कुछ भी रूप नहीं दिखाई देता इसलिये कोई कोई व्यंजनों के साथ वर्णमाला के अंत में इन्हें लिख देते हैं। क् और ष के मेल से क्ष और त् और र के योग से त्र और ज् और ञ मिलके ज्ञ बन गया है॥

२९ प्रायः संयोग में आदि के व्यंजन का आधा और अंत के व्यंजन का पूरा स्वरूप लिखा जाता है। जैसे विस्वा प्यास मन्दिर इत्यादि में॥

३० ङ छ ट ठ ड ढ ये छः व्यंजन ऐसे हैं जो संयोग के आदि में भी पूरे ही लिखे जाते हैं। जैसे चिट्ठी टिड्डी आदि में॥

३१ रकार जब संयोग के आदि में होता है तब उसके सिर पर लिखा जाता है और उसे रेफ कहते हैं। जैसे पूर्व धर्म आदि में। परंतु जब रकार संयोग के अंत में आता है तो आदि के व्यंजन के नीचे इस रूप से ◌्र लिखा जाता है। जैसे शक्र चक्र मुद्रा आदि में॥

३२ हिन्दी भाषा में संयोग बहुधा दो अक्षरों के मिलते हैं परंतु कभी २ तीन अक्षरों के भी आते हैं। जैसे स्त्री मन्त्री मूर्द्धा इत्यादि॥

३३ प्रत्येक सानुनासिक व्यंजन अपनेही वर्ग के अक्षरों से युक्त हो सकता है और दूसरे वर्ग के वर्णों के साथ कभी मिलाया नहीं जाता परंतु अनुस्वार बना रहता है। जैसे पङ्कज चञ्चल घण्टा छन्द याम्मना गंगा ऊंट इत्यादि॥

३४ यदि अनुस्वार से परे कवर्ग आदि रहें तो उसको भी ङकार आदि सानुनासिक पञ्चम वर्ण करके ककार आदि में मिला देते हैं। जैसे अङ्क शान्त इत्यादि॥

३५ यदि किसी वर्ग के दूसरे वा चौथे अक्षर का द्वित्व होवे तो संयोग के आदि में उसी वर्ग का पहिला वा तीसरा अक्षर आवेगा जैसे गफ़्फ़ा=गप्फ़ा आदि॥

३६ संयोग में जो अक्षर पहिले बोले जाते हैं वे पहिले लिखे जाते हैं और जिनका उच्चारण अंत में होता है उन्हें अंत में लिखते हैं। जैसे शब्द अब्र अन्त्य इत्यादि॥

अक्षरों के उच्चारण के विषय में॥

३७ मुख के जिस भाग से किसी अक्षर का उच्चारण होता है उसी भाग को उस अक्षर के उच्चारण का स्थान कहते हैं॥

३८ अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका उच्चारण कण्ठ से होता है इसलिये ये कण्ठ्य कहाते हैं ॥

३९ इ ई च छ ज झ ञ य श तालु पर जीभ लगाने से ये सब वर्ण बोले जाते हैं इसलिये ये अक्षर तालव्य कहाते हैं ॥

४० ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष ये मूर्द्धा अर्थात तालु से भी ऊपर जीभ लगाने से बोले जाते हैं इसलिये इनको मूर्द्धन्य कहते हैं ॥

४१ चेत रखना चाहिये कि ड और ढ के दो २ उच्चारण होते हैं एक तो यह कि जब इन अक्षरों के नीचे बिंदु नहीं रहता तो जीभ का अग्र तालु पर लगाते हैं जैसे डरना डाकू ढाल ढोल इन शब्दों में। इन अक्षरों के नीचे बिन्दु होने से दूसरा उच्चारण समझा जाता है इसके बोलने में जीभ का अग्र उलटा करके मूर्द्धा से लगाया जाता है। जैसे बड़ा थोड़ा पढ़ना चढ़ना इन शब्दों में ॥ यह भी चेत रखना चाहिये कि अनेक लोग ष का उच्चारण ख के समान कर देते हैं जैसे मनुष्य को मनुख्य भाषा को भाखा दोष को दोख बोलते हैं परंतु यह रीति अशुद्ध है ॥

४२ ऌ त थ द ध न ल स ये ऊपर के दन्तों पर जीभ लगाने से उच्चरित होते हैं इसलिये इन अक्षरों को दन्त्य कहते हैं ॥

४३ उ ऊ प फ ब भ म ये ओठों से बोले जाते हैं इसलिये इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं ॥

४४ ए ऐ इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ और तालु है इसलिये ये कण्ठोष्ठ्य कहाते हैं ॥

४५ ओ औ कण्ठ और ओष्ठ से बोले जाते हैं इसलिये ये कण्ठोष्ठ्य कहाते हैं ॥

४६ व के उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ हैं इसलिये इसे दन्त्योष्ठ्य कहते हैं ॥ ब और व ये दो वर्ण बहुधा परस्पर बदल जाते हैं। संस्कृत शब्दों में जहां व होता है वहां हिन्दी में ब लगाते हैं और कभी २ ब की जगह में व बोलते हैं पर संस्कृत में जैसा शब्द है वैसा ही प्रायः हिन्दी में होना चाहिये ॥

४७ अनुस्वार का उच्चारण नासिका से होता है इसलिये सानुनासिक कहाताहै ॥

४८ ङ ञ ण न म ये अपने २ वर्गों के स्थान और नासिका से भी बोले जाते हैं इसलिये ये सानुनासिक कहाते हैं ॥

४९ जिन अक्षरों के स्थान और प्रयत्न समान होते हैं वे आपस में सवर्ण कहाते हैं जैसे क और ग का स्थान कण्ठ है और इनका समान प्रयत्न है इस कारण क ग आपस में सवर्ण कहाते हैं। नीचे के दो चक्रों से वर्णमाला के सब अक्षरों के स्थान और प्रयत्न ज्ञात होते हैं ॥

५० स्वर चक्र

विवृत और घोष प्रयत्न				
स्थान	ह्रस्व	दीर्घ	स्थान	दीर्घ
कण्ठ	अ	आ	कण्ठ + तालु	ए
तालु	इ	ई	कण्ठ + तालु	ऐ
ओष्ठ	उ	ऊ	कण्ठ + ओष्ठ	ओ
मूर्द्धा	ऋ	ॠ	कण्ठ + ओष्ठ	औ
दन्त	ऌ	ॡ		

५१ व्यंजन चक्र

	अघोष		घोष					अघोष	
वर्ग	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण	महाप्राण	अल्पप्राण सानुनासिक	अल्पप्राण अन्तस्थ	महाप्राण ऊष्म	महाप्राण ऊष्म	स्थान
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ		ह		कण्ठ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	य		श	तालु
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	र		ष	मूर्द्धा
तवर्ग	त	थ	द	ध	न	ल		स	दन्त
पवर्ग	प	फ	ब	भ	म	व			ओष्ठ

इति प्रथम अध्याय ॥

अथ द्वितीय अध्याय ॥

संधि प्रकरण ।

५२ प्राय: प्रत्येक भाषा में कहीं २ ऐसा होता है कि दो अक्षर निकट होने से परस्पर मिल जाते हैं उनके मिलने से जो कुछ विकार होता है उसी को संधि कहते हैं ॥

५३ संस्कृत भाषा में सब शब्द संधि के आधीन रहते हैं और हिन्दी में संस्कृत के अनेक शब्द आया करते हैं उनके अर्थ और व्युत्पत्ति समझने के लिये हिन्दी में संधि का कुछ ज्ञान आवश्यक है। अब संधि के मुख्य नियम जो हिन्दी के विद्यार्थियों को काम आवें उन्हें लिखते हैं ॥

५४ संधि तीन प्रकार की है अर्थात स्वरसंधि व्यंजनसंधि और विसर्गसंधि ॥

५५ स्वर के साथ स्वर का जो संयोग होता है उसे स्वरसंधि कहते हैं ॥

५६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ व्यंजन का जो संयोग होता है उसे व्यंजनसंधि कहते हैं ॥

५७ स्वर और व्यंजन के साथ जो विसर्ग का संयोग होता है उसे विसर्गसंधि कहते हैं ॥

१ स्वरसंधि ।

५८ स्वरसंधि के पांच भाग हैं अर्थात दीर्घ गुण वृद्धि यण् और अयादि चतुष्टय ॥

१ दीर्घ ।

५९ जब समान दो स्वर ह्रस्व वा दीर्घ एकट्ठे होते हैं तो दोनों को मिलाकर एक दीर्घ स्वर कर देते हैं। यह बात नीचे के उदाहरण देखने से प्रत्यक्ष हो जायगी ॥

यदि पूर्व पद के अन्त में पहिली पांती का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती का स्वर हो जायगा	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	अ	आ	परम + अर्थ	= परमार्थ
अ	आ	आ	देव + आलय	= देवालय
आ	अ	आ	विद्या + अर्थी	= विद्यार्थी
आ	आ	आ	विद्या + आलय	= विद्यालय
इ	इ	ई	प्रति + इति	= प्रतीति
इ	ई	ई	अधि + ईश्वर	= अधीश्वर
ई	इ	ई	मही + इन्द्र	= महीन्द्र
ई	ई	ई	नदी + ईश	= नदीश
उ	उ	ऊ	विधु + उदय	= विधूदय
उ	ऊ	ऊ	लघु + ऊर्म्मि	= लघूर्म्मि
ऊ	उ	ऊ	स्वयंभू + उदय	= स्वयंभूदय
ऋ	ऋ	ॠ	मातृ + ऋद्धि	= मातॄद्धि

२ गुण।

६० ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार से परे ह्रस्व वा दीर्घ इ उ ऋ रहें तो अ इ मिलकर ए और अ उ मिलकर ओ अ ऋ मिलकर अर् होता है। इसी विकार को गुण कहते हैं। नीचे के चक्र में इनके उदाहरण लिखे हैं॥

यदि पूर्व पद के अन्त में पहिली पंक्ति का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पंक्ति का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पंक्ति का स्वर हो जायगा	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	इ	ए	देव + इन्द्र	= देवेन्द्र
अ	ई	ए	परम + ईश्वर	= परमेश्वर

आ	इ	ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ	ई	ए	महा + ईश = महेश
अ	उ	ओ	हित + उपदेश = हितोपदेश
अ	ऊ	ओ	जल + ऊर्म्मि = जलोर्म्मि
आ	उ	ओ	महा + उत्सव = महोत्सव
आ	ऊ	ओ	गंगा + ऊर्म्मि = गंगोर्म्मि
अ	ऋ	अर्	हिम + ऋतु = हिमर्तु
आ	ऋ	अर्	महा + ऋषि = महर्षि

३ वृद्धि ।

६१　ह्रस्व अथवा दीर्घ अकार से परे ए ऐ ओ वा औ रहे तो अ ए वा अ ऐ मिलकर ऐ और अ ओ वा अ औ मिलकर औ होता है। इस विकार को वृद्धि कहते हैं। उदाहरण चक्र में देख लो॥

यदि पूर्व पद के अन्त में पहिली पंक्ति का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पंक्ति का स्वर हो	तो दोनों मिलकर तीसरी पंक्ति का स्वर होता है	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
अ	ए	ऐ	एक + एक	= एकैक
अ	ऐ	ऐ	परम + ऐश्वर्य	= परमैश्वर्य
आ	ए	ऐ	तथा + एव	= तथैव
आ	ऐ	ऐ	महा + ऐश्वर्य	= महैश्वर्य
अ	ओ	औ	सुन्दर + ओदन	= सुन्दरौदन
आ	ओ	औ	महा + ओषधि	= महौषधि
अ	औ	औ	परम + औषध	= परमौषध
आ	औ	औ	महा + औदार्य	= महौदार्य

४ यण् ।

६२ ह्रस्व वा दीर्घ इकार उकार ऋकार से परे कोई भिन्न स्वर रहे तो क्रम से ह्रस्व वा दीर्घ इ उ ऋ को य व र हो जाते हैं। इसी विकार को यण् कहते हैं। यथा

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर होवे	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती के वर्ण हो जायेंगे	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
इ	अ	य	यदि + अपि	= यद्यपि
इ	आ	या	इति + आदि	= इत्यादि
इ	उ	यु	प्रति + उपकार	= प्रत्युपकार
इ	ऊ	यू	नि + ऊन	= न्यून
इ	ए	ये	प्रति + एक	= प्रत्येक
इ	ऐ	यै	अति + ऐश्वर्य	= अत्यैश्वर्य
इ	ऋ	यृ	युवति + ऋतु	= युवत्यृतु
ई	अ	य	गोपी + अर्थ	= गोप्यर्थ
ई	आ	य	देवी + आगम	= देव्यागम
ई	उ	यु	सखी + उक्त	= सख्युक्त
उ	अ	व	अनु + अय	= अन्वय
उ	आ	वा	सु + आगत	= स्वागत
उ	इ	वि	अनु + इत	= अन्वित
उ	ए	वे	अनु + एषण	= अन्वेषण
उ	ऐ	वै	वहु + ऐश्वर्य	= वह्वैश्वर्य
ऊ	अ	व	सरयू + अम्बु	= सरय्वम्बु
ऋ	अ	र	पितृ + अनुमति	= पित्रनुमति
ऋ	आ	रा	मातृ + आनन्द	= मात्रानन्द

४ अयादि ।

६३ ए ऐ ओ औ इन से जब कोई स्वर आगे रहता है तो क्रम से अय् आय् अव् आव् हो जाते हैं। इस विकार को अयादि कहते हैं। नीचे के चक्र में उदाहरण लिखे हैं॥

यदि पूर्व पद के अंत में पहिली पांती का स्वर हो	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का स्वर हो	तो अंत्य स्वर के बदले तीसरी पांती के वर्ण हो जाते हैं	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
ए	अ	अय्	ने + अन	= नयन
ऐ	अ	आय्	नै + अक	= नायक
ओ	अ	अव्	पो + अन	= पवन
ओ	इ	अव्	पो + इत्र	= पवित्र
ओ	ई	अव्	गो + ईश	= गवीश
औ	अ	आव्	पौ + अक	= पावक
औ	इ	आव्	भौ + इनी	= भाविनी
औ	उ	आव्	भौ + उक	= भावुक

६४ यदि शब्द के अनन्तर में ए वा ओ रहे और पर शब्द के आदि में अ आवे तो अ का लोप हो जायगा। उसको लुप्त अकार कहते हैं और ऐसे ऽ चिन्ह से बोधित होता है। यथा सखे+अर्पय=सखेऽर्पय॥

६५ अंत्य और आद्य स्वर के संयोग से जो संधि फल होता है वह नीचे के चक्र देखने से ज्ञात होता है। जैसे अंत्य स्वर ई और आदि स्वर ए हो तो दोनों का संधि फल वहां पर देखो जहां ईकार की पांती एकार की पांती से मिल जाती है तो वह सुगमता पूर्वक प्राप्त हो जायगा। इसी रीति स्वर संधि के लिखे हुए जितने नियम हैं वे सब इस चक्र में प्रत्यक्ष देख पड़ेंगे॥

अन्त्य स्वर \ आदि स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ओ	औ
अ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर	अर	ऐ	ऐ	औ	औ
आ	आ	आ	ए	ए	ओ	ओ	अर	अर	ऐ	ऐ	औ	औ
इ	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
ई	य	या	ई	ई	यु	यू	यृ	यॄ	ये	यै	यो	यौ
उ	व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऊ	व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वॄ	वे	वै	वो	वौ
ऋ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ॠ	र	रा	रि	री	रु	रू	ॠ	ॠ	रे	रै	रो	रौ
ए	अय	अया	अयि	अयी	अयु	अयू	अयृ	अयॄ	अये	अयै	अयो	अयौ
ऐ	आय	आया	आयि	आयी	आयु	आयू	आयृ	आयॄ	आये	आयै	आयो	आयौ
ओ	अव	अवा	अवि	अवी	अवु	अवू	अवृ	अवॄ	अवे	अवै	अवो	अवौ
औ	आव	आवा	आवि	आवी	आवु	आवू	आवृ	आवॄ	आवे	आवै	आवो	आवौ

२ व्यंजन संधि

६६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ जो व्यंजन का विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं । संस्कृत में इसका विस्तार ऐसा बढ़ाके किया गया है कि जिसका बोध और स्मरण बड़ी कठिनता से होता है परंतु हिन्दी भाषा में जो थोड़े से कुछ संधि के आवश्यक नियम हैं उन्हें लिखते हैं ॥

६७ यदि ककार से परे घोष अन्तस्थ वा स्वर वर्ण रहै तो प्रायः क के स्थान में ग होगा। जैसे

दिक् + गज = दिग्गज
वाक् + दत्त = वाग्दत्त
दिक् + अम्बर = दिगम्बर
वाक् + ईश = वागीश
धिक् + याचना = धिग्याचना

६८ यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण से परे सानुनासिक वर्ण रहे तो प्रथम वर्ण के स्थान में निज वर्ग का सानुनासिक होगा। यथा

प्राक् + मुख = प्राङ्मुख
वाक् + मय = वाङ्मय
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
उत् + मत्त = उन्मत्त
चित् + मय = चिन्मय

६९ यदि च ट प वर्ण से परे घोष अन्तस्थ वा स्वर वर्ण रहे तो प्रायः च के स्थान में ज और ट के स्थान में ड वा ड़ और प के स्थान में ब हो जाता है। जैसे

अच् + अंत = अजंत
षट् + दर्शन = षड्दर्शन
अप् + भाग = अब्भाग
अप् + जा = अब्जा

७० यदि ह्रस्व स्वर से परे छ वर्ण होवे तो उसे च सहित छ होता है और जो दीर्घ स्वर से परे रहे तो कहीं २। जैसे

परि + छेद = परिच्छेद
अव + छेद = अवच्छेद
वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया
गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

७१ जब त वा द से परे चवर्ग अथवा टवर्ग का प्रथम वा द्वितीय वर्ण हो तो त वा द के स्थान में च वा ट होता है । और चवर्ग वा टवर्ग के तृतीय वा चतुर्थ वर्ण के परे रहते त वा द को ज वा ड हो जाता है परंतु त वा द से जब श परे रहता है तो श को छ और त वा द को च होता है और लकार के परे रहते त वा द को ल हो जाता है । ऐसे ही त वा द से परे जब ह रहता है तो ह वा द को द होकर हकार को धकार होता है । जैसे नीचे चक्र में लिखा है ॥

यदि पूर्व पद के अन्त में पहिली पांती का वर्ण होवे	और पर पद के आदि में दूसरी पांती का वर्ण होवे	तो दोनों मिलकर तीसरी पांती के वर्ण होंगे	उदाहरण	
			असिद्ध संधि	सिद्ध संधि
त वा द	च	च्च	उत् + चारण	=उच्चारण
"	च	च्च	सत् + चिदानन्द	=सच्चिदानन्द
"	ज	ज्ज	सत् + जाति	=सज्जाति
"	ज	ज्ज	उत् + ज्वल	=उज्ज्वल
"	छ	च्छ	उत् + छिन्न	=उच्छिन्न
"	ट	ट्ट	तत् + टीका	=तट्टीका
"	ल	ल्ल	उत् + लङ्घन	=उल्लङ्घन
"	श	च्छ	सत् + शास्त्र	=सच्छास्त्र
"	श	च्छ	उत् + शिष्ट	=उच्छिष्ट
"	ह	द्ध	उत् + हार	=उद्धार
"	ह	द्ध	तत् + हित	=तद्धित

७२ यदि त से परे ग घ द ध ब भ य र व अथवा स्वर वर्ण रहे तो त के स्थान में द होगा । और जो द से परे इन में से कोई वर्ण आवे तो कुछ विकार न होगा । यथा

पशुवत् + गामी = पशुवद्गामी
उत् + घाटन = उद्घाटन
महत् + धनुष = महद्धनुष
भविष्यत् + वाणी = भविष्यद्वाणी
सत् + वंश = सद्वंश
सत् + आनन्द = सदानन्द
उत् + अय = उदय
सत् + आचार = सदाचार
जगत् + इन्द्र = जगदिन्द्र
जगत् + ईश = जगदीश
सत् + उत्तर = सदुत्तर
महत् + ओज = महदोज
महत् + औषध = महदौषध

७३ अनुस्वार से परे जब अन्तस्थ वा ऊष्म वर्ण रहता है तो अनुस्वार का कुछ विकार नहीं होता । यथा।

सं + यम = संयम
सं + वाद = संवाद
सं + लय = संलय
सं + हार = संहार

७४ यदि अन्तस्थ और ऊष्म को छोड़कर किसी वर्ग का वर्ण अनुस्वार से परे रहे तो अनुस्वार को उसी वर्ग का सानुनासिक वर्ण हो जाता है । जैसे

अहं + कार = अहङ्कार
सं + गम = सङ्गम
किं + चित = किञ्चित
सं + चय = सञ्चय
सं + तोष = सन्तोष
सं + ताप = सन्ताप
सं + पत = सम्पत

सं + बन्ध = सम्बन्ध

सं + बुद्धि = सम्बुद्धि

सं + भव = सम्भव

७५ अनुस्वार से परे स्वर वर्ण रहे तो म हो जायगा। जैसे

सं + आचार = समाचार

सं + उदाय = समुदाय

सं + ऋद्धि = समृद्धि

३ विसर्गसंधि ॥

७६ व्यंजन अथवा स्वर के साथ जो विसर्ग का विकार होता है उसे विसर्गसंधि कहते हैं ॥

७७ यदि इकार उकार पूर्वक विसर्ग से परे क ख वा प फ रहे तो विसर्ग को मूर्द्धन्य ष् प्रायः हो जाता है। और स्थानों में विसर्ग ही बना रहता है। यथा

निः + कारण = निष्कारण

निः + कपट = निष्कपट

निः + पाप = निष्पाप

निः + पत्ति = निष्पत्ति

निः + फल = निष्फल

अन्तः + करण = अन्तःकरण

७८ च छ विसर्ग से परे रहे तो विसर्ग को श और ट ठ परे होवे तो ष और त थ परे रहे तो स हो जाता है। यथा

निः + चल = निश्चल

निः + चिन्त = निश्चिन्त

निः + छल = निश्छल

धनुः + टङ्कार = धनुष्टङ्कार

निः + तार = निस्तार

७९ यदि विसर्ग से परे ग घ ज झ ड ढ द ध ब भ ङ ञ ण न म य र ल व ह होवे तो विसर्ग को ओ हो जाता है। और स्वरों में से

ह्रस्व अकार हो तो वह ओकार में मिल जाता है और उसके पह-चानने के लिये ऽ ऐसा चिन्ह (अर्धाकार) कर देते हैं। जैसे

मनः + गत = मनोगत
मनः + भाव = मनोभाव
मनः + ज्ञ = मनोज्ञ
मनः + योग = मनोयोग
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + नीत = मनोनीत
तेजः + मय = तेजोमय
मनः + हर = मनोहर
मनः + अनवधानता = मनोऽनवधानता

८० यदि विसर्ग के पूर्व अ आ छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और विसर्ग से परे ऊपर के लिखे हुए अक्षर वा स्वर वर्ण रहे तो विसर्ग के स्थान में र हो जाता है। जैसे

निः + गुण = निर्गुण
निः + विन = निर्विन
निः + जल = निर्जल
निः + झर = निर्झर
बहिः + देश = बहिर्देश
निः + धन = निर्धन
निः + बल = निर्बल
निः + भय = निर्भय
निः + नाथ = निर्नाथ
निः + मल = निर्मल
निः + युक्ति = निर्युक्ति
निः + वन = निर्वन
निः + विकार = निर्विकार

निः + हस्त = निर्हस्त
निः + अर्थ = निरर्थ
निः + आधार = निराधार
निः + इच्छा = निरिच्छा
निः + उपाय = निरुपाय
निः + औषध = निरौषध

८१ यदि विसर्ग के पूर्व ह्रस्व और दीर्घ अकार को छोड़कर कोई दूसरा स्वर होवे और विसर्ग से परे रकार होवे तो विसर्ग का लोप करके पूर्व स्वर को दीर्घ कर देते हैं। यथा

निः + रस = नीरस
निः + रोग = नीरोग
निः + रन्ध्र = नीरन्ध्र
निः + रेफ = नीरेफ

इति संधिप्रकरण ॥

अथ तृतीय अध्याय ॥

शब्द साधन ।

८२ कह आये हैं कि शब्दसाधन उसे कहते हैं जिस में शब्दों के भेद अवस्था और व्युत्पत्ति का वर्णन होते हैं ॥

८३ कान से जो सुनाई देवे उसे शब्द कहते हैं परंतु व्याकरण में केवल उन शब्दों का विचार किया जाता है जिनका कुछ अर्थ होता है। अर्थबोधक शब्द तीन प्रकार के होते हैं अर्थात संज्ञा क्रिया और अव्यय ॥

८४ संज्ञा वस्तु के नाम को कहते हैं। जैसे भारतवर्ष पृथिवी के एक खण्ड का नाम है पीपल एक पेड़ का नाम है भलाई एक गुण का नाम है इत्यादि ॥

८५ क्रिया का लक्षण यह है कि उसका मुख्य अर्थ करना है और वह काल पुरुष और बचन से सम्बन्ध नित्य रखती है। जैसे मारा था जाते हैं पढ़ सकेंगी इत्यादि ॥

८६ अव्यय उसे कहते हैं जिसमें लिङ्ग संख्या और कारक न हों अर्थात इनके कारण जिसके स्वरूप में कुछ विकार न दिखाई देवे। जैसे परंतु यद्यपि तथापि फिर जब तब कब इत्यादि ॥

८७ पहिले संज्ञा तीन प्रकार की होती है अर्थात रूढ़ि यौगिक और योगरूढ़ि ॥

८८ रूढ़ि संज्ञा उसे कहते हैं जिसका कोई खण्ड सार्थक न हो सके। जैसे घोड़ा कोड़ा हाथी पोथी इत्यादि। घोड़ा शब्द में एक खण्ड घो और दूसरा ड़ा हुआ परंतु दोनों निरर्थक हैं इसलिये यह संज्ञा रूढ़ि कहाती है ॥

८९ जो दो शब्दों के योग से बनी हो अथवा शब्द और प्रत्यय मिलकर बने उसे यौगिक संज्ञा कहते हैं। जैसे बालबोध कालज्ञान नर-मेध चीत्रधारी थलचारी बोलनेहारा कारक जापक पाठक इत्यादि ॥

९० योगरूढ़ि संज्ञा वह कहाती है जो स्वरूप में यौगिक संज्ञा के समान होती पर अपने अर्थ में इतनी विशेषता रखती है कि अवय-वार्थ को छोड़ संकेतितार्थ का प्रकाश करती है। जैसे पीताम्बर पङ्कज गिरिधारी लम्बोदर हनुमान गणेश इत्यादि ॥

तात्पर्य्य यह है कि पीत शब्द का अर्थ पीला है और अम्बर शब्द का अर्थ कपड़ा है परंतु जितने पीत वस्त्र पहिननेवाले हैं उन्हें छोड़कर विष्णु रूपी विशेष अर्थ का प्रकाश करता है इसलिये यह पद योग-रूढ़ि है ॥

९१ फिर संज्ञा के पांच भेद और भी हैं। जातिवाचक व्यक्तिवाचक गुणवाचक भाववाचक और सर्वनाम ॥

९२ जातिवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके अर्थ से वैसे रूप भर का ज्ञान हो। जैसे मनुष्य स्त्री घोड़ा बैल वृक्ष पत्थर पोथी कपड़ा आदि। कहा है कि मनुष्य अमर है इस वाक्य में मनुष्य शब्द जातिवाचक है

इस कारण कि उस से किसी विशेष मनुष्य का बोध नहीं परंतु मनुष्यगण अर्थात मनुष्य भर का बोध होता है* ॥

९३ व्यक्तिवाचक मनुष्य देश नगर नदी पर्वत आदि के मुख्य नाम को कहते हैं। जैसे चण्डीदत्त बिश्वेश्वरप्रसाद भरतवर्ष काशी गंगा हिमालय बृन्दावन इत्यादि ॥

९४ गुणवाचक संज्ञा वह कहाती है जो विभेदक होती है इस कारण उसे विशेषण भी कहते हैं। वाक्य में गुणवाचक संज्ञा अकेली नहीं आती परंतु यहां उदाहरण के लिये उसे अकेली लिखते हैं। जैसे पीला नीला टेढ़ा सीधा ऊंचा नीचा उत्तम मध्यम ज्ञानी मानी इत्यादि ॥

९५ भाववाचक संज्ञा का लक्षण यह है कि जिसके कहने से पदार्थ का धर्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा उस से किसी व्यापार का बोध हो। जैसे ऊंचाई चौड़ाई समझ बूझ दौड़ धूप लेन देन छीन छोर बोल चाल इत्यादि ॥

९६ सर्वनाम संज्ञा उसे कहते हैं जो और संज्ञाओं के बदले में कही जाय। जैसे यह वह आन और जो सो कोई कौन कई आप मैं तू इत्यादि। सर्वनाम संज्ञा का प्रयोजन यह है कि किसी वस्तु का नाम कहकर यदि फिर उसके विषय कुछ चर्चा करने की आवश्यकता हो तो उसके बदले में सर्वनाम आता है और सर्वनाम से पूर्वोक्त नाम बोधित हो जाता है। सर्वनामों से यह फल निकलता है कि बारम्बार किसी संज्ञा को कहना नहीं पड़ता। इस से न तो विशेष बात बढ़ती है और

---

* विद्यार्थी को चाहिये कि जातिवाचक का भेद इस रीति से समझ लेवे कि रामायण पोथी है भागवत भी पोथी है हितोपदेश यह भी पोथी का नाम है तो कई पदार्थ हैं जो अनेक विषय में भिन्न २ हैं परंतु एक मुख्य विषय में समान हैं इस समानता के कारण उन सब पदार्थों की एक ही जाति मानी जाती है और एक ही जातिवाचक नाम अर्थात पोथी उनको दिया गया है। रामायण के गुण भागवत वा हितोपदेश में नहीं हैं और रामायण नाम उन से कहा नहीं जाता परंतु पोथी के गुण रामायण में भागवत में और हितोपदेश में रहते हैं इस कारण पोथी यह जातिवाचक नाम तीनों से लगता है ॥

न वाक्य में नीरसता होती है। सर्वनामों के रूपों में लिङ्ग के कारण कुछ विकार नहीं होता है जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाता है। सर्वनाम संज्ञा के दो धर्म हैं एक तो पुरुषवाचक जैसे मैं तू वह और दूसरा गणीभूत जैसे कौन कोई आन और इत्यादि॥

लिङ्ग के विषय में॥

९७ हिन्दी भाषा में दो ही लिङ्ग होते हैं एक पुल्लिङ्ग दूसरा स्त्रीलिङ्ग। संस्कृत और आन भाषाओं में तीन लिङ्ग होते हैं परंतु हिन्दी में नपुंसक लिङ्ग नहीं है यहां सब सजीव और निर्जीव पदार्थों के लिङ्ग व्यवहार के अनुसार पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग में समाप्त हो जाते हैं॥

९८ उन प्राणिवाचक शब्दों के लिङ्ग जान्ने में कुछ कठिनता नहीं पड़ती जिनके अर्थ से मिथुन अर्थात जोड़े का ज्ञान होता है क्योंकि पुरुषबोधक संज्ञा को पुल्लिङ्ग और स्त्रीबोधक संज्ञा को स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे नर लड़का घोड़ा हाथी इत्यादि पुल्लिङ्ग और नारी लड़की घोड़ी हथिनी इत्यादि स्त्रीलिङ्ग कहाती हैं॥

९९ हिन्दी के सब शब्दों का अधिक भाग संस्कृत से निकला हुआ है और संस्कृत में जिन शब्दों का पुल्लिङ्ग वा नपुंसकलिङ्ग होता है वे सब हिन्दी में प्रायः पुल्लिङ्ग समझे जाते हैं। और जो शब्द संस्कृत में स्त्रीलिङ्ग होते हैं वे हिन्दी में भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग रहते हैं। जैसे देश सूर्य्य जल रव दुःख इन में से जल रव दुःख संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग हैं परंतु हिन्दी में पुल्लिङ्ग हैं और भूमि बुद्धि सभा लज्जा संस्कृत में और हिन्दी में भी स्त्रीलिङ्ग हैं॥

१०० हिन्दी में जिन अप्राणिवाचक शब्दों के अंत में अकार वा आकार रहता है और उनका उपान्त्य वर्ण त नहीं होता है वे प्रायः पुल्लिङ्ग समझे जाते हैं। जैसे वर्णन ज्ञान पाप बच्चा कपड़ा पंखा॥

१०१ जिन निर्जीव शब्दों के अंत में ई वा त होता है वे प्रायः स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे मारी बोली चिट्ठी बात रात इत्यादि॥

१०२ जिन भाववाचक शब्दों के अंत में आव त्व पन वा पा हो वे सब के सब पुल्लिङ्ग हैं। जैसे चढ़ाव बिकाव मिलाव मनुष्यत्व स्त्रीत्व पशुत्व लड़कपन सीधापन बुढ़ापा इत्यादि ॥

१०३ जिन भाववाचक शब्दों के अंत में आई ता वट वा हट हो वे स्त्रीलिङ्ग हैं। जैसे अधिकाई चतुराई भलाई उत्तमता कोमलता मित्रता बनावट सजावट चिकनाहट चिल्लाहट इत्यादि ॥

१०४ सामासिक शब्दों का लिङ्ग अन्त्य शब्द के लिङ्ग के अनुसार होता है। जैसे स्त्रीलिङ्ग यह शब्द पुल्लिङ्ग है इस कारण कि लिङ्ग शब्द पुल्लिङ्ग है वैसे ही दयासागर पुल्लिङ्ग है इस कारण कि यद्यपि दया शब्द स्त्रीलिङ्ग है तथापि अन्त्य शब्द अर्थात सागर पुल्लिङ्ग है ॥

अथ स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय ॥

१०५ आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त्य आकार को प्रायः ईकार करने से स्त्रीलिङ्ग बन जाता है। कहीं २ आकार के स्थान में इया हो जाता है और यदि अंत्याक्षर द्वित्व हो तो एक व्यंजन का लोप हो जाता है। यथा

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
गधा	गधी
घोड़ा	घोड़ी
चेला	चेली
भांजा	भांजी
कुत्ता	कुत्ती वा कुतिया

१०६ हलन्त* पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त्य हल से ई को मिला करके स्त्रीलिङ्ग बना लो। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
अहीर	अहीरी
तरुन	तरुनी

---

* चेत रखना चाहिये कि हिन्दी भाषा में अकारान्त शब्द प्रायः हलन्त के समान उच्चरित होते हैं ॥

दास	दासी
देव	देवी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी

१०७ व्यापार करनेवाले पुल्लिङ्ग शब्दों से इन करके जो शब्द के अंत में स्वर हो तो उसका लोप कर देते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ग्वाला	ग्वालिन
तेली	तेलिन
वैपारी	वैपारिन
लोहार	लोहारिन
सोनार	सोनारिन

१०८ बहुतेरे पुल्लिङ्ग शब्दों के आगे नी लगाने से स्त्रीलिङ्ग हो जाता है। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ऊंट	ऊंटनी
बाघ	बाघनी
मोर	मोरनी
सिंह	सिंहनी
अहि	अहिनी

१०९ उपनामवाची पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अन्त्य स्वर को आइन आदेश कर देते हैं और जो आदि अक्षर का स्वर आ होवे तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
ओझा	ओझाइन
चौबे	चौबाइन
दुबे	दुबाइन
तिवारी	तिवराइन
पंडा	पंडाइन
पांड़े	पड़ाइन

मिसिर	मिसिराइन
ठाकुर	ठकुराइन
बाबू	बबुआइन

११० कई एक पुल्लिङ्ग शब्दों के स्त्रीलिङ्ग शब्द दूसरे ही होते हैं। जैसे

पुल्लिङ्ग।	स्त्रीलिङ्ग।
पिता	माता
पुरुष	स्त्री
राजा	रानी
बैल	गाय
भाई	बहिन

वचन के विषय में।

१११ व्याकरण में वचन संख्या को कहते हैं और वे भाषा में दो ही हैं एकवचन और बहुवचन। जिस शब्द के रूप से एक पदार्थ का बोध होता है उसे एकवचन और जिस से एक से अधिक समझा जाय उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे लड़की गाती है यह एकवचन है और लड़कियां गाती हैं इसे बहुवचन कहते हैं॥

११२ संज्ञा में और क्रिया में एकबचन से बहुवचन बनाने की रीति आगे लिखी जायगी॥ बहुत से स्थानों में एकवचन और बहुवचन के रूपों में कुछ भेद नहीं होता इस कारण अनेक के बोध के निमित्त गण जाति लोग इत्यादि लगाते हैं। जैसे ग्रहगण देवगण मनुष्यजाति पशुजाति पण्डित लोग राजा लोग इत्यादि॥

कारक के विषय में।

११३ कारक उसे कहते हैं कि जिसके द्वारा वाक्य में विशेष करके क्रिया के साथ अथवा दूसरे शब्दों के संग संज्ञा का सम्बन्ध ठीक २ प्रकाशित होता है॥

५१४ हिन्दी भाषा में कारक आठ होते हैं अर्थात

१	कर्त्ता	५	अपादान
२	कर्म	६	सम्बन्ध
३	करण	७	अधिकरण
४	सम्प्रदान	८	सम्बोधन .

१ कर्त्ता कारक उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार को करे। भाषा में उसका कोई विशेष चिन्ह नहीं है परंतु सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के आगे अपूर्ण भूत को छोड़के शेष भूतकालों में ने आता है। जैसे लड़का पढ़ता है पण्डित पढ़ाता था पिता ने सिखाया है * ॥

२ कर्म उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल रहता है उसका चिन्ह को है। जैसे मैं पुस्तक को देखता हूं उसने पण्डित को बुलाया ॥

३ करण उसे कहते हैं जिसके द्वारा कर्त्ता व्यापार को सिद्ध करे उसका चिन्ह से है। जैसे हाथ से उठाता है पांव से चलता है ॥

४ सम्प्रदान वह कहाता है जिसके लिये कर्त्ता व्यापार को करता है उसका चिन्ह को है। जैसे गुरु ने शिष्य को पोथी दी ॥

५ क्रिया के विभाग की अवधि को अपादान कहते हैं उसका चिन्ह से है। जैसे वृक्ष से पत्ते गिरते हैं वह मनुष्य लोटे से जल लेता है ॥

६ सम्बन्ध कारक का लक्षण यह है जिस से स्वत्व सम्बन्ध आदि समझा जाय उसके चिन्ह ये हैं का के की। जैसे राजा का घोड़ा प्रजा के घर मन की शक्ति ॥

७ कर्त्ता और कर्म के द्वारा जो क्रिया का आधार उसे अधिकरण कहते हैं उसके चिन्ह में पै पर हैं। जैसे वह अपने घर में रहता है वे आसन पर बैठते हैं ॥

---

* सात सकर्मक क्रिया हैं अर्थात बकना बोलना भूलना जनना लाना लेजाना और खाजाना जिनके साथ भूतकाल में कर्त्ता के आगे ने नहीं आता है। लाना (ले+आना=लाना) लेजाना और खाजाना संयुक्त क्रिया हैं उनका पूर्वार्द्ध सकर्मक और उत्तरार्द्ध अकर्मक है इस से यह नियम निकलता है कि जब संयुक्त सकर्मक क्रिया का उत्तरार्द्ध अकर्मक होता है तब उस क्रिया के भूतकाल में कर्त्ता के साथ ने चिन्ह नहीं होता ॥

८ सम्बोधन उसे कहते हैं जिस से कोई किसी को चिताकर अथवा पुकारकर अपने सन्मुख कराता है उसके चिन्ह हे हो अरे इत्यादि हैं। जैसे हे महाराज रामदयाल हो अरे लड़के सुन ॥

११५ ऊपर की रीति से प्रत्येक संज्ञा की आठ अवस्था हो सकती हैं उन अवस्थाओं की सूचक प्रत्ययों को विभक्तियां कहते हैं ॥

कर्त्ता आदि की सूचक विभक्तियां।

कारक।	विभक्तियां।	कारक।	विभक्तियां।
कर्त्ता	० वा ने	अपादान	से
कर्म	को	सम्बन्ध	का के की
करण	से	अधिकरण	में पै पर
सम्प्रदान	को	सम्बोधन	हे अरे हो

११६ विभक्तियां स्वयं तो निरर्थक हैं परंतु संज्ञा के अंत में जब आती हैं तो सार्थक हो जाती हैं और यद्यपि इन विभक्तियों में कुछ विकार नहीं होता तो भी संज्ञा के अंत में इनके लगाने से बहुधा विकार हुआ करता है ॥

११७ इसका भी स्मरण करना चाहिये कि कर्त्ता और सम्बोधन को छोड़ करके शेष कारकों के बहुवचन में शब्द और विभक्ति के मध्य में बहुवचन का चिन्ह ओं लगाया जाता है परंतु सम्बोधन के बहुवचन में निरनुनासिक ओ होता है ॥

अथ संज्ञा का रूपकरण।

११८ कह आये हैं कि संज्ञा दो प्रकार की होती हैं एक पुल्लिङ्ग दूसरी स्त्रीलिङ्ग फिर प्रत्येक लिङ्ग की संज्ञा भी दो प्रकार की होती हैं एक तो वे जिनका उच्चारण हलन्तसा हुआ करता है दूसरी वे जिनका उच्चारण स्वरान्त होता है ॥

११९ संज्ञा की कारक रचना अनेक रीति से होती है इस कारण सुभीते के निमित्त जितनी संज्ञा समान रीति से अपने कारकों को रचती हैं उन सभों को एक ही भाग में कर लेते हैं। हिन्दी की सब संज्ञा चार भाग में आ सकती हैं। यथा

१२० पहिले भाग में वे सब संज्ञा आती हैं जिनके एकवचन और बहुवचन में विभक्ति के आने से संज्ञा का कुछ विकार नहीं होता है परंतु बहुवचन में कर्त्ता और सम्बोधन को छोड़कर शेष कारकों में शब्द के आगे ओं लगाकर विभक्ति लाते हैं ॥

१२१ दूसरे भाग की वे सब संज्ञा हैं जिनके एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के कारण कुछ बदलता नहीं पर बहुवचन के कर्म आदि कारकों में वा बहुवचन के चिन्ह ओं का वा अंत्य दीर्घ स्वर का विकार होता है ॥

१२२ तीसरे भाग में जो संज्ञा आती हैं उनका यह लक्षण है कि केवल उन्हीं में कर्त्ता कारक के बहुवचन का विकार होता है ॥

१२३ चौथे भाग में वे सब संज्ञा आती हैं जिनके प्रत्येक कारक के दोनों वचनों में विभक्ति के आने से संज्ञा कुछ बदल जाती है ॥

पहिला भाग ।

१२४ इस भाग में ह्रस्व उकारान्त एकारान्त ओकारान्त और हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द होते हैं। विभक्ति के आने से उनका कुछ विकार नहीं होता परंतु कर्त्ता और सम्बोधन के बहुवचन को छोड़कर शेष कारकों में शब्द से आगे ओं लगाकर विभक्ति लाते हैं। उदाहरण नीचे देते हैं। यथा

१२५ ह्रस्व उकारान्त पुल्लिङ्ग बन्धु शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	बन्धु वा बन्धु ने*	बन्धु वा बन्धुओं ने*

* चेत रखना चाहिये कि जिस कर्त्ता कारक के साथ ने चिन्ह होता है वह अपूर्णभूत को छोड़के केवल सकर्मक धातु की भूतकालिक क्रिया के साथ आ सकता है। और यदि कर्म कारक का चिन्ह लुप्त हो तो क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के अनुसार होंगे जैसे पण्डित ने पोथी लिखी महाराज ने अपने घोड़े भेजे। परंतु जो कर्म अपने चिन्ह को के साथ आवे तो क्रिया सामान्य पुल्लिङ्ग अन्यपुरुष एकवचन में होता है। जैसे मैंने रामायण को पढ़ा है रानी ने सहेलियों को बुलाया इत्यादि। इस प्रयोग का वर्णन आगे लिखा जायगा ॥

कर्म	बन्धु को	बन्धुओं को
करण	बन्धु से	बन्धुओं से
सम्प्रदान	बन्धु को	बन्धुओं को
अपादान	बन्धु से	बन्धुओं से
सम्बन्ध	बन्धु का—के—की	बन्धुओं का—के—की
अधिकरण	बन्धु में	बन्धुओं में
सम्बोधन	हे बन्धु	हे बन्धुओ ॥

१२६ ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग रेणु शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	रेणु वा रेणु ने	रेणु वा रेणुओं ने
कर्म	रेणु को	रेणुओं को
करण	रेणु से	रेणुओं से
सम्प्रदान	रेणु को	रेणुओं को
अपादान	रेणु से	रेणुओं से
सम्बन्ध	रेणु का—के—की	रेणुओं का—के—की
अधिकरण	रेणु में	रेणुओं में
सम्बोधन	हे रेणु	हे रेणुओ ॥

१२७ एकारान्त पुल्लिङ्ग दुबे शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	दुबे वा दुबे ने	दुबे वा दुबेओं ने
कर्म	दुबे को	दुबेओं को
करण	दुबे से	दुबेओं से
सम्प्रदान	दुबे को	दुबेओं को
अपादान	दुबे से	दुबेओं से
सम्बन्ध	दुबे का—के—की	दुबेओं का—के—की
अधिकरण	दुबे में	दुबेओं में
सम्बोधन	हे दुबे	हे दुबेओ ॥

१२८ ओकारान्त पुल्लिङ्ग कोदो शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	कोदो वा कोदो ने	कोदो वा कोदोओं ने
कर्म	कोदो को	कोदोओं को
करण	कोदो से	कोदोओं से
सम्प्रदान	कोदो को	कोदोओं को
अपादान	कोदो से	कोदोओं से
सम्बन्ध	कोदो का—के—की	कोदोओं का—के—की
अधिकरण	कोदो में	कोदोओं में
सम्बोधन	हे कोदो	हे कोदोओ ॥

१२९ ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरसों शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	सरसों वा सरसों ने	सरसों वा सरसोंओं ने
कर्म	सरसों को	सरसोंओं को
करण	सरसों से	सरसोंओं से
सम्प्रदान	सरसों को	सरसोंओं को
अपादान	सरसों से	सरसोंओं से
सम्बन्ध	सरसों का—के—की	सरसोंओं का—के—की
अधिकरण	सरसों में	सरसोंओं में
सम्बोधन	हे सरसों	हे सरसोंओ ॥

१३० हलन्त पुल्लिङ्ग जल शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	जल वा जल ने	जल वा जलों ने
कर्म	जल को	जलों को
करण	जल से	जलों से
सम्प्रदान	जल को	जलों को
अपादान	जल से	जलों से

सम्बन्ध	जल का—के—की	जलों का—के—की
अधिकरण	जल में	जलों में
सम्बोधन	हे जल	हे जलो ॥

१३१ हलन्त पुल्लिङ्ग गांव शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	गांव वा गांव ने	गांव वा गांवों ने
कर्म	गांव को	गांवों को
करण	गांव से	गांवों से
सम्प्रदान	गांव को	गांवों को
अपादान	गांव से	गांवों से
सम्बन्ध	गांव का—के—की	गांवों का—के—की
अधिकरण	गांव में	गांवों में
सम्बोधन	हे गांव	हे गांवो ॥

दूसरा भाग ।

१३२ इस भाग में ह्रस्व वा दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द और दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द आते हैं। एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के कारण कुछ बदलता नहीं पर कर्म आदि कारकों में इकारान्त शब्द से आगे ओं नहीं परंतु यों लगाकर विभक्ति लाते हैं और कदाचित् अंत्यस्वर दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। उनके उदाहरण नीचे लिखते हैं। यथा

१३३ ह्रस्व इकारान्त पुल्लिङ्ग पति शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	पति वा पति ने	पति वा पतियों ने
कर्म	पति को	पतियों को
करण	पति से	पतियों से
सम्प्रदान	पति को	पतियों को
अपादान	पति से	पतियों से
सम्बन्ध	पति का—के—की	पतियों का—के—की

अधिकरण	पति में	पतियों में
सम्बोधन	हे पति	हे पतियो ॥

१३४ दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग धोबी शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	धोबी वा धोबी ने	धोबी वा धोबियों ने
कर्म	धोबी को	धोबियों को
करण	धोबी से	धोबियों से
समादान	धोबी को	धोबियों को
अपादान	धोबी से	धोबियों से
सम्बन्ध	धोबी का—के—की	धोबियों का—के—की
अधिकरण	धोबी में	धोबियों में
सम्बोधन	हे धोबी	हे धोबियो ॥

१३५ दीर्घ ऊकारान्त पुल्लिङ्ग डाकू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	डाकू वा डाकू ने	डाकू वा डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकुओं से
सम्प्रदान	डाकू को	डाकुओं को
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का—के—की	डाकुओं का—के—की
अधिकरण	डाकू में	डाकुओं में
सम्बोधन	हे डाकू	हे डाकुओ ॥

१३६ दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	बहू वा बहू ने	बहू वा बहुओं ने
कर्म	बहू को	बहुओं को
करण	बहू से	बहुओं से
सम्प्रदान	बहू को	बहुओं को
अपादान	बहू से	बहुओं से

सम्बन्ध	बहू का-के-की	बहुओं का-के-की
अधिकरण	बहू में	बहुओं में
सम्बोधन	हे बहू	हे बहुओ ॥

तीसरा भाग।

१३७ इस भाग में पुल्लिङ्ग शब्द नहीं हैं पर आकारान्त ह्रस्व और दीर्घ इकारान्त और हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द आते हैं। आकारान्तस्त्रीलिङ्ग शब्दके एकबचनमें विकार नहीं होता बहुवचन मेंभी केवलइतनाविशेष है कि कर्ता में शब्द के अंत्यस्वर को सानुनासिक कर देते हैं। ह्रस्व और दीर्घ इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप एकवचन में ज्यों के त्यों बने रहते हैं और बहुवचन में वे पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्दों के अनुसार अपने कारकों को रचते हैं केवल कर्ता के बहुवचन में शब्द से आगे यां होता है और यदि दीर्घ ईकारान्त हो तो उसे ह्रस्व करदेते हैं। हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द की इतनी विशेषता है कि कर्ताके बहुवचन में शब्द से आगे एं लगा देते हैं। इनके उदाहरण नीचे लिखेहैं। यथा

१३८ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग खटिया शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	खटिया वा खटिया ने	खटियांवा खटियाओं ने
कर्म	खटिया को	खटियाओं को
करण	खटिया से	खटियाओं से
सम्प्रदान	खटिया को	खटियाओं को
अपादान	खटिया से	खटियाओं से
सम्बन्ध	खटिया का-के-की	खटियाओं का-के-की
अधिकरण	खटिया में	खटियाओं में
सम्बोधन	हे खटिया	हे खटियाओ ॥

१३९ ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग तिथि शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्ता	तिथि वा तिथि ने	तिथियां वा तिथियों ने
कर्म	तिथि को	तिथियों को
करण	तिथि से	तिथियों से

सम्प्रदान	तिथि को	तिथियों को
अपादान	तिथि से	तिथियों से
सम्बन्ध	तिथि का-के-की	तिथियों का—के—की
अधिकरण	तिथि में	तिथियों में
सम्बोधन	हे तिथि	हे तिथियो ॥

१४० दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग बकरी शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	बकरी वा बकरी ने	बकरियां वा बकरियों ने
कर्म	बकरी को	बकरियों को
करण	बकरी से	बकरियों से
सम्प्रदान	बकरी को	बकरियों को
अपादान	बकरी से	बकरियों से
सम्बन्ध	बकरी का—के—की	बकरियों का—के—की
अधिकरण	बकरी में	बकरियों में
सम्बोधन	हे बकरी	हे बकरियो ॥

१४१ हलन्त स्त्रीलिङ्ग घास शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	घास वा घास ने	घासें वा घासों ने
कर्म	घास को	घासों को
करण	घास से	घासों से
सम्प्रदान	घास को	घासों को
अपादान	घास से	घासों से
सम्बन्ध	घास का—के—की	घासों का—के—की
अधिकरण	घास में	घासों में
सम्बोधन	हे घास	हे घासो ॥

चौथा भाग।

१४२ इस भाग में आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द होते हैं । एकवचन में और कर्त्ता के बहुवचन में विभक्ति के आने से आ को ए होजाता

है और शेष बहुवचन में आ को ओं आदेश करके फिर विभक्ति लाते हैं। यथा

१४३ आकारान्त पुल्लिङ्ग घोड़ा शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	घोड़ा वा घोड़े ने	घोड़े वा घोड़ों ने
कर्म	घोड़े को	घोड़ों को
करण	घोड़े से	घोड़ों से
सम्प्रदान	घोड़े को	घोड़ों को
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से
सम्बन्ध	घोड़े का—के—की	घोड़ों का—के—की
अधिकरण	घोड़े में	घोड़ों में
सम्बोधन	हे घोड़े	हे घोड़ो॥

१४४ विशेषता यह है कि यदि संस्कृत आकारान्त पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग शब्द हो जैसे आत्मा कर्त्ता युवा राजा वक्ता श्रोता क्रिया संज्ञा आदि तो उसके रूपों में कुछ विकार नहीं होता परंतु बहुवचन में अंत्य आकार से परे ओं कर देते हैं। जैसे

संस्कृत आकारान्त राजा शब्द।

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	राजा वा राजा ने	राजा वा राजाओं ने
कर्म	राजा को	राजाओं को
करण	राजा से	राजाओं से
सम्प्रदान	राजा को	राजाओं को
अपादान	राजा से	राजाओं से
सम्बन्ध	राजा का—के—की	राजाओं का—के—की
अधिकरण	राजा में	राजाओं में
सम्बोधन	हे राजा	हे राजाओ॥

१४५ यदि व्यक्तिवाचक वा सम्बन्धवाचक आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द हो जैसे मन्ना मोहना रामा काका दादा पिता आदि तो उसकी कारकरचना हिन्दी अथवा संस्कृत आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के समान दोनों रीति पर हुआ करती है। जैसे

१४६ व्यक्तिवाचक आकारान्त पुल्लिङ्ग दादा शब्द।

कारक।	एकवचन।		
कर्त्ता	दादा वा दादा ने	अथवा	दादा वा दादा ने
कर्म	दादा को	,,	दादे को
करण	दादा से	,,	दादे से
संप्रदान	दादा को	,,	दादे को
अपादान	दादा से	,,	दादे से
सम्बंध	दादा का—के—की	,,	दादे का--के—की
अधिकरण	दादा में	,,	दादे में
सम्बोधन	हे दादा	,,	हे दादे॥
	बहुवचन।		
कर्त्ता	दादा वा दादाओं ने	अथवा	दादे वा दादों ने
कर्म	दादाओं को	,,	दादों को
करण	दादाओं से	,,	दादों से
संप्रदान	दादाओं को	,,	दादों को
अपादान	दादाओं से	,,	दादों से
सम्बंध	दादाओं का—के—की	,,	दादों का—के—की
अधिकरण	हे दादाओ	,,	हे दादो॥

गुणवाचक संज्ञा के विषय में॥

१४७ कह आये हैं कि गुणवाचक संज्ञा विभेदक है अर्थात् दूसरी संज्ञाकी विशेषताका प्रकाश करती है इसलिये वह विशेषण कहाता है और जिसकी विशेषताको जनाती है वह विशेष्य कहाता है। जैसे निर्मल जल इसमें निर्मल विशेषण और जल विशेष्य है ऐसाही सर्वत्र जानो॥

१४८ विशेषणके लिङ्ग वचन और कारक विशेष्य निघ्न हैं अर्थात् विशेष्य को जो लिङ्ग आदि हो वेही लिङ्ग आदि विशेषण के होंगे॥

१४९ हिन्दीमें अकारान्तको छोड़कर गुणवाचकमें लिंग वचन वा कारक के कारण कुछ विकार नहीं होता। जैसे सुन्दर पुरुष सुन्दर स्त्री सुन्दर लड़के कोमल पुष्प कोमलपत्ते कोमल डालियों पर॥

१५० आकारान्त विशेषण में विकार होने के तीन नियम होते हैं जिन्हें चेत रखना चाहिये। यथा

१ पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो कर्त्ता और कर्म के एकवचन में जब उनका चिन्ह नहीं रहता तब विशेषण का कुछ विकार नहीं होता। जैसे ऊंचा पेड़ ऊंचा पहाड़ देखो पीला वस्त्र पीला वस्त्र दो॥

२ पुल्लिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो शेष कारकों के एक वचन में और बहुवचन में विशेषण के अन्त्य आ को ए हो जाता है। जैसे बड़े घर का स्वामी आया है वे ऊंचे पर्व्वत पर चढ़ गये हैं सकरे फाटक से कैसे जाऊं अच्छे लड़के भले दासों के लिये॥

३ स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो सब कारकों के दोनों वचनों में विशेषण के अन्त्य आ को ई आदेश कर देते हैं। जैसे वह गोरी लड़की है लम्बी रस्सी लाओ हरी घास में गया है मीठी बातें बोलता है छोटी गैयाओं को दो॥

१५१ यदि संख्यावाचक विशेषण हो और अवधारण की विवक्षा रहे तो उसके अन्त में ओ कहीं सानुनासिक और कहीं निरनुनासिक कर देते हैं। जैसे दोनों जावेंगे चारो लड़के अच्छे हैं। यदि समुदाय से दो तीन आदि व्यक्ति ली जायं तो दो तीन आदि इन रूपों को विभक्ति जोड़ते हैं। जैसे दो को तीन से चार में॥

१५२ एक वस्तु में दूसरी से वा उस जाति की सब वस्तुओं से गुण की अधिकाई वा न्यूनता प्रकाश करने के लिये यह रीति होती है कि विशेषण में कुछ विकार नहीं होता विशेष्य का कर्त्ता कारक आता है और जिस संज्ञा से उपमा दी जाती है उसका अपादान कारक होता है। जैसे यह उस से अच्छा है यमुना गंगा से छोटी है लड़की लड़के से सुन्दर है यह सब से अच्छा है हिमालय सब पर्व्वतों से ऊंचा है॥

यह हिन्दी में साधारण रीति है पर कहीं २ संस्कृत की रीति के अनुसार तर और तम ये प्रत्यय विशेषण को जोड़ते हैं। जैसे कोमल कोमलतर कोमलतम प्रिय प्रियतर प्रियतम शिष्ट शिष्टतर शिष्टतम आदि॥

चौथा अध्याय ॥

सर्वनामों के विषय में ।

१५३ सर्वनाम संज्ञा के लिङ्ग का नियम यह है कि जिनके बदले में सर्वनाम आवे उन शब्दों के लिङ्ग के समान उसका भी लिङ्ग होगा। जैसे पण्डित ने कहा मैं पढ़ाता हूं यहां पण्डित पुल्लिङ्ग है तो मैं भी पुल्लिङ्ग हुआ कन्या कहती है कि मैं जाती हूं यहां कन्या शब्द के स्त्रीलिङ्ग होने के कारण सर्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग है ऐसा ही सर्वत्र जानो॥

१५४ सर्वनाम संज्ञा के कई भेद हैं जैसे पुरुषवाची अनिश्चयवाचक निश्चयवाचक आदरसूचक सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक ॥

१ पुरुषवाची सर्वनाम ॥

१५५ पुरुषवाची सर्वनाम तीन प्रकार के हैं १ उत्तमपुरुष २ मध्यमपुरुष ३ अन्यपुरुष । उत्तमपुरुष सर्वनाम मैं मध्यमपुरुष तू और अन्यपुरुष वह है । मैं बोलनेवाले के बदले तू सुननेवाले के पलटे और जिसकी कथा कही जाती है उसके पर्याय पर अन्य पुरुष आता है। जैसे मैं तुम से उसकी कथा कहता हूं ॥

१५६ उत्तम पुरुष में शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	मैं वा मैं ने	हम वा हम ने वा हमों ने
कर्म	मुझ को मुझे	हम को हमों को वा हमें
करण	मुझ से	हम से वा हमों से
सम्प्रदान	मुझ को मुझे	हम को हमों को वा हमें
अपादान	मुझ से	हम से वा हमों से
सम्बन्ध	मेरा—रे—री	हमारा—रे—री
अधिकरण	मुझ में	हम में वा हमों में ॥

१५७ सम्बन्ध कारक की विभक्ति (रा रे री) केवल उत्तम और मध्यमपुरुष में होती है और ना (ने नी) एक निजवाचक वा आदरसूचक आप शब्द के सम्बन्ध कारक में होता है। इन रूपों का अर्थ और उनकी योजना का (के की) के समान हैं ॥

१५८ मध्यमपुरुष तू शब्द ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	*तू वा तू ने	तुम वा तुम ने वा तुम्हों ने
कर्म	तुझ को वा तुझे	तुमको तुम्हें वा तुम्हों को
करण	तुझ से	तुम से वा तुम्हों से
सम्प्रदान	तुझ को तुझे	तुमको तुम्हें तुम्हों को
अपादान	तुझ से	तुम से वा तुम्हों से
सम्बन्ध	तेरा—रे—री	तुम्हारा—रे—री
अधिकरण	तुझ में	तुम में वा तुम्हों में
सम्बोधन	हे तू	हे तुम ॥

अन्यपुरुष सर्वनाम ।

१५९ अन्यपुरुष सर्वनाम दो प्रकार का है एक निश्चयवाचक और दूसरा अनिश्चयवाचक । निश्चयवाचक भी दो प्रकार का होता है अर्थात् यह और वह निकटवर्त्ती के लिये यह और दूरवर्त्ती के लिये वह है ॥

१६० निश्चयवाचक यह ।

कारक ।	एकवचन ।	बहुवचन ।
कर्त्ता	*यह वा इस ने	ये वा इन ने वा इन्हों ने
कर्म	इस को वा इसे	इन को वा इन्हें वा इन्हों को
करण	इस से	इन से वा इन्हों से
सम्प्रदान	इस को वा इसे	इन को इन्हें वा इन्हों को
अपादान	इस से	इन से वा इन्हों से
सम्बन्ध	इस का—के—की	इन का वा इन्हों का—के—की
अधिकरण	इस में	इन में वा इन्हों में ॥

१६१ निश्चयवाचक वह ।

---

* तू वा तैं और उन वा विन और जो वा जौन यह केवल देश भेद से उच्चारण की विलक्षणता है ॥

कारक।	एक वचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	*वह वा उसने	वे उन ने वा उन्हों ने
कर्म	उसको वा उसे	उनको वा उन्हें वा उन्हों को
करण	उस से	उन से वा उन्हों से
सम्प्रदान	उसको वा उसे	उनको वा उन्हें वा उन्हों को
अपादान	उस से	उन से वा उन्हों से
सम्बन्ध	उस का—के—की	उनका वा उन्हों का—के—की
अधिकरण	उस में	उन में वा उन्हों में ॥

१६२ कर्त्ता कारक के एकवचन में और बहुवचन में ने चिन्ह के साथ उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष का कुछ विकार नहीं होता परंतु अन्यपुरुष यह को इस और ये को इन तथा वह को उस और वे को उन आदेश करते हैं ऐसे ही सब बिभक्तियों के साथ समझो ॥

१६३ यदि उत्तम वा मध्यमपुरुष से परे कोई संज्ञा हो और उस संज्ञा के आगे ने वा का (के की) चिन्ह रहे तो मैं को मुझ तू को तुझ मेरा को मुझ—का और तेरा को तुझ—का आदेश कर देते हैं। जैसे मैंने यह बिना संज्ञा है संज्ञा लगाओ तो मुझ ब्राह्मण ने हुआ। ऐसे ही तुझ निर्बुद्धि ने मुझ कङ्गाल का घर हम लोगों का वस्त्र इत्यादि ॥

१६४ उत्तमपुरुष और मध्यमपुरुष के सम्बन्ध कारक के एकवचन में मैं को मे और तू को ते और बहुवचन में हम को हमा और तुम को तुम्हा आदेश करके सम्बन्ध कारक की बिभक्ति का के की को रा रे री हो जाता है और शेष बिभक्तियों के साथ संयोग होवे तो जैसा ने के साथ कहा है सोई जानो ॥

१६५ इन सर्वनामों के कर्म और सम्प्रदान कारक में दो २ रूप होने से लाभ यह है कि दो को एकट्ठे होकर उच्चारण को बिगाड़ देते हैं इस कारण एक को सहित और एक को रहित रहता है। जैसे मैं इसको तुमको दूंगा यहां मैं इसे तुमको दूंगा ऐसा बोलना चाहिये इत्यादि ॥

१६६ आदर के लिये एक में बहुवचन और बहुत्व के निश्चयार्थ बहुवचन में लोग वा सब लगा देते हैं। जैसे तू क्या कहता है यहां आदर-

*यह और वह इन रूपों को कभी २ बहुवचन में भी योजना करते हैं। जैसे यह दो भाई आपस में नित्य लड़ते हैं ॥

पूर्वक तुम क्या कहते हो ऐसा बोलते हैं और हम सुनते हैं यहां बहुत्व के निश्चयार्थ हम लोग सुनते हैं अथवा हम सब सुनते हैं ऐसा बोलते हैं ॥

१६७ जब अन्यपुरुष के साथ कोई संज्ञा आती है और कारक का चिन्ह उस संज्ञा के आगे रहता है तो अन्यपुरुष में केवल उसी संज्ञा का निश्चय विशेष करके होता है कुछ अन्यपुरुष सम्बन्धी वस्तु का ज्ञान नहीं होता। जैसे उस परिवार का उस घोड़े पर और उसका परिवार और उसके घोड़े पर इस से अन्यपुरुष सम्बन्धी परिवार और घोड़े का ज्ञान होता है ॥

अनिश्चयवाचक सर्वनाम कोई शब्द।

१६८ इसके कहने से किसी पदार्थ का निश्चय नहीं होता इसलिये यह अनिश्चयवाचक कहाता है। कर्त्ता कारक में कोई शब्द ज्यों का त्यों बना रहता है परंतु शेष कारकों में कोई को किसी आदेश करते हैं। इसका बहुवचन नहीं होता परंतु दो बार कहने से बहुवचन समझा जाता है। जैसा कोई २ कहते हैं इत्यादि ॥

कारक।	एकवचन।
कर्त्ता	कोई वा किसी ने
कर्म	किसी को
करण	किसी से
सम्प्रदान	किसी को
अपादान	किसी से
सम्बन्ध	किसी का—के—की
अधिकरण	किसी में ॥

१६९ कोई शब्द के समान कुछ शब्द भी है परंतु अव्यय होने से इसकी कारकरचना नहीं होती और संख्या के अनिश्चय में वा क्रिया-विशेषण की रीति पर प्रायः इसका प्रयोग होता है। जैसे कुछ भेद कुछ रुपये कुछ बात कुछ लोग कुछ लिखो कुछ पढ़ो इत्यादि ॥

आदरसूचक सर्वनाम आप शब्द।

१७० आदर के लिये मध्यम और अन्यपुरुष को आप आदेश होता है। उसके कारक हलन्त पुल्लिङ्ग संज्ञा के समान होते हैं और जिस क्रिया

का आप शब्द कर्त्ता रहेगा वह अवश्य बहुवचनान्त होगी इसी से बहु-वचन में बहुत्व प्रकाशित करने के लिये लोग शब्द लगा देते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	आप वा आप ने	आप लोग वा आप लोगों ने
कर्म	आप को	आप लोगों को
करण	आप से	आप लोगों से
सम्प्रदान	आप को	आप लोगों को
अपादान	आप से	आप लोगों से
सम्बन्ध	आप का—के—की	आप लोगों का—के—की
अधिकरण	आप में	आप लोगों में ॥

१०१ प्रायः मध्यमपुरुष के बदले आदर के लिये आप शब्द आता है परंतु अन्यपुरुष के निमित्त भी इसका प्रयोग होता है उसकी विद्यमानता के रहते हाथ बढ़ाने से समझा जाता है कि मध्यम नहीं पर अन्यपुरुष की चर्चा हो रही है ॥

१०२ आप शब्द निज का भी वाचक होके संज्ञाओं का विशेषण होता है कर्त्ता कारक जैसे मैं आप बोलूंगा तुम आप कहो लड़के आप आये हैं इत्यादि ॥

१०३ जब कर्त्ता के साथ आप शब्द आता है तब उसका कुछ विकार नहीं होता परंतु शेष कारकों में आप को अपना आदेश कर देते हैं और उस से निज का सम्बन्ध समझा जाता है और उसके रूप भाषा के आकारान्त शब्द की रीति पर होते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।
कर्त्ता	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
सम्प्रदान	अपने को
अपादान	अपने से
सम्बन्ध	अपना—ने—नी
अधिकरण	अपने में ॥

१०४ 'आप शब्द के पूर्वोक्त रूप उत्तम मध्यम और अन्यपुरुष में आ जाते हैं और एकवचन का प्रयोग बहुवचन में होता है। जिस सर्वनाम के आगे वे आते हैं उसके सम्बन्धवान विशेषण समझे जाते हैं। जैसे मैं अपना काम करता हूं तू अपनी बोली नहीं समझता है वे अपने घर गये हैं इत्यादि ॥

१६५ आपस यह परस्परबोधक नियमरहित रूप आप शब्द से बना हुआ है प्रायः इसके सम्बन्ध और अधिकरण कारक उत्तम मध्यम और अन्यपुरुषों में आया करते हैं। जैसे आपस की लड़ाई में आपस का मेल हम आपस में परामर्श करेंगे तुम लोग आपस में क्या कहते हो ॥

प्रश्नवाचक सर्वनाम कौन शब्द।

१०६ प्रश्नवाचक सर्वनाम कौन शब्द कर्त्ता कारक के दोनों वचनों में ज्यों का त्यों बना रहता है पर शेष कारकों के एकवचन में कौन को किस और बहुवचन में किन वा किन्ह आदेश करके उनके आगे विभक्ति लाते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	कौन किसने	कौन किन ने
कर्म	किस को किसे	किन को किन्हें
करण	किस से	किन से
सम्प्रदान	किस को किसे	किन को किन्हें
अपादान	किस से	किन से
सम्बन्ध	किस का—के—की	किन का—के—की
अधिकरण	किस में	किन में ॥

१०७ कौन शब्द के समान क्या शब्द भी प्रश्नवाचक है पर उसकी कारकरचना न होने के कारण उसे अव्यय कहते हैं और वह विशेषण के तुल्य आया करता है। जैसे क्या बात क्या ठिकाना क्या कहूंगा ॥

१०८ कौन और क्या ये प्रश्नवाचक अकेले आवें तो कौन शब्द से प्रायः मनुष्य समझा जायगा और क्या शब्द से अप्राणिवाचक का बोध होगा। जैसे कौन है अर्थात कौन मनुष्य है किस (मनुष्य) का है किन ने किया क्या है अर्थात क्या वस्तु है क्या हुआ क्या देखा इत्यादि।

परंतु जो संज्ञा के साथ आवें तो कौन और क्या दोनों निर्जीव और सजीव को लगते हैं। जैसे किस मनुष्य से किन लोगों में किस उपाय से क्या ज्ञानी पुरुष है क्या चोर है क्या योद्धा है॥

सम्बन्धवाचक सर्वनाम।

१७९ सम्बन्धवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जो कही हुई संज्ञा से कुछ वर्णन मिलाता है। जैसे आपने जो घोड़ा देखा था सो मेरा है। सम्बन्धवाचक सर्वनाम जो जहां रहता है वहां सो अथवा वह शब्द भी अवश्य लिखा वा समझा जाता है इसलिये इसे सम्बन्धवाचक कहते हैं॥

१८० जो वा जौन कर्त्ता के दोनों वचन में ज्यों का त्यों बना रहता है पर और कारकों के एकवचन में जो को जिस और बहुवचन में जिन वा जिन्ह आदेश हो जाता है। यथा

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	जो वा जिस ने	जो वा जिन ने
कर्म	जिस को वा जिसे	जिन को जिन्हों को जिन्हें
करण	जिस से	जिन से जिन्हों से
सम्प्रदान	जिस को जिसे	जिन को जिन्हों को जिन्हें
अपादान	जिस से	जिन से जिन्हों से
सम्बन्ध	जिस का—के—की	जिन का जिन्हों का-के-की
अधिकरण	जिस में	जिन में जिन्हों में॥

१८१ जो शब्द का परस्पर सम्बन्धी सो वो तौन शब्द कर्त्ता कारक के दोनों वचनों में जैसे का तैसा बना रहता है पर शेष कारकों के एक वचन में सो को तिस और बहुवचन में तिन वा तिन्ह आदेश कर देते हैं। जैसे

कारक।	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	सो वा तिस ने	सो वा तिन ने
कर्म	तिस को तिसे	तिन को तिन्हें तिन्हों को
करण	तिस से	तिन से तिन्हों से
सम्प्रदान	तिस को तिसे	तिन को तिन्हें तिन्हों को
अपादान	तिस से	तिन से तिन्हों से

सम्बन्ध	तिस का—के—की	तिन का—के—की
अधिकरण	तिस में	तिन में तिन्हों में ॥

१८२ चेत रखना चाहिये कि निश्चयवाचक प्रश्नवाचक और सम्बन्धवाचक सर्वनामों में कर्ता को छोड़ के शेष कारकों के बहुवचन में सानुनासिक हों विभक्ति के पूर्व कोई २ विकल्प से लगा देते हैं। जैसे इनने वा इन्हों ने जिनका वा जिन्हों का बोलते हैं। परंतु कोई २ वैयाकरण कहते हैं कि जिस रूप में ओं वा हों आवे वह सदा बहुत्व बताने के निमित्त होता है। जैसे हमों को तुम्हों को अर्थात हम लोगों को तुम लोगों को इत्यादि। और अन्य रूप हमको तुमको आदि केवल आदरार्थ बहुवचन में आते हैं॥

१८३ इस उस किस जिस तिस सर्वनामों के स को तना आदेश करने से ये परिमाणवाचक शब्द अर्थात इतना उतना कितना जितना और तितना बनाये जाते हैं और उन्हीं सर्वनामों के साथ सामानतासूचक सा (से सी) के लगाने से ये प्रकारवाचक शब्द भी अर्थात ऐसा कैसा जैसा तैसा और वैसा हुए हैं। इस+सा=ऐसा किस + सा=कैसा जिस+सा = जैसा और तिस + सा=तैसा। यह पांचों गुणवाचक की रीति पर आते हैं और उनके विकार होने का नियम लिङ्ग वचन के कारण वही है जो आकारान्त गुणवाचक के विषय बताया गया है॥

१८४ ऊपर के लिखे हुए सर्वनामों को छोड़ के कितने एक शब्द और भी आते हैं जो इन्हीं सर्वनामों के तुल्य होते हैं। जैसे एक दो दोनों और सब अन्य कई कै आदि॥

इति सर्वनाम प्रकरण॥

पांचवां अध्याय।

क्रिया के विषय में।

१८५ कह आये हैं कि क्रिया उसे कहते हैं जिसका मुख्य अर्थ करना है वह काल पुरुष और वचन से सम्बन्ध रखती है॥

१८६ क्रिया के मूल को धातु कहते हैं और उसके अर्थ से व्यापार का बोध होता है ॥

१८७ चेत करना चाहिये कि जिस शब्द के अन्त में ना रहे और उसके अर्थ से कोई व्यापार समझा जाय तो वही क्रिया का साधारण रूप है जिसे क्रियार्थक संज्ञा भी कहते हैं। जैसे लिखना सीखना बोलना इत्यादि ॥

१८८ इस क्रियार्थक संज्ञा के ना का लोप करके जो रह जाय उसे ही क्रिया का मूल जानो क्योंकि वह सब क्रियाओं के रूपों में सदा विद्यमान रहता है। जैसे खोलना यह एक क्रियार्थक संज्ञा है इसके ना का लोप किया तो रहा खोल इसे ही मूल अर्थात धातु समझो और ऐसे ही सर्वत्र ॥

१८९ क्रिया दो प्रकार की होती है एक सकर्मक दूसरी अकर्मक। सकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जो कर्म के साथ रहती है अर्थात जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ता में न पाया जाय जैसे पण्डित पोथी को पढ़ता है यहां पण्डित कर्ता है क्योंकि पढ़ने की क्रिया पण्डित के आधीन है। यदि यहां पण्डित शब्द न बोला जायगा तो पढ़ने की क्रिया के साधन का बोध भी न हो सकेगा और पोथी इस हेतु से कर्म है कि इस क्रिया का जो पढ़ा जाना रूप फल है सो उसी पोथी में है तो यह क्रिया सकर्मक हुई ऐसे ही लिखना सुन्ना आदि और भी जानो ॥

१९० अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिसके साथ कर्म नहीं रहता अर्थात उसका व्यापार और फल दोनों एकत्र होकर कर्ता ही में मिलते हैं। जैसे पण्डित सोता है यहां पण्डित कर्ता है और कर्म इस वाक्य में कोई नहीं पण्डित ही में व्यापार और फल दोनों हैं इसकारण यह क्रिया अकर्मक कहाती है ऐसे ही उठना बैठना आदि भी जानो ॥

१९१ सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं एक कर्तृप्रधान और दूसरी कर्मप्रधान जिस क्रिया का लिङ्ग वचन कर्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार हो उसे कर्तृप्रधान और कर्म के लिङ्ग और वचन के समान जिस क्रिया का लिङ्ग वचन होवे उसे कर्मप्रधान क्रिया कहते हैं। यथा

कर्तृप्रधान।	कर्मप्रधान।
स्त्री कपड़ा सीती है	कपड़ा सीया जाता है

किसान गेहूं बोवेगा — गेहूं बोया जायगा
लड़की पढ़ती थी — लड़की पढ़ाई जाती थी
घोड़े घास खाते हैं — घोड़े से घास खाई जाती है ॥

१६२ ध्यान रखना चाहिये कि यदि कर्मप्रधान क्रिया के संग कर्ता की आवश्यकता होवे तो उसे करण कारक के चिन्ह के साथ लगा दो। जैसे रावण राम से मारा गया लड़के से रोटियां नहीं खाई गईं हम से तुम्हारी बात नहीं सुनी जाती ॥

१६३ समझ रक्खो कि जैसे कर्तृप्रधान क्रिया के साथ कर्ता का होना आवश्यक है वैसा ही कर्मप्रधान क्रिया के संग कर्म भी अवश्य रहता है परंतु जहां अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान क्रिया के समान मिले वहां उसे भावप्रधान जानो ॥

१६४ इस से यह बात सिद्ध हुई कि जब प्रत्यय कर्ता में होता तो कर्त्ता प्रधान होता है और जब कर्म में होता है तब कर्म। इसी रीति से भाव में जब प्रत्यय आता है तो भाव ही प्रधान हो जाता है। जैसे रात भर किसी से नहीं जागा जाता बिना बोले तुम से नहीं रहा जाता बिना काम किसी से बैठा जाता है इत्यादि ॥

१६५ धातु के अर्थ को भाव कहते हैं हिन्दी भाषा में भावप्रधान क्रिया कम आती है और प्रायः उसका प्रयोग नहीं शब्द के साथ बोला जाता है ॥

१६६ क्रिया के करने में जो समय लगता है उसे काल कहते हैं उसके मुख्य भाग तीन हैं अर्थात भूत वर्त्तमान और भविष्यत। भूतकालिक क्रिया उसे कहते हैं जिसकी समाप्ति हो चुकी हो अर्थात जिस में आरम्भ और समाप्ति दोनों पाई जायं। जैसे तुमने कहा मैंने सुना है। वर्त्तमानकालिक क्रिया वह कहाती है जिसका आरम्भ हो चुका हो परंतु समाप्ति न हुई हो। जैसे वे खेलते हैं मैं देखता हूं। भविष्यत काल की क्रिया का लक्षण यह है कि जिसका आरम्भ न हुआ हो। जैसे मैं पढ़ूंगा तुम सुनोगे इत्यादि ॥

१६७ छः प्रकार की भूतकालिक क्रिया होती हैं अर्थात सामान्यभूत पूर्णभूत आसन्नभूत संदिग्धभूत अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत ॥

१ सामान्यभूत काल की क्रिया से क्रिया की पूर्णता तो समझी जाती है परंतु भूतकाल की विशेषता बोधित नहीं होती ॥

२ पूर्णभूत उसे कहते हैं जिस से क्रिया की पूर्णता और भूतकाल की दूरता दोनों समझी जाती हैं ॥

३ आसन्नभूत से क्रिया की पूर्णता और भूतकाल की निकटता भी जानी जाती है ॥

४ संदिग्धभूत से भूतकालिक क्रिया का संदेह समझा जाता है ॥

५ अपूर्णभूत काल की क्रिया से भूतकाल तो पाया जाता है परंतु क्रिया की पूर्णता पाई नहीं जाती ॥

६ हेतुहेतुमद्भूत क्रिया उसे कहते हैं जिस में कार्य्य और कारण का फल भूतकाल का होता है॥

१९८ वर्त्तमानकाल की क्रिया के दो भेद हैं अर्थात सामान्यवर्त्तमान और संदिग्धवर्त्तमान। सामान्यवर्त्तमान क्रिया से जाना जाता है कि कर्त्ता क्रिया को उसी समय कर रहा है। संदिग्धवर्त्तमान से वर्त्तमानकालिक क्रिया का संदेह समझा जाता है ॥

१९९ भविष्यतकालिक क्रिया की दो अवस्था होती हैं अर्थात सामान्यभविष्यत और संभाव्यभविष्यत। सामान्यभविष्यत क्रिया का अर्थ उक्त हुआ है। संभाव्यभविष्यत की क्रिया से भविष्यत काल और किसी बात की चाह जानी जाती है ॥

२०० क्रिया के दो भेद और भी हैं एक विधि दूसरी पूर्वकालिक क्रिया। विधि क्रिया उसे कहते हैं जिस से आज्ञा समझी जाती है। पूर्वकालिक क्रिया से लिङ्ग वचन और पुरुष का बोध नहीं होता और उसका काल दूसरी क्रिया से प्रकाशित होता है ॥

क्रिया के संपूर्ण रूप के विषय में।

२०१ कह आये हैं कि क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके जो शेष रहता है सो क्रिया का धातु है और क्रिया के समस्त रूपों में धातु निरन्तर अटल रहता है। अब ये दो बातें चेत रखना चाहियें ॥

१ क्रिया के धातु के अन्त में ता कर देने से हेतुहेतुमद्भूत क्रिया बनती है। जैसे धातु खेल और हेतुहेतुमद्भूत है खेलता ॥

२ क्रिया के धातु के अन्त में आ कर देने से सामान्यभूत काल की क्रिया होती है। जैसे धातु खोल और सामान्यभूत भूत है खोला ऐसे ही सर्वत्र समझो*

२०२ ये तीन अर्थात धातु हेतुहेतुमद्भूत और सामान्यभूत क्रिया के संपूर्ण रूप के मुख्य भाग हैं इस कारण कि इन्हीं से क्रिया के सब रूप निकलते हैं। जैसे

१ धातु से संभाव्यभविष्यत सामान्यभविष्यत विधि और पूर्वकालिक क्रिया निकलती हैं॥

२ हेतुहेतुमद्भूत से सामान्यवर्त्तमान अपूर्णभूत और संदिग्धवर्त्तमान क्रिया निकलती हैं॥

३ सामान्यभूत से आसन्नभूत पूर्णभूत और संदिग्धभूत की क्रिया निकलती हैं। जैसा नीचे क्रियावृक्ष में लिखा है।
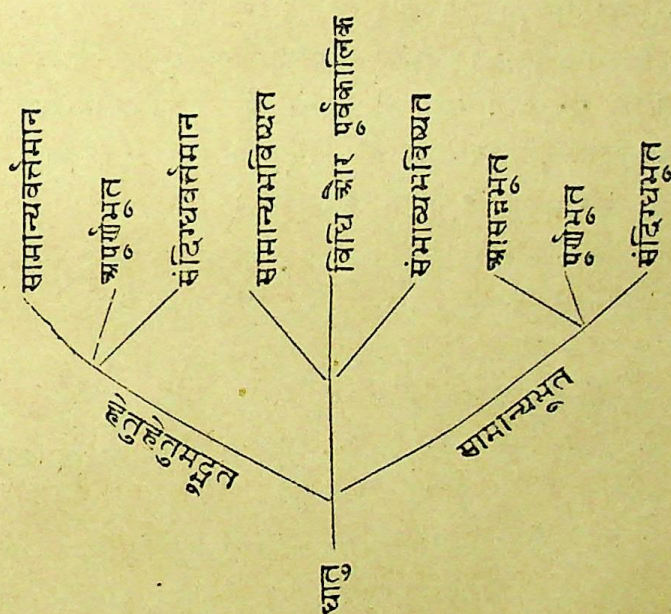
* जो धातु स्वरान्त हो तो सामान्यभूत क्रिया के बनाने में उच्चारण के निमित्त धातु के अन्त में या लगा देते हैं और जो धातु के अन्त में ई वा ए होवे तो उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे धातु खा और सामान्यभूत खाया वैसे ही पी पिया छू छूया दे दिया धो धोया आदि जानो॥

क्रिया के बनाने के विषय में ॥

१ धातु से ।

२०३ संभाव्यभविष्यत—धातु हलन्त हो तो उसको क्रम से ऊं ए ए एं ओ एं इन स्वरों के लगाने से तीनों पुरुष की क्रिया दोनों वचन में हो जाती हैं। और जो धातु स्वरान्त हो तो ऊं ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के आगे व विकल्प से लगाते हैं। जैसे हलन्त धातु बोल से बोलूं बोले आदि होते हैं और स्वरान्त धातु खा से खाऊं खाये वा खावे आदि होते हैं ॥

२०४ सामान्यभविष्यत—संभाव्यभविष्यत क्रिया के आगे पुल्लिङ्ग एक वचन के लिये गा बहुवचन के लिये गे और स्त्रीलिङ्ग एकवचन के लिये गी बहुवचन के लिये गीं तीनों पुरुष में लगा देते हैं। जैसे खाऊंगा खावेगा खावेगी आदि ॥

२०५ विधिक्रिया—विधिक्रिया और संभाव्यभविष्यत क्रिया में केवल मध्यमपुरुष के एकवचन का भेद होता है। विधि में मध्यमपुरुष का एकवचन धातु ही के समान होता है। जैसे खेल खेले खेलें आदि जानो*

२ हेतुहेतुमद्भूत से ।

२०६ सामान्यवर्त्तमान—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे क्रम से हूं है है हैं हो हैं वर्त्तमान काल के इन चिन्हों के लगाने से सामान्यवर्त्तमान की क्रिया बनती है। जैसे खेलता हूं खेलते हैं खाता है खाते हो ॥

२०७ अपूर्णभूत—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे था के लगाने से अपूर्णभूत काल की क्रिया हो जाती है। जैसे खेलता था खाता था खेलते थे आदि ॥

२०८ संदिग्धवर्त्तमान—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार होना क्रिया का भविष्यत काल के रूप लगाने से संदिग्ध वर्त्तमान की क्रिया बनती है। जैसे खेलता होऊंगा खेलता होवेगा आदि ॥

---

* होना देना और लेना इन तीनों की विधि क्रिया दो रूप से आती हैं। जैसे हो और होओ दूं और देऊं दो और देओ लो और लेओ आदि कोई २ बोलते और लिखते ॥

३ सामान्यभूत से ॥

२०९ आसन्नभूत—सामान्यभूत की अकर्मक क्रिया से आगे ये चिन्ह अर्थात हूं है है हैं हो हैं कर्त्ता के वचन और पुरुष के अनुसार लगाने से आसन्नभूत क्रिया बनती है परंतु सकर्मक क्रिया से आगे कर्म के वचन के अनुसार है वा हैं तीनों पुरुष में आता है। जैसे मैं बोला हूं तू बोला है मैंने घोड़ा देखा है मैंने घोड़े देखे हैं तुमने घोड़ा देखा है तुमने घोड़े देखे हैं इत्यादि ॥

२१० पूर्णभूत—सामान्यभूत क्रिया के आगे था के लगाने से पूर्णभूत क्रिया हो जाती है। जैसे मैंने खाया था तूने खाया था मैं बोला था तू बोला था आदि ॥

२११ संदिग्धभूत—सामान्यभूत क्रिया के आगे होना इस क्रियाके भवि- ष्यतकाल सम्बन्धी रूपों के लिङ्ग वचन के अनुसार लगाने से संदिग्धभूत की क्रिया हो जाती है। जैसे मैंने देखा होगा तूने देखा होगा आदि ॥

२१२ चेत रखना चाहिये कि आकारान्त क्रिया में लिङ्ग और वचन के कारण भेद तो होता है परंतु पुरुष के कारण विकार नहीं होता। आका- रान्त पुल्लिङ्ग क्रिया हो तो एकवचन में ज्यों की त्यों बनी रहेगी परंतु बहुवचन में एकारान्त हो जाती है स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में ईकारान्त हो जाती है और बहुवचन में सानुनासिक ईकारान्त हो जाती है ॥

२१३ यदि आकारान्त क्रिया के साथ आकारान्त सहकारी क्रिया, अर्थात था हो तो दोनों में लिङ्ग और वचन का भेद पड़ेगा परंतु स्त्रीलिङ्ग के बहुवचन में केवल इतना विशेष है कि पिछली क्रिया के अंत्य स्वर के ऊपर सानुनासिक का चिन्ह लगा देना चाहिये ॥

२१४ आकारान्त छोड़ के और जितनी क्रिया हैं उन सभों के रूप दोनों लिङ्ग में ज्यों के त्यों बने रहते हैं उनके लिङ्ग का बोध इस रीति से होता है कि यदि कर्त्ता पुल्लिङ्ग हो तो क्रिया भी पुल्लिङ्ग और जो कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग हो तो क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग समझी जायगी ॥

२१५ नीचे के चक्र में क्रिया के संपूर्ण रूपों के अंत्य अक्षर काल लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार लिखे हैं उन्हे धातु से लगाकर क्रिया बना लो ॥

	पुरुष	सामान्यभूत				आसन्नभूत				पूर्णभूत			
		एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
		पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
व्यंजनान्त धातु	उत्तम	आ	ई	ए	ईं	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
	मध्यम	आ	ई	ए	ईं	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
	अन्य	आ	ई	ए	ईं	आ है	ई है	ए हैं	ई हैं	आ था	ई थी	ए थे	ई थीं
स्वरान्त धातु	उत्तम	या	ई	ये	ईं	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
	मध्यम	या	ई	ये	ईं	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
	अन्य	या	ई	ये	ईं	या है	ई है	ये हैं	ई हैं	या था	ई थी	ये थे	ई थीं
		हेतुहेतुमद्भूत				सामान्य वर्त्तमान				अपूर्णभूत			
स्वरान्त वा व्यंजनान्त धातु	उत्तम	ता	ती	ते	तीं	ता हूं	ती हूं	ते हैं	ती हैं	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
	मध्यम	ता	ती	ते	तीं	ता है	ती है	ते हो	ती हो	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
	अन्य	ता	ती	ते	तीं	ता है	ती है	ते हैं	ती हैं	ता था	ती थी	ते थे	ती थीं
		संभाव्यभविष्यत				सामान्यभविष्यत				विधि क्रिया			
	उत्तम	ऊं	ऊं	एं	एं	ऊंगा	ऊंगी	एंगे	एंगी	ऊं	ऊं	एं	एं
	मध्यम	ए	ए	ओ	ओ	एगा	एगी	ओगे	ओगी	(धातु)	(धातु)	ओ	ओ
	अन्य	ए	ए	एं	एं	एगा	एगी	एंगे	एंगी	ए	ए	एं	एं

२१६ अकर्मक क्रिया के धातु दो प्रकार के होते हैं एक स्वरान्त दूसरा व्यंजनान्त । अब उन क्रियाओं का उदाहरण जिनका धातु स्वरान्त होता है होना क्रिया के समस्त रूपों में लिख देते हैं ॥

होना क्रिया के मुख्य भाग ॥

२१७	धातु	हो
	हेतुहेतुमद्भूत	होता
	सामान्यभूत	हुआ

२१८ पहिले सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

	एकवचन ।	बहुवचन ।
उत्तम पुरुष	मैं हुआ	हम हुए
मध्यम ,,	तू हुआ	तुम हुए
अन्य ,,	वह हुआ	वे हुए

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई	हम हुईं
तू हुई	तुम हुईं
वह हुई	वे हुईं

२ पूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं हुआ था	हम हुए थे
तू हुआ था	तुम हुए थे
वह हुआ था	वे हुए थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई थी	हम हुई थीं
तू हुई थी	तुम हुई थीं
वह हुई थी	वे हुई थीं

३ आसन्नभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
तू हुआ है	तुम हुए हो
वह हुआ है	वे हुए हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई हूं	हम हुई हैं
तू हुई है	तुम हुई हो
वह हुई है	वे हुई हैं

४ संदिग्धभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं हुआ होऊंगा	हम हुए होवेंगे
तू हुआ होगा	तुम हुए होगे वा होओगे
वह हुआ होगा	वे हुए होवेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं हुई होऊंगी	हम हुई होवेंगी
तू हुई होगी	तुम हुई होओगी
वह हुई होगी	वे हुई होवेंगी

२१८ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती है उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं होती	हम होतीं
तू होती	तुम होतीं
वह होती	वे होतीं

२ सामान्य वर्त्तमान काल।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होता हूं	हम होते हैं
तू होता है	तुम होतेहो
वह होता है	वे होते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं होती हूं	हम होती हैं
तू होती है	तुम होतीहो
वहहोती है	वे होती हैं

३ अपूर्णभूत काल

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होता था	हम होते थे
तू होता था	तुम होते थे
वह होता था	वे होते थे

कर्त्ता—स्त्रीलिंग

मैं होती थी	हम होती थीं
तू होती थी	तुम होती थीं
वह होतीथी	वे होती थीं

६१० जिन कालों की क्रिया धातुसे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं।

१ विधि क्रिया।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं होऊं	हम होवें
तू हो	तुम होओ
वह होवे	वे होवें
आदरपूर्वक विधि।	परोक्ष विधि।
हूजिये	हूजियो

२ संभाव्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिंग

मैं होऊं	हम होवें
तू होवे	तुम हो वा होओ
वह होवे	वे होवें

३ सामान्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं होऊंगा	हम होवेंगे
तू होवेगा	तुमहोओगे
वहहोवेगा	वे होवेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं होऊंगी	हम होवेंगी
तू होवेगी वा होगी	तुम होओगी वा होंगी
वह होवेगी वा होगी	वे होवेंगी वा होंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया ।

होके होकर वा हो करके ॥

२२१ अब उन क्रियाओं का उदाहरण रहना क्रियाके समस्तरूपों में देते है जिनका धातु व्यंजनान्त होता है ॥

रहना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	रह
हेतुहेतुमद्भूत	रहता
सामान्यभूत	रहा

२२२ सामान्य भूत और जिन कालोंकी क्रिया उस से निकलतीह उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

एकवचन ।	बहुवचन
मैं रहा	हमरहे

तू रहा	तुम रहे
वह रहा	वे रहे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही	हम रहीं
तू रही	तुम रहीं
वह रही	वे रहीं

२ आसन्नभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा हूं	हम रहे हैं
तू रहा है	तुम रहे हो
वह रहा है	वे रहे हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही हूं	हम रही हैं
तू रही है	तुम रही हो
वह रही है	वे रही हैं

३ पूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा था	हम रहे थे
तू रहा था	तुम रहे थे
वह रहा था	वे रहे थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही थी	हम रही थीं
तू रही थी	तुम रही थीं
वह रही थी	वे रही थीं

४ संदिग्धभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहा होऊंगा	हम रहे होवेंगे वा होंगे
तू रहा होवेगा वा होगा	तुम रहे होश्रोगे वा होगे
वह रहा होवेगा वा होगा	वे रहे होवेंगे वा होंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रही होऊंगी	हम रही होवेंगी
तू रही होवेगी	तुम रही होओगी वा होगी
वह रही होवेगी	वे रही होवेंगी

२२३ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता	हम रहते
तू रहता	तुम रहते
वह रहता	वे रहते

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती	हम रहतीं
तू रहती	तुम रहतीं
वह रहती	वे रहतीं

२ सामान्यवर्त्तमान काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता हूं	हम रहते हैं
तू रहता है	तुम रहते हो
वह रहता है	वे रहते हैं

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती हूं	हम रहती हैं
तू रहती है	तुम रहती हो
वह रहती है.	वे रहती हैं

३ अपूर्णभूत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता था	हम रहते थे
तू रहता था	तुम रहते थे
वह रहता था	वे रहते थे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती थी	हम रहती थीं
तू रहती थी	तुम रहती थीं
वह रहती थी	वे रहती थीं

संदिग्धवर्त्तमान काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहता होऊंगा	हम रहते होवेंगे
तू रहता होगा	तुम रहते होओगे वा होगे
वह रहता होगा	वे रहते होवेंगे वा होंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहती होऊंगी	हम रहती होवेंगी
तू रहती होवेगी	तुम रहती होओगी वा होगी
वह रहती होवेगी	वे रहती होवेंगी

१२४ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ विधि क्रिया ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूं	हम रहें
तू रह	तुम रहो
वह रहे	वे रहें
आदरपूर्वक विधि ।	परोक्ष विधि ।
रहिये	रहियो ।

२ संभाव्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूं	हम रहें
तू रहे	तुम रहो
वह रहे	वे रहें

३ सामान्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं रहूंगा	हम रहेंगे

तू रहेगा	तुम रहोगे
वह रहेगा	वे रहेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं रहूंगी	हम रहेंगी
तू रहेगी	तुम रहोगी
वह रहेगी	वे रहेंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया ।

रहके रहकर वा रहकरके ॥

सकर्मक क्रिया के रूप ॥

२२५ सकर्मक क्रिया के धातु दो प्रकार के होते हैं एक स्वरान्त दूसरा व्यंजनान्त । अब उन सकर्मक क्रियाओं का उदाहरण पाना क्रिया के संपूर्ण रूपों में लिखते हैं जिनका धातु स्वरान्त होता है ॥

पाना क्रिया के मुख्य भाग ।

धातु	पा
हेतुहेतुमद्भूत	पाता
सामान्यभूत	पाया

२२६ सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने पाया	मैंने वा हमने पाये
तूने ,, तुमने पाया	तूने ,, तुमने पाये
उसने ,, उन्हों ने पाया	उसने ,, उन्हों ने पाये
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	**कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।**
मैंने वा हमने पाई	मैंने वा हमने पाईं
तूने ,, तुमने पाई	तूने ,, तुमने पाईं
उसने ,, उन्हों ने पाई	उसने ,, उन्हों ने पाईं

२ आसन्नभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाया है	मैंने वा हमने पाये हैं
तूने „ तुमने पाया है	तूने „ तुमने पाये हैं
उसने „ उन्हों ने पाया है	उसने „ उन्हों ने पाये हैं
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाई है	मैंने वा हमने पाई हैं
तूने „ तुमने पाई है	तूने „ तुमने पाई हैं
उसने „ उन्हों ने पाई है	उसने „ उन्हों ने पाई हैं

३ पूर्णभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाया था	मैंने वा हमने पाये थे
तूने „ तुमने पाया था	तूने „ तुमने पाये थे
उसने „ उन्हों ने पाया था	उसने „ उन्हों ने पाये थे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाई थी	मैंने वा हमने पाई थीं
तूने „ तुमने पाई थी	तूने „ तुमने पाई थीं
उसने „ उन्हों ने पाई थी	उसने „ उन्हों ने पाई थीं

४ संदिग्धभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाया होऊंगा	मैंने वा हमने पाये होवेंगे
तूने „ तुमने पाया होगा	तूने „ तुमने पाये होओगे
उसने „ उन्हों ने पाया होगा	उसने „ उन्हों ने पाये होवेंगे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने पाई होऊंगी	मैंने वा हमने पाई होवेंगी
तूने „ तुमने पाई होगी	तूने „ तुमने पाई होओगी
उसने „ उन्हों ने पाई होगी	उसने „ उन्हों ने पाई होवेंगी

२२७ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती है उन्हें लिखते हैं॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल।

एकवचन।	कर्ता—पुल्लिङ्ग	बहुवचन।
मैं पाता		हम पाते
तू पाता		तुम पाते
वह पाता		वे पाते

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती	हम पातीं
तू पाती	तुम पातीं
वह पाती	वे पातीं

२ सामान्यवर्त्तमान काल।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

मैं पाता हूं	हम पाते हैं
तू पाता है	तुम पाते हो
वह पाता है	वे पाते हैं

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती हूं	हम पाती हैं
तू पाती है	तुम पाती हो
वह पाती है	वे पाती हैं

३ अपूर्णभूत काल।

कर्ता—पुल्लिङ्ग

मैं पाता था	हम पाते थे
तू पाता था	तुम पाते थे
वह पाता था	वे पाते थे

कर्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती थी	हम पाती थीं
तू पाती थी	तुम पाती थीं
वह पाती थी	वे पाती थीं

४ संदिग्धवर्त्तमान काल । कर्त्ता—पुल्लिङ्ग ।

मैं पाता होऊंगा	हम पाते होवेंगे
तू पाता होगा	तुम पाते होओगे वा होगे
वह पाता होगा	वे पाते होवेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाती होऊंगी	हम पाती होवेंगी
तू पाती होवेगी	तुम पाती होओगी
वह पाती होवेगी	वे पाती होवेंगी

२२८ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ विधि क्रिया ।

मैं पाऊं	हम पावें
तू पा	तुम पाओ
वह पावे	वे पावें
आदरपूर्वक विधि ।	परोक्ष विधि ।
पाइये	पाइयो

२ संभाव्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग

मैं पाऊं	हम पावें
तू पावे	तुम पाओ
वह पावे	वे पावें

३ सामान्यभविष्यत काल ।

कर्त्ता—पुल्लिङ्ग

मैं पाऊंगा	हम पावेंगे
तू पावेगा	तुम पाओगे
वह पावेगा	वे पावेंगे

कर्त्ता—स्त्रीलिङ्ग

मैं पाऊंगी	हम पावेंगी
तू पावेगी	तुम पाओगी
वह पावेगी	वे पावेंगी

४ पूर्वकालिक क्रिया।

पाके पाकर वा पाकरके ॥

२२६ अब उन सकर्मक क्रियाओं का उदाहरण देखना क्रिया के समस्त रूपों में लिखते हैं जिनका धातु व्यंजनान्त होता है ॥

देखना क्रिया के मुख्य भाग।

धातु	देख
हेतुहेतुमद्भूत	देखता
सामान्यभूत	देखा

२३० सामान्यभूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखा	मैंने वा हमने देखे
तूने " तुमने देखा	तूने " तुमने देखे
उसने " उन्हों ने देखा	उसने " उन्हों ने देखे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	**कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।**
मैंने वा हमने देखी	मैंने वा हमने देखीं
तूने " तुमने देखी	तूने " तुमने देखीं
उसने " उन्हों ने देखी	उसने " उन्हों ने देखीं

२ आसन्नभूत काल।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन।
मैंने वा हमने देखा है	मैंने वा हमने देखे हैं
तूने " तुमने देखा है	तूने " तुमने देखे हैं
उसने " उन्हों ने देखा है	उसने " उन्हों ने देखे हैं
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन।	**कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन।**
मैंने वा हमने देखी है	मैंने वा हमने देखी हैं
तूने " तुमने देखी है	तूने " तुमने देखी हैं
उसने " उन्हों ने देखी है	उसने " उन्हों ने देखी हैं

३ पूर्णभूतकाल ।

कर्म—पुल्लिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—पुल्लिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखा था	मैंने वा हमने देखेथे
तूने वा तुमने देखा था	तूने वा तुमने देखे थे
उसने वा उन्हों ने देखा था	उसने वा उन्हों ने देखेथे
कर्म—स्त्रीलिङ्ग और एकवचन ।	कर्म—स्त्रीलिङ्ग और बहुवचन ।
मैंने वा हमने देखी थी	मैंने वा हमने देखी थीं
तूने वा तुमने देखी थी	तूने वा तुमने देखी थीं
उसने वा उन्हों ने देखी थी	उसने वा उन्होंने देखी थीं

२३१ शेष कालों की क्रियाओं के रूप रहना क्रिया के रूपों के अनुसार बनाये जाते हैं ॥

२३२ ऊपर के सब उदाहरण कर्तृवाच्य हैं अब सकर्मक धातुके कर्मवाच्य क्रिया का उदाहरण लिखते हैं। कर्मवाच्य में कर्त्ता प्रकट नहीं रहता परंतु कर्महो कर्त्ता के रूप से आता है उसके बनाने की यह रीति है कि मुख्य धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे जाना इस क्रिया के रूपों को काल पुरुष लिङ्ग और वचन के अनुसार लिखते हैं ॥

देखा—जाना क्रिया के मुख्य भाग :

धातु	देखा जा
हेतुहेतुमद्भूत	देखा जाता
सामान्यभूत	देखा गया

२३३ सामान्य भूत और जिन कालों की क्रिया उससे निकलती हैं उन्हें लिखते हैं ॥

१ सामान्यभूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया	हम देखे गये
तू देखा गया	तुम देखे गये
वह देखा गया	वे देखे गये

मैं देखी गई	हम देखी गई
तू देखी गई	तुम देखी गई
वह देखी गई	वे देखी गई

२ आसन्नभूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया हूं	हम देखे गये हैं
तू देखा गया है	तुम देखे गये हो
वह देखा गया है	वे देखे गये हैं

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी गई हूं	हम देखी गई हैं
तू देखी गई है	तुम देखी गई हो
वह देखी गई है	वे देखी गई हैं

३ पूर्णभूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया था	हम देखे गये थे
तू देखा गया था	तुम देखे गये थे
वह देखा गया था	वे देखे गये थे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी गई थी	हम देखी गई थीं
तू देखी गई थी	तुम देखी गई थीं
वह देखी गई थी	वे देखी गई थीं

४ संदिग्धभूत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा गया होऊंगा	हम देखे गये होवेंगे
तू देखा गया होगा	तुम देखे गये होओगे
वह देखा गया होगा	वे देखे गये होवेंगे

२३४ हेतुहेतुमद्भूत और जिन कालों की क्रिया उस से निकलती है उन्हें लिखते हैं॥

१ हेतुहेतुमद्भूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता	हम देखे जाते
तू देखा जाता	तुम देखे जाते
वह देखा जाता	वे देखे जाते

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती	हम देखी जातीं
तू देखी जाती	तुम देखी जातीं
वह देखी जाती	वे देखी जातीं

२ सामान्यवर्तमान काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता हूं	हम देखे जाते हैं
तू देखा जाता है	तुम देखे जाते हो
वह देखा जाता है	वे देखे जाते हैं

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती हूं	हम देखी जाती हैं
तू देखी जाती है	तुम देखी जाती हो
वह देखी जाती है	वे देखी जाती हैं

३ अपूर्णभूत काल ।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता था	हम देखे जाते थे
तू देखा जाता था	तुम देखे जाते थे
वह देखा जाता था	वे देखे जाते थे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती थी	हम देखी जाती थीं
तू देखी जाती थी	तुम देखी जाती थीं
वह देखी जाती थी	वे देखी जाती थीं

४ संदिग्धवर्त्तमान काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाता होऊंगा	हम देखे जाते होवेंगे
तू देखा जाता होगा	तुम देखे जाते होओगे
वह देखा जाता होगा	वे देखे जाते होवेंगे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाती होऊंगी	हम देखी जाती होवेंगी
तू देखी जाती होगी	तुम देखी जाती होओगी
वह देखी जाती होगी	वे देखी जाती होवेंगी

२३५ जिन कालों की क्रिया धातु से निकलती हैं उन्हें लिखते हैं॥

१ विधि क्रिया।

मैं देखा जाऊं	हम देखे जावें
तू देखा जा	तुम देखे जाओ
वह देखा जावे	वे देखे जावें
आदरपूर्वक विधि।	परोक्ष विधि।
देखे जाइये	देखे जाइयो

२ संभाव्यभविष्यत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाऊं	हम देखे जावें वा जायें
तू देखा जावे वा जाय	तुम देखे जाओ वा जावो
वह देखा जावे वा जाय	वे देखे जावें वा जायें

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाऊं	हम देखी जावें वा जायें
तू देखी जावे वा जाय	तुम देखी जाओ वा जावो
वह देखी जावे वा जाय	वे देखी जावें वा जायें

३ सामान्यभविष्यत काल।

पुल्लिङ्ग

मैं देखा जाऊंगा	हम देखे जावेंगे वा जायेंगे
तू देखा जावेगा वा जायगा	तुम देखे जाओगे वा जावेगे

वह देखा जावेगा वा जायगा — वे देखे जावेंगे वा जायेंगे

स्त्रीलिङ्ग

मैं देखी जाऊंगी — हम देखी जावेंगी वा जायेंगी
तू देखी जावेगी वा जायगी — तुम देखी जाओगी वा जावोगी
वह देखी जावेगी वा जायगी — वे देखी जावेंगी वा जायेंगी

२३६ कह आये हैं कि सामान्यभूत काल की क्रिया बनाने की यह रीति है कि हलन्त धातु के एकवचन में आ और बहुवचन में ए लगा देते हैं परंतु एक हलन्त धातु की क्रिया है अर्थात करना और पांच स्वरान्त धातु की क्रिया हैं अर्थात देना पीना लेना होना और जाना जिनकी भूतकालिक क्रिया पूर्वोक्त साधारण रीति के अनुसार बनाई नहीं जातीं उनकी आदरपूर्वक विधि और परोक्षविधि क्रिया भी साधारण रीति के अनुरोध नहीं होतीं इस कारण उन्हें नीचे के चक्र में एकत्र लिख देते हैं ॥

साधारणरूप	सामान्यभूत काल।				आदरपूर्वकविधि	परोक्ष विधि
	एकवचन		बहुवचन			
	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		
करना	किया	की	किये	कीं	कीजिये	कीजियो
देना	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये	दीजियो
पीना	पिया	पी	पिये	पीं	पीजिये	पीजियो
लेना	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये	लीजियो
होना	हुआ	हुई	हुए	हुईं	हूजिये	हूजियो
जाना	गया	गई	गये	गईं		

२३७ जान पड़ता है कि संस्कृत धातु कृ के कुछ विकार करने से हिन्दी की दो एकार्थक क्रिया निकली हैं अर्थात कीना और करना इन के सामान्यभूत और आदरपूर्वक विधि क्रिया ये हैं ॥

करना का सामान्यभूत करा आदरपूर्वक विधि करिये
कीना „ „ किया „ „

२३८ इन दिनों में करा और करिये ये रूप प्रचलित नहीं हैं पर उनके स्थान में किया और कीजिये ऐसे रूप होते हैं। कीना भी अप्रचलित हुआ है परंतु उसकी जगह में करना आता है ॥

२३९ देना पीना लेना होना इन चारों की भूतकाल और विधि क्रिया के बनाने में जो विशेषता होती है सो प्राय: उच्चारण की सुगमता के निमित्त है ॥

२४० बुद्धि में आता है कि दो एकार्थक संस्कृत धातु अर्थात या और गम् से जाना क्रिया के समस्त रूप बन गये हैं या के यकार को ज आदेश करके ना चिन्ह लगाने से साधारण रूप जाना बनता है जिसकी सामान्यभूत काल की क्रिया अर्थात गया गम् से निकली है ॥

२४१ भया यह एक क्रिया है जो भूतकाल छोड़ के और किसी काल में नहीं होती। संभव है कि संस्कृत धातु भू से निकली है वा होना धातु के सामान्यभूत के ही दोनों रूप हैं अर्थात कोई हुआ और कोई २ इसी को भया भी कहते हैं ॥

२४२ कह आये हैं कि क्रिया दो प्रकार की होती है अकर्मक और सकर्मक इनको छोड़ के और भी एक प्रकार की क्रिया है जिसे प्रेरणार्थक कहते हैं इस कारण कि उस से प्रेरणा समझी जाती है ॥

प्राय: अकर्मक क्रिया से सकर्मक और सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया बनतीं अब उनके बनाने की रीति बताते हैं ॥

२४३ अकर्मक को सकर्मक बनाने की साधारण रीति यह है कि धातु के अंत्य व्यंजन से आ मिला देते हैं और अकर्मक को प्रेरणार्थक रचने के लिये वा मिलाया जाता है। यथा

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
दबना	दबाना	दबवाना
बजना	बजाना	बजवाना
लगना	लगाना	लगवाना

२२४ प्रायः तीन अक्षरकी सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया ऊपरकी रीतिके अनुसार बनाईजाती है परन्तु सकर्मकके बनाने में दूसराअक्षर हल होजाता है अर्थात उसके स्वरका लोप होताहै । जैसे

अकर्मक ।	सकर्मक ।	प्रेरणार्थक ।
चमकना	*चम्काना	चमकवाना
पिघलना	पिघ्लाना	पिघलवाना
बिथरना	बिथ्राना	बिथरवाना
भटकना	भट्काना	भटकवाना
सरकना	सर्काना	सरकवाना
लटकना	लट्काना	लटकवाना

२४५ यदि दो अक्षर का अकर्मक धातु हो और उनके बीच में दीर्घस्वर रहे तो उसे ह्रस्व करके आ और वा मिला देने से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं । जैसे

अकर्मक ।	सकर्मक ।	प्रेरणार्थक ।
घूमना	घुमाना	घुमवाना
जागना	जगाना	जगवाना
जीतना	जिताना	जितवाना
डूबना	डुबाना व डबोना	डुबवाना
भीगना	भिगाना वा भिगोना	भिगवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना

२४६ कई एक सकर्मक और कई एक अकर्मक धातु हैं जिनका स्वर ह्रस्व करके ला और लवा लगाने से द्विकर्मक और प्रेरणार्थक बन जाती हैं । यथा

सकर्मक ।	द्विकर्मक ।	प्रेरणार्थक ।
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना

*इन में हल का लक्षण लिखा है परन्तु लिखनेवाले की इच्छा है चाहे लिखे चाहे न लिखे ॥

सीना	सिलाना	सिलवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
बैठना	बिठाना	बिठवाना
*रोना	रुलाना	रुलवाना

२४७ कितने एक अकर्मक धातु के पहिले अक्षर के स्वर को दीर्घ कर देने से सकर्मक क्रिया हो जाती है परंतु प्रेरणार्थक के रचने में स्वर का विकार नहीं होता केवल वा के मिलाने से बन जाती है। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
कटना	काटना	कटवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
गड़ना	गाड़ना	गड़वाना
पलना	पालना	पलवाना
मरना	मारना	मरवाना
लदना	लादना	लदवाना

२४८ कोई २ सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया नियम विरुद्ध हैं। जैसे

अकर्मक।	सकर्मक।	प्रेरणार्थक।
छुटना	छोड़ना	छुड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़वाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
रहना	रखना	रखवाना

२४९ आना जाना सकना होना आदि कितनी एक ऐसी अकर्मक क्रिया हैं जिन से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया नहीं बनती हैं॥

---

*खाना और लेना इनके द्विकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया ऊपर की रीति के अनुसार बनती हैं परंतु उनके पहिले अक्षर का स्वर इ हो जाता है जैसे खाना खिलाना लेना लिवाना॥

संयुक्त क्रियाओं के विषय में।

२५० हिन्दी में अनेक क्रिया होती हैं जो और क्रियाओं से मिलके आती हैं और नवीन अर्थ को उत्पन्न करती हैं ऐसी क्रियाओं को संयुक्त क्रिया कहते हैं। संयुक्त क्रिया में प्रायः दो भिन्न क्रिया होती हैं परंतु कहीं कहीं तीन २ आती हैं॥

२५१ चेत रखना चाहिये कि संयुक्त क्रिया के आदि की क्रिया मुख्य है उसी से संयुक्त क्रिया का अर्थ समझा जाता है और उसी के अनुसार संयुक्त क्रिया अकर्मक वा सकर्मक जानी जाती है॥

२५२ संयुक्त क्रिया नाना प्रकार की हैं पर उनकी मुख्य क्रिया को मान करके उनके तीन भाग किये हैं। पहिला भाग वह है जिस में आदि की क्रिया धातु के रूप से आती है। दूसरा भाग वह है जिस में आदि की क्रिया सामान्यभूत के रूप से रहती है। और तीसरा भाग वह है जिस में आदि की क्रिया अपने साधारण रूप से होती है॥

२५३ पहिले उन्हें लिखते हैं जिन में मुख्य क्रिया धातु के रूप से आती हैं वे तीन प्रकार की हैं अर्थात अवधारणबोधक शक्तिबोधक और पूर्णताबोधक॥

२५४ १ अवधारणबोधक—आना उठना जाना डालना देना पडना बैठना रहना लेना ये सब और क्रियाओं के धातु से मिलके आती हैं। देना और लेना अपने २ धातु से भी मिलके आती हैं। जैसे

देख-आना	गिर-पड़ना
बोल-उठना	मार-बैठना
खा -जाना	हो -रहना
काट-डालना	पढ़-लेना
रख -देना	दे - देना
चल -देना	ले - लेना

२५५ २ शक्तिबोधक—सकना क्रिया परतंत्र कहाती है इस कारण कि वह अकेली नहीं आती पर और क्रियाओं के धातु से मिलके शक्तिबोधक हो जाती है। जैसे

चल -सकना बोल-सकना
चढ़ -सकना उठ -सकना
लिख-सकना दे -सकना

२५६ ३ पूर्णताबोधक—और क्रियाओं के धातु के साथ चुकना क्रिया के आने से पूर्णताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है । जैसे

खा -चुकना कह-चुकना
मार -चुकना हो -चुकना
देख -चुकना कर -चुकना

२५७ जिन में मुख्य क्रिया सामान्यभूत काल के रूप से आती हैं वे दो प्रकार की हैं अर्थात नित्यताबोधक और इच्छाबोधक ॥

२५८ १ नित्यताबोधक—सामान्यभूत कालिक क्रिया के साथ लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार करना क्रिया के आने से नित्यताबोधक क्रिया हो जाती है । जैसे

किया-करना कहा -करना
दिया-करना * आया-करना
देखा-करना आया जाया-करना

२५९ २ इच्छाबोधक — सामान्यभूत कालिक क्रिया से परे चाहना क्रिया के लगाने से व्यापार करने को कर्त्ता की इच्छा जानी जाती है । जैसे

आया-चाहना बोला-चाहना
*जाया-चाहना मारा-चाहना
देखा-चाहना सीखा-चाहना

२६० इस प्रकार की संयुक्त क्रिया से कहीं २ ऐसा बोध भी होता है कि क्रिया का व्यापार होने पर है । जैसे वह गिरा चाहता है वह मरा चाहता है घड़ी जा चाहती है इत्यादि ॥

२६१ संयुक्त क्रिया जिन में आदि की क्रिया साधारण रूप से आती है सो दो प्रकार की हैं अर्थात आरम्भबोधक और अवकाशबोधक ॥

---

* जाना की सामान्यभूत कालिक क्रिया का साधारण रूप गया होता है किन्तु संयुक्त क्रियाओं में गया नहीं परंतु जाया नित्य आता है ॥

२६२ १ आरम्भबोधक—मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश कर लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार लगना क्रिया के मिलाने से आरम्भबोधक क्रिया हो जाती है। जैसे

आने -लगना	बोने-लगना
चलने -लगना	सोने-लगना
देने -लगना	होने-लगना

२६३ २ अवकाशबोधक — मुख्य क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ए आदेश करके देना वा पाना क्रिया के लगाने से लिङ्ग वचन और पुरुष के अनुसार अवकाशबोधक क्रिया बनती है। जैसे

जाने -देना	आने -पाना
बोलने-देना	उठने-पाना
सोने -देना	चलने-पाना

२६४ ध्यान-करना-भय-खाना चुप-रहना सुध-लेना इत्यादि भिन्न क्रिया हैं। बोलना-चालना देखना-भालना चलना-फिरना कूदना-फांदना समझना-बूझना इत्यादि एकार्थक ही दो क्रिया हैं॥

इति क्रिया प्रकरण॥

छठवां अध्याय॥

कृदन्त के विषय में।

२६५ क्रिया से परे जो ऐसे प्रत्यय होते हैं कि जिन से कर्त्तृत्व आदि समझे जाते हैं तो उन्हें कृत कहते हैं और कृत के आने से जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रियावाचक संज्ञा कहते हैं इस कारण कि प्रायः क्रिया के सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं॥

२६६ हिन्दी में पांच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात कर्त्तृवाचक कर्मवाचक करणवाचक भाववाचक और क्रियाद्योतक। उनके बनाने की रीति नीचे लिखते हैं॥

१ कर्त्तृवाचक।

२६७ कर्त्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस से कर्त्तापन का बोध होता है। उनके बनाने की रीति यह है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य ए आदेश करके उसके आगे हारा वा वाला लगा देते हैं। जैसे

मारनेहारा वा मारनेवाला बोलनेहारा वा बोलनेवाला इत्यादि ॥ कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग हो तो हारा और वाला के अंत के आ को ई कर देते हैं। जैसे मारनेहारी बोलनेवाली ॥

२६८ क्रिया के धातु से भी अक इया वा वैया प्रत्यय करने से कर्त्तृवाचक संज्ञा हो जाती हैं। जैसे पालने से पालक पूजने से पूजक जड़ने से जड़िया लखने से लखिया जलने से जलवैया जीतने से जितवैया इत्यादि ॥

२६९ यदि धातु का स्वर दीर्घ हो तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व कर देते हैं। जैसे खाने से खवैया गाने से गवैया आदि जानो ॥

२ कर्मवाचक।

२७० कर्मवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके कहने से कर्मत्व समझा जाता है वह सकर्मक ही क्रिया से बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि सकर्मक क्रिया के साधारण रूप के चिन्ह ना को पुल्लिङ्ग में आ और स्त्रीलिङ्ग में ई आदेश कर देते हैं अथवा उस रूप के साथ हुआ लगा देते हैं। जैसे देखा देखी वा देखा हुआ देखी हुई किया करेवा किया हुआ की हुई आदि ॥

३ भाववाचक।

२७१ कह आये हैं कि भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस के कहने से पदार्थ का धर्म वा स्वभाव समझा जाय अथवा जिस से किसी व्यापार का बोध हो। व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकार से बनाई जाती हैं। जैसे

२७२ १ बहुधा क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके जो रह जाती है वही भाववाचक संज्ञा है। जैसे बोल दौर पुकार समझ मान चाह लूट आदि ॥

२७३ २ कहीं कहीं साधारण रूप के ना को आव आदेश करने से भाववाचक संज्ञा हो जाती है। जैसे बिकाव मिलाव चढ़ाव आदि ॥

२७४ ३ कहीं कहीं क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ का लोप करने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे लेन देन खान पान आदि ॥

२७५ ४ कहीं २ क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके आई के लगाने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे बोआई सुनाई ठगाई दिखाई इत्यादि ॥

२७६ ३ कहीं कहीं क्रिया के साधारण रूप के ना का लोप करके वट वा हट प्रत्यय करने से भाववाचक संज्ञा होती है। जैसे बनावट रंगावट सिखावट चिल्लाहट झंझनाहट इत्यादि ॥

४ करणवाचक ।

२७७ करणवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिसके कहने से ज्ञात होता है कि जिसके द्वारा कर्त्ता व्यापार को सिद्ध करता है। उसके बनाने की यह रीति है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य आ को ई आदेश कर देते हैं। जैसे ओढ़नी कतरनी कुरेलनी घोटनी ढकनी खोदनी इत्यादि ॥

२७८ कहीं कहीं क्रिया से धातु से आ लगा देते हैं। जैसे घेरा फेरा झूला आदि। कोई कोई धातु हैं जिन से ना प्रत्यय करने से करण वाचक संज्ञा हो जाती है। जैसे बोलना इत्यादि ॥

५ क्रियाद्योतक ।

२७९ क्रियाद्योतक संज्ञा उसे कहते हैं जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे उसके बनाने की यह रीति है कि क्रिया के साधारण रूप के अंत्य ना को ता करने से क्रियाद्योतक संज्ञा हो जाती है अथवा उसके आगे हुआ लगा देते हैं। जैसे देखता वा देखता हुआ बोलता वा बोलता हुआ मारता वा मारता हुआ इत्यादि ॥

सातवां अध्याय

अथ कारक प्रकरण ।

२८० व्याकरण के उस भाग को कारक कहते हैं जिस में पदों की अवस्थाओं का वर्णन होता है ॥

प्रथम अर्थात कर्त्ता कारक ।

२८१ प्रातिपदिकार्थ अर्थात संज्ञा के अर्थ की उपस्थिति जहां नियम पूर्वक रहती है वहां प्रथम अर्थात कर्त्ता कारक होता है। जैसे बुद्ध देव ऊंचा नीचा आदि ॥

२८२ जहां पर लिङ्ग वा परिमाण अथवा संख्या का प्रकाश करना अपेक्षित रहता है वहां प्रथम कारक बोला जाता है। जैसे लड़का लड़की आध पाव घी आध सेर चीनी एक दो बहुत इत्यादि ॥

२८३ क्रिया के व्यापार का करनहारा जब प्रधान * अर्थात उक्त होताहै तब प्रथम कारक रहताहै। जैसे बालक खेलता है लडकियां धोड़ती थीं वृक्ष फलेगा इत्यादि॥

२८४ क्रियाके व्यापार का फल जिस में रहता है वह जब उक्त होजाताहै तब उसमें प्रथम कारक होताहै। जैसे पोथी बनाई जाती है वृत्तान्त लिखे जाते हैं॥

२८५ उद्देश्य विधेयभावमें अर्थात जब संज्ञा संज्ञाका विशेषणहो जाती है विधेयवाचक संज्ञा का कर्ता कारकहोताहै। जैसे ज्ञान सब से उत्तम धनहै सोना रूपा लोहा आदि धातु कहाते हैं उसका हृदय पत्थर होगया है॥

२८६ यदि एकही कर्त्ता की दो वा अधिकक्रियाहों तो कर्त्ता केवल प्रथम क्रियाके साथ उक्त होताहै शेष क्रियाओं के साथ उसका अध्याहार किया जाताहै। जैसा वह दिन दिन खाता पीता सोता जागता है वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते हैं॥

द्वितीय अर्थात कर्म कारक।

२८७ क्रियाके व्यापार का फल जिसमें रहे और वह अनुक्त होवे तो उसमें द्वितीय कारक होजाता है। जैसे आमको खाताहै तारों को देखता है फूलों को बटोरता है॥

---

*ध्यान रखना चाहिये कि कर्ता दो प्रकारका है प्रधान और अप्रधान। प्रधान उस कर्त्ता को कहते हैं जिसके लिंग वचन और पुरुषके अनुसार क्रिया के लिंग आदि होते हैं। जैसे गुरु चेलों को सिखाता है इस वाक्य में गुरु प्रधान कर्ता है इसकारण कि जो लिंग आदि उस में हैं सोही क्रियामें हैं। अप्रधान कर्ताके साथ ने चिन्ह आताहै और उसकी क्रिया के लिंग और वचन कर्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार होते हैं। जैसे पण्डितने पोथी लिखी लड़केने लड़की मारी उसने घोड़े भेजे। जब कर्म कारक अपने चिन्ह को के साथ आता है तब क्रिया सामान्य पुल्लिङ्ग अन्यपुरुष एक वचनमेंहोतीहै कर्म पुल्लिङ्ग हो वा स्त्रीलिंग हो। जैसे पण्डित ने पोथी को लिखाहै लड़की ने रोटी को खायाहै॥

२८८ अपादान आदि कारक की विवक्षा जब नहीं होती और कर्म नहीं रहता है तो वहां अपादान आदि कारकों के स्थानमें मुख्य कर्म को छोड़कर द्वितीय कारक होजाता है। जैसे आज मेरी गैया को कौन दुहैगा अर्थ यहहै कि मेरी गैया से आज दूध को कौन दुहेगा॥

२८९ कर्म कारक का चिन्ह को बहुधा लोप होताहै परन्तु उसके लोप करने की कोई दृढ़ रीति नहीं है। कोई २ वैयाकरण समझते हैं कि उसका लाना और न लाना विवक्षा के आधीनहै परन्तु औरों की बुद्धि में सामान्य वर्णन वा विशेष वर्णन मानकर उसका लोपकरना वा उसे लाना चाहिये। जैसे वह तुलसीदास के रामायण को पढ़ता है यहां विशेष रामायण अर्थात तुलसीकृत रामायणकी चर्चा है वाल्मीकी की नहीं॥

२९० अप्राणी वाचक संज्ञाका कर्मकारकहो तो प्रायः चिन्ह रहित होगा। जैसे मैं चिट्ठी लिखताहूं तुम जाके काम करो वह फल तोड़ता है इत्यादि। व्यक्तिवाचक अधिकारवाचक और व्यापार कर्तृवाचक संज्ञा के कर्म में प्रायः को लगाना चाहिये। जैसे मोहनलालको बलाओ चौधरी को भेजदेना वह अपने दास को मारताहै इत्यादि॥

२९१ यदि एकही वाक्यमें कर्म कारक और संप्रदान कारक भी आवें तो उच्चारण की सुगमता के निमित्त प्रायः कर्म के चिन्ह का लोप होता है। जैसे दरिद्रों को दान दो॥

तृतीय अर्थात करणकारक।

२९२ जिसके द्वारा कर्ता क्रियाको सिद्ध करताहै उसे करण कहते हैं करण में तृतीय कारक होता है। जैसे लेखनी से लिखते हैं पांव से चलते हैं छूरीसे आम को काटते हैं खड्गसे शत्रुओं को मारते हैं॥

२९३ हेतु द्वारा और कारण इनके योगमें तृतीय कारक होताहै। जैसे इस हेतु से मैं वहां नहीं गया आलस्य के हेतुसे वह समय पर न पहुंचा वह अपनी अज्ञानता के कारण उसे समझ नहीं सकता इस कारण से उसका निवारण मैं नहीं करसकता ज्ञानके द्वारा मोक्ष होता है मंत्री के द्वारा राजासे भेंटहुई॥

२६४ विशेषता यह है कि जब हेतु वा कारण के साथ योग होता है तो कारक के चिन्ह का लोप वक्ता की इच्छा के आधीन रहता है परंतु जब द्वारा शब्द का संयोग रहे तो अवश्य कारक के चिन्ह का लोप करना उचित है ॥

२६५ क्रिया करने की रीति वा प्रकार के बताने में करण कारक आता है। जैसे उसने उन पर क्रोध से दृष्टि की वह सारी शक्ति से यत्न करता है जो कुछ तुम करो सो अन्तःकरण से करो इस रीति इस प्रकार से ॥

२६६ मूल्यवाचक संज्ञा में प्रायः करण कारक होता है। जैसे कल्याण कञ्चन से मोल नहीं सकते अनाज किस भाव से बेचते हैं दो सहस्र रुपैयों से हाथी मोल लिया ॥

२६७ जिस से कोई वस्तु अथवा व्यक्ति उत्पन्न होवे उसको करण कारक कहते हैं। जैसे कपास ऊन आदि से वस्त्र बनता है दूध से घी उत्पन्न होता है ज्ञान से सामर्थ्य प्राप्त होता है आप से आप कुछ नहीं हो सकता है ॥

२६८ किसी क्रिया का कर्त्ता जब उक्त नहीं रहता तो उस कर्त्ता में तृतीय कारक होता है। जैसे मुझ से तड़के नहीं उठा जाता। यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसके कर्म में प्रथम कारक होगा। जैसे तुम से यह नहीं मारा जायगा। यदि क्रिया द्विकर्मक होवे तो उसके मुख्य कर्म में प्रथम कारक होगा परंतु गौण कर्म जो सम्प्रदान कारक के रूप से आता है उसे द्वितीय कारक होगा। जैसे मुझ से पैसे उसको नहीं दिये जाते ॥

२६९ इस कारक के चिन्ह का लोप अनेक स्थानों में होता है। जैसे न आंखों देखा न कानों सुना मेरे हाथ चिट्ठी भेजता है ॥

चतुर्थ अर्थात सम्प्रदान कारक।

३०० जिसके लिये देते हैं उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थ कारक होता है। जैसे दरिद्रों को धन दो हमको पीने का जल दो इत्यादि ॥

३०१ जिस लिये वा जिसके निमित्त कुछ किया जाता है उसके प्रकाश करने में सम्प्रदान कारक होता है। जैसे भोजन बनाने को

(को जनाने के लिये) बनिये से सौदा तौलाते हैं वे स्नान को गये हैं वे हमसे मिलने को आते थे ॥

३०२ योग्यता उपयुक्तता औचित्य आदि के बताने में यह कारक आता है । जैसे यह तुमको योग्य नहीं है यह तुमको उचित नहीं है लड़कों को चाहिये कि माता पिता की आज्ञा को मानें ॥

३०३ कहीं २ आवश्यकता के प्रकाश करने में चतुर्थ कारक होता है । जैसे अब मुझको जाना है तुमको आना होगा उसको अब पाठ सीखना है ॥

३०४ नमस्कार स्वस्ति आदि शब्द के योग में चतुर्थ कारक होता है । जैसे राजा और प्रजा के लिये स्वस्ति हो आपको नमस्कार श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये नमः । विशेष यह है कि प्रायः हिन्दी में भी नमः के साथ योग होने से संस्कृत का ही चतुर्थ्यन्त पद बोलते हैं । जैसे प्रायः पुस्तकों में श्रीपरमात्मने नमः इत्यादि लिखते हैं ॥

पञ्चम अर्थात अपादान कारक ।

३०५ विभाग के स्थान का ज्ञान जिस से होता है उसे अपादान कहते हैं अपादान में पञ्चम कारक होता है । जैसे पर्वत से गिरा है घर से आया है नगर से गया है ॥

३०६ भिन्नता परिचय अपेक्षा अर्थ का बोध हो तो अपादान कारक होगा । जैसे यह उस से जुदा है यह इस से भिन्न है जिसको वेदान्तियों के सब सिद्धान्तों से अच्छा परिचय होगा वह ऐसी शङ्का में न पड़ेगा दयानन्द स्वामी से मेरा परिचय हुआ है बुद्धिमान शत्रु बुद्धिहीन मित्र से उत्तम है धन से विद्या श्रेष्ठ है ॥

३०७ परे रहित आदि शब्द के संयोग में पञ्चम कारक होता है । जैसे मेरे घर से परे वाटिका है नदी से परे कोस भर पर मेरा मित्र रहता है हमारे माता पिता अब चलने फिरने से रहित हो गये हैं यह मनुष्य विद्या से रहित है ॥

३०८ निर्धारण अर्थ से अर्थात जब वस्तुओं के समूह में से एक वस्तु वा व्यक्ति का निश्चय किया जाता है तो अधिकरण और अपादान दोनों की विभक्तियां आती हैं । जैसे पर्वतों में से हिमालय अच्छा है कवियों में से कालिदास अच्छा है ॥

षष्ठ अर्थात सम्बन्ध कारक ।

३०९ जिस कारक से स्वत्व स्वामित्व प्रकाशित होता है उसे सम्बन्ध कहते हैं । सम्बन्ध में छठा कारक होता है । जैसे राजा की सेना पण्डित का पुत्र लड़के के कपड़े इत्यादि ॥

३१० कार्य कारण में भी सम्बन्ध होता है । जैसे बालू की भीत सोने के कड़े चांदी की डिबिया मिट्टी का घड़ा पृथिवी का खण्ड ॥

३११ तुल्य समान सदृश आधीन आदि शब्द के योग में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे यह उसके तुल्य नहीं है पृथिवी गेंद के समान गोल है उसका मुंह चांद के सदृश है मैं आज्ञा के अनुसार सब कुछ करूंगा स्त्रियों को चाहिये कि अपने २ पति के आधीन रहें ॥

३१२ कर्त्तृकर्मभाव सेव्यसेवकभाव जन्यजनकभाव और अंगांगिभाव में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे तुलसीदास का रामायण बिहारी की सतसई महाराजा की सेना रानी की बेटी सिर का बाल हाथ की उंगली इत्यादि ॥

३१३ परिमाण मूल्य काल वयस योग्यता शक्ति आदि के प्रकाश करने में सम्बन्ध कारक होता है। जैसे दो हाथ की लाठी बड़े पाट की नदी कोस भर की सड़क बारह एक बरस की लड़की यह तीस बरस की बात है यह कहने के योग्य नहीं है यह राज्य अब ठहरने का नहीं है ॥

३१४ समस्तता भेद समीपता आधीनता आदि के प्रकाश करने में सम्बन्ध कारक होता है । जैसे खेत का खेत सब के सब आकाश और पृथिवी का भेद मैं उसके घर के समीप गया ॥

३१५ केवल धातु वा भाववाचक के प्रयोग में सकर्मक क्रिया के कर्म को सम्बन्ध कारक होता है। जैसे रोटी का खाना गांव की लूट ॥

सप्तम अर्थात अधिकरण कारक ।

३१६ क्रिया का जो आधार है उसे अधिकरण कहते हैं । अधिकरण में सप्तम कारक बोलते हैं । जैसे वह घर में है पेड़ पर पक्षी हैं वह नदी तीर पै खड़ा है ॥

३१७ आधार तीन प्रकार का है औपश्लेषिक वैषयिक और अभिव्यापक। औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिसके किसी अवयव से संयोग हो। जैसे वह चटाई पर बैठता है वह बटलोही में रींधता है। वैषयिक उस आधार का नाम है जिस से विषय का बोध हो। जैसे मोक्ष में उसकी इच्छा लगी है अर्थात उसकी इच्छा का विषय मोक्ष है। और अभिव्यापक वह आधार है जिस में आधेय संपूर्ण रूप से व्याप्त हो। जैसे आत्मा सब में व्याप्त है बन से दूर वा निकट* ॥

३१८ निर्धारण अर्थ में अधिकरण होता है। जहां अनेक के मध्य में एक का निश्चय होता है वहां निर्धारण जानो। जैसे पशुओं में हाथी बड़ा है पत्थरों में हीरा बहुमूल्य है ॥

३१९ हेतु के प्रकाश करने में सप्तम और पञ्चम दोनों कारक होते हैं। जैसे ऐसा करो जिस में वह कार्य सिद्ध हो वा ऐसा कहो जिस से प्रयोजन सिद्ध हो ॥

आठवां अध्याय ॥

तद्धित प्रकरण।

३२० तद्धित उसे कहते हैं जिस से संज्ञा के अंत में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं। जो हिन्दी में व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखते हैं ॥

३२१ तद्धित के प्रत्यय से अपत्यवाचक कर्तृवाचक भाववाचक ऊन वाचक और गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती हैं। जैसे

३२२ १ अपत्यवाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती हैं। नामवाचक के पहिले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होने से जैसे शिव से शैव विष्णु से वैष्णव गोतम से गौतम मनु से मानव वशिष्ठ से वाशिष्ठ महानन्द से महानन्दी रामानन्द से रामानन्दी हुआ है ॥

३२३ २ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जिस से किसी क्रिया के व्यापार का कर्ता समझा जाय संज्ञा से हारा वाला और इया इन प्रत्ययों

---

* तत्वकौमुदी सू० ५९६ ।

के लगाने से बनती है। जैसे चुरिहारा दूधवाला अढ़तिया मछनिया इत्यादि ॥

३२४ ३ भाववाचकसंज्ञा और संज्ञा से इन प्रत्ययों के लगाने से बनती हैं जैसे आई ई त्व ता पन पा वट हट। उनके उदाहरण ये हैं चतुराई बोआई लड़काई लम्बाई मनुष्यत्व स्त्रीत्व उत्तमता मित्रता बालकपन बुढ़ापा बनावट कड़वाहट चिकनाहट इत्यादि ॥

३२५ ४ ऊनवाचक संज्ञा प्रायः आ को ई आदेश करने से हो जाती है। जैसे रस्सा रस्सी गोला गोली लड़का लड़की टोकड़ा टोकड़ी डाला डाली इत्यादि ॥

३२६ कहीं २ अक वा इया के लगाने से भी ऊनवाचक संज्ञा बनती है। जैसे मानव मानवक वृत्त वृत्तक खाट खटिया डिब्बा डिबिया आम अंबिया इत्यादि ॥

३२७ ५ गुणवाचक संज्ञा तद्धित की रीति से उत्पन्न होती है नीचे के प्रत्ययों के लगाने से। जैसे

आ—ठण्ढ ठण्ढा प्यास प्यासा भूख भूखा मैल मैला इत्यादि ॥

इक—यह प्रत्यय प्रायः संस्कृत गुणवाचक संज्ञाओं का है। संज्ञा के पहिले अक्षर का स्वर वृद्धि से दीर्घ करके इक लगाते हैं जैसे प्रमाण से प्रामाणिक शरीर से शारीरिक संसार से सांसारिक स्वभाव से स्वाभाविक धर्म्म से धार्म्मिक हुआ है ॥

इत—आनन्द आनन्दित दुःख दुःखित क्रोध क्रोधित शोक शोकित ॥

इय वा इया—समुद्र समुद्रिय झांझ झंझिया खटपट खटपटिया ॥

ई—ऊन ऊनी धन धनी धर्म धर्मी भार भारी बल बली ॥

ईला एला वा ऐला-सज सजीला रंग रंगीला घर घरेला बन बनेला ॥

लु लू वा ल—दया दयालु झगड़ा झगड़ालू कृपा कृपाल ॥

वन्त—कुल कुलवन्त बल बलवन्त दया दयावन्त ॥

वान—आशा आशावान क्षमा क्षमावान ज्ञान ज्ञानवान रूप रूपवान ॥

इति तद्धितप्रकरण ॥

नवां अध्याय ॥

समास के विषय में ।

३२८ विभक्ति सहित शब्द पद कहाता है । यथा प्रत्येक पद में विभक्ति होती है । कभी दो तीन आदि पद अपनी २ विभक्ति त्याग करके मिल जाते हैं उनके मिलाने से एक शब्द बन जाता है जिस में विभक्ति का रूप नहीं परंतु उसका अर्थ रहता है । जैसे प्रेमसागर इस उदाहरण में दो शब्द हैं अर्थात प्रेम और सागर उनका पूरा रूप यह था कि प्रेम का सागर पर का के लोप करने से प्रेमसागर एक शब्द बन गया । इसी रीति से तीन आदि पद के योग को भी समास कहते हैं ॥

३२९ समास छः प्रकार के होते हैं अर्थात १ कर्मधारय २ तत्पुरुष ३ बहुव्रीहि ४ द्विगु ५ द्वन्द्व ६ अव्ययीभाव ॥

३३० १ कर्मधारय समास उसे कहते हैं जिस में विशेषण का विशेष्य के साथ सामानाधिकरण्य हो । जैसे परमात्मा महाराज सज्जन नीलकमल चन्द्रमुख इत्यादि ॥

३३१ २ तत्पुरुष समास वह है जिस में पूर्व पद कर्त्ता छोड़ के दूसरे कारक की विभक्ति से युक्त हो और पर पद का अर्थ प्रधान होवे तत्पुरुष समास में प्रायः उत्तर पद प्रधान होता है इस कारण कि स्वतन्त्रता से उन्हीं का अन्वय क्रिया में होता है । जैसे प्रियवादी नरेश इन में वादी और ईश शब्द प्रधान हैं पूर्व पद का अन्वय क्रिया में नहीं है । इसी रीति से हिमालय जन्मस्थान विद्याहीन बुद्धिरहित यज्ञस्तम्भ शरणागत ग्रामवास इत्यादि जानो ॥

३३२ ३ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन आदि पद मिलके समस्त पद के अर्थबोध के साथ और किसी पद से सम्बन्ध रखे । जैसे नारायण चतुर्भुज । इन शब्दों का अर्थ है जल स्थान और चार बांह परंतु इन से विष्णु ही का बोध होता है अर्थात जिसका जल स्थान है और चार बांह हैं वह विष्णु समझा जाता है । बहुव्रीहि समास से जो पद सिद्ध होता है वह प्रायः विशेषण हो जाता

है और बिशेष्य के लिङ्ग विभक्ति और वचन प्राप्त करता है । इसी रीति से दिगम्बर मृगलोचन पीताम्बर श्यामकर्ण दुराचार दीर्घबाहु इत्यादि जानो ॥

३३३ ४ द्विगु समास उसे कहते हैं जिस में पूर्व पद संख्यावाचक हो उत्तर शब्द चाहे जैसा हो । यह समास बहुधा समाहार अर्थ में आता है । यथा चतुर्युग चतुर्वर्ण त्रिलोक त्रिभुवन पञ्चरत्न इत्यादि ॥

३३४ ५ द्वन्द्व समास उसे कहते हैं जहां जिन पदों से समास होता है उन सभों का अन्वय एक ही क्रिया में हो । जैसे हाथ पांव बांधो इस उदाहरण में हाथ और पांव दोनों का अन्वय बांधो क्रिया के साथ है । इसी रीति से पितामाता गुरुशिष्य रातदिन जाति कुटुम्ब अन्नजल लेनदेन इत्यादि जानो ॥

३३५ ६ अव्ययीभाव समास वह है जिस में अव्यय के साथ दूसरे शब्द का योग हो यह क्रियाविशेषण होता है । जैसे अतिकाल अनुरूप निर्भय यथाशक्ति प्रतिदिन इत्यादि ॥

दसवां अध्याय ॥

अव्यय के बिषय में ।

३३६ कह चुके हैं कि अव्यय उसे कहते हैं जिस में लिङ्ग वचन वा कारक के कारण विकार नहीं होता अर्थात जिसका स्वरूप सदा एकसा रहता है । जैसे अब और वा भी फिर इत्यादि ॥

३३७ अव्यय छः प्रकार के हैं १ क्रियाविशेषण २ सम्बन्धवाचक ३ उपसर्ग ४ योजक ५ विभाजक और ६ विस्मयादिबोधक ॥

१ क्रियाविशेषण ।

३३८ क्रियाविशेषण उसे कहते हैं जिस से क्रिया का विशेष काल वा भाव वा रीति आदि का बोध होता है वह चार प्रकार का है १ काल-वाचक २ स्थानवाचक ३ भाववाचक ४ परिमाणवाचक । इन में से जो मुख्य और बोलचाल में बहुधा आते हैं उन्हें नीचे लिखते हैं ॥

कालवाचक।

अब परसों सर्वदा
तब तरसों निदान
कब नरसों वारंवार
जब तड़के तुरन्त
आज सवेरे पश्चात
कल प्रातः एकदा
फिर सदा सनातन

स्थानवाचक।

यहां उधर आसपास
वहां किधर सर्वत्र
कहां जिधर निकट
जहां तिधर समीप
तहां वार नेरे
इधर पार दूर

भाववाचक।

अकस्मात निकट निरर्थक
अचानक निरन्तर हां
अर्थात यद्यपि अवश्य
केवल यथार्थ तो
क्यों वृथा भी
ज्यों यों न
त्यों परस्पर नहीं
झटपट शीघ्र मत
ठीक सचमुच मानों
तथापि सेंतमेंत स्वयं

परिमाणवाचक।

अति कुछ एकबेर
अत्यन्त बिरले दोबेर

अधिक	बहुत	तनिक
अतिशय	प्राय:	इत्यादि

३३९ कई एक क्रियाविशेषण के अंत में निश्चय जनाने के लिये ही वा हीं लाते हैं। जैसे अभी तभी कभी जभी योंहीं वहीं। कई एक दोहराकर बोले जाते हैं और बहुधा अनेक क्रियाविशेषण एक साथ आते हैं। जैसे

कभी कभी	अब तक	जहां कहीं
जहां जहां	कब तक	जब कभी
बेर बेर	कभी नहीं	कहीं नहीं
कहीं कहीं	ऐसा वैसा	और कहीं
अब तब	ज्यों ज्यों	त्यों त्यों

३४० अनिश्चय जनाने को दो समान अथवा असमान क्रियाविशेषण के मध्य में न लगा देते हैं। जैसे

कभी न कभी   कहीं न कहीं   जब न तब

३४१ कितने एक क्रियाविशेषण हैं जो संज्ञा के तुल्य विभक्ति के साथ आते हैं। जैसे कि इन उदाहरणों में यहां की भूमि अच्छी है अब की बेर देख लूं मैं उधर से आता था यह आज का काम है कि कल का॥

३४२ गुणवाचक संज्ञा भी क्रियाविशेषण हो जाती हैं जैसे इसको धीरे धीरे सरकाओ पेड़ों को सीधे लगाते जाओ वह अच्छा चलता है वह सुन्दर सीती है॥

३४३ बहुतेरे अव्यय शब्दों के साथ करके पूर्वक से आदि के लगाने से क्रिया विशेषण हो जाते हैं। जैसे इन वाक्यों में एक राजा ने विनय पूर्वक फिर कहा आलस्य से काम करता है जो राजा बुद्धि से चलता है वह सुख से राज्य करता है॥

२ सम्बन्धसूचक।

३४४ सम्बन्धसूचक अव्यय उन्हें कहते हैं जिस से बोध होता है कि संज्ञा में और वाक्य के दूसरे शब्दों में क्या सम्बन्ध है। वे दो प्रकार के हैं पहिले वे जिनके पूर्व संज्ञा की विभक्ति नहीं आती। जैसे रहित

सहित समेत सुधां लौं इत्यादि । दूसरे वे जिनके पूर्व संज्ञा के सम्बन्ध कारक की विभक्ति आती है । जैसे

आगे	पास	बाहिर	तुल्य
पीछे	संग	विषय	बायां
ऊपर	साथ	बदले	दहिना
नीचे	भीतर	तले	बीच

३४५ ऊपर के लिखे हुए शब्द सचमुच अधिकरणवाची संज्ञा हैं पर उनके अधिकरण चिन्ह के लोप करने से वे अव्यय होगये हैं। जैसे आगा शब्द अधिकरण की विभक्ति सहित तो आगे में होगया फिर अधिकरण के चिन्ह में का लोप किया तो हुआ आगे जैसा देवमन्दिर घर के आगे में है फिर अधिकरण के चिन्ह में का लोप करके तो रहा देवमन्दिर घर के आगे है । ऐसे ही सर्वत्र जानो ॥

३ उपसर्ग

३४६ नीचे के लिखे हुए अव्यय शब्द संस्कृत और हिन्दी में उपसर्ग कहाते हैं । उपसर्ग संस्कृत में प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं ॥

३४७ कहीं दो कहीं तीन और कहीं चार उपसर्ग भी एकत्र होते हैं । जैसे विहार व्यवहार सुव्यवहार समभिव्याहार आदि ॥

३४८ उपसर्ग द्योतक हैं वाचक नहीं अर्थात जिस क्रिया से युक्त होते हैं उसी के अर्थ का प्रकाश करते हैं पर असंयुक्त होके निरर्थक रहते हैं । कहीं ऐसा होता है कि उपसर्ग के आने से पदका अर्थ बदल जाता है । जैसा दान आदान इत्यादि ॥

३४९ उपसर्ग के प्रधान अर्थ वा भाव जो संयोग में उत्पन्न होते हैं नीचे लिखते हैं ॥

प्र—अतिशय गति यश उत्पत्ति व्यवहार आदि का द्योतक है। जैसे प्रणाम प्रस्थान प्रसिद्ध प्रभृति प्रयोग इत्यादि ॥

परा—प्रत्यावृत्ति नाश अनादर आदिका द्योतक है । जैसे पराजय पराभव परास्त इत्यादि ॥

अप—हीनता वैरूप्य अंश का द्योतक है। जैसे अपयश अपनाम अपवाद अपलक्षण अपशब्द इत्यादि ॥

सम्—संयोग आभिमुख्य उत्तमता आदि का द्योतक है। जैसे सम्बन्ध संमुख सन्तुष्ट संस्कृत इत्यादि ॥

अनु—सादृश्य पश्चात अनुक्रम आदि का द्योतक है। जैसे अनुरूप अनुगामी अनुभव अनुताप इत्यादि ॥

अव—अनादर अंश का द्योतक है। जैसे अवज्ञा अवगुण अवगीत अवधारण इत्यादि ॥

निस्—निषेध का द्योतक है। जैसे निराकार निर्दोष निर्जीव निर्भय निस्सन्देह इत्यादि ॥

दुस्—कष्ट दुष्टता निन्दा आदि का द्योतक है। जैसे दुर्गम दुस्त्यज दुर्जन दुर्दशा दुर्बुद्धि दुर्नाम इत्यादि ॥

वि—भिन्नता हीनता असादृश्यता आदि का द्योतक है। जैसे वियोग विरूप विदेह विवर्ण विलक्षण इत्यादि ॥

नि—निषेध अवरोध आदि का द्योतक है। जैसे निवारण निकृति निरोध इत्यादि ॥

अधि—उपरिभाव प्रधानता स्वामित्व आदि का द्योतक है। जैसे अधिराज अधिकार अधिरथ इत्यादि ॥

अति—अतिशय उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे अतिकाल अतिभाव अतिगुप्त इत्यादि ॥

सु—उत्तमता श्रेष्ठता सुगमता आदि का द्योतक है। जैसे सुजाति सुपुत्र सुलभ इत्यादि ॥

कु—बुराई दुष्टता आदि का द्योतक है। जैसे कुकर्म कुपुत्र कुजाति इत्यादि ॥

उत्—उच्चता उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे उदय उदाहरण उत्पत्ति इत्यादि ॥

अभि—प्रधानता समीपता भिन्नता इच्छा आदि का द्योतक है। जैसे अभिजात अभिप्राय अभिमत अभिक्रम अभिगमन इत्यादि ॥

प्रति—प्रत्येकता सादृश्यता बिरोध आदि का द्योतक है। जैसे प्रतिदिन प्रतिशब्द प्रतिवादी इत्यादि ॥

परि—सर्वतोभाव अतिशयत्याग आदि का द्योतक है। जैसे परिपूर्ण परिजन परिच्छेद परिहार इत्यादि॥

उप—समीपता निकृष्टता आदि का द्योतकहै। जैसे उपवन उपग्रह उपपत्ति इत्यादि॥

आ—सीमा ग्रहण विरोध आदि का द्योतक है। जैसे आभोग आकार आदान आगमन आरोग्य इत्यादि॥

अ—रहितता निषेध आदिका द्योतकहै। जैसे अबल अक्षय अपवित्र। स्वरादि शब्द के आगे के आने से अन् हो जाता है। जैसे अनादि अनन्त अनुचित अनेक इत्यादि॥

सह वा स—संयोग सङ्गति आदि का द्योतकहै। जैसे सहकर्मी सह गमन सहचर साकार सचेत इत्यादि॥

४ समुच्चयबोधक।

३५० जो शब्द दो पदों वा वाक्यों वा वाक्यों के अंशके मध्यमें आतेहैं और प्रत्येक पद के भिन्न क्रिया सहित अन्वयका संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहतेहैं। जैसे

संयोजक शब्द।		विभाजक शब्द।
औ	यथा	वा
और	यदि	अथवा
एवं	जो	क्या—क्या
अथ	भी	परंतु
कि	पुनर	पर
तो		किन्तु
		चाहे
फिर		जो

५ विस्मयादिबोधक शब्द।

३५१ विस्मयादिबोधक अव्यय उसे कहते हैं जिससे अन्तःकरण का भाव वा दशाप्रकाशित होताहै वे नाना प्रकार के हैं। जैसे पीड़ा वा क्लेश बोधक यथा आह ऊह अहह आहा ओहो होहो हाय हाय बाह बाह वा त्राहि त्राहि बापरे अहहह मैयारे बप्पारे। आनन्द वा

आश्चर्य्यबोधक यथा वाह वाह धन्य धन्य जय जय । लज्जा वा निरादर बोधक यथा छी छी धिक् फिश दूर इत्यादि जानो ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

अथ वाक्यविन्यास ।

३५२ वाक्यविन्यास व्याकरण के उस भाग को कहते हैं जिस में शब्दों के द्वारा वाक्य बनाने की रीति बताई जाती है ॥

३५३ पहिले की लिखी हुई रीतियों से जिन शब्दों को सिद्ध कर आये हैं उन्हें वाक्य में किस क्रम से रखना चाहिये इसका कोई नियम बतलाया नहीं गया इसलिये उसे अब लिखते हैं जिसे जानकर जहां जो पद रखने के योग्य है उसे वहां रखें ॥

३५४ पदों के उस समूह को वाक्य कहते हैं जिसके अंत में क्रिया रहकर उसके अर्थ को पूर्ण करती है। वाक्य में प्रत्येक कारक न चाहिये परंतु कर्त्ता और क्रिया के बिना वाक्य नहीं बनता ॥

३५५ जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं और जो कहा जाता है वही विधेय कहाता है। जैसे घास उगती है घोड़ा दौड़ता है ॥

३५६ उद्देश्य और विधेय दोनों को विशेषण के द्वारा हम बढ़ा सकते हैं। जैसे हरी घास शीघ्र उगती है काला घोड़ा अच्छा दौड़ता है ॥

३५७ समझना चाहिये कि जब वाक्य में केवल कर्त्ता और क्रिया दो ही होते हैं तब कर्त्ता उद्देश्य और क्रिया विधेय रहती है। जैसे आंधी आती है यहां आंधी उद्देश्य है और आना क्रिया उसके ऊपर विधेय है ऐसे ही और भी जानो ॥

३५८ यदि कर्त्ता को कहकर उसका विशेषण क्रिया के पूर्व रहे तो कर्त्ता को उद्देश्य करके उसके विशेषण सहित क्रिया को उस पर विधेय जानो। जैसे नगरों में कूए का पानी खारा होता है। इस वाक्य में कर्त्ता जो पानी है उस पर उसके विशेषण खारा के साथ होना क्रिया विधेय है ॥

३५९ यदि एक क्रिया के दो कर्त्ता वा दो कर्म होवें और परस्पर एक दूसरे के विशेष्य विशेषण न हो सकें तो पहिली संज्ञा को उद्देश्य और दूसरी संज्ञा सहित क्रिया को विधेय जानो। जैसे वह लड़का राजा हो गया यह मनुष्य पशु है वह पुरुष स्त्री बन गया है ॥

पदयोजना का क्रम।

३६० साधारण रीति यह है कि वाक्य के आदि में कर्त्ता और अंत में क्रिया और यदि और कारकों का प्रयोजन पड़े तो उन्हें कर्त्ता और क्रिया के बीच में लिखो। जैसे स्त्री सूई से कपड़ा सीती है कपोत अपनी चोंच से दानों को बीन २ कर खाता है॥

३६१ जो पद कर्त्ता से सम्बन्ध रखते हैं उन्हें कर्त्ता के निकट रखो और क्रिया के साथ जिसका सम्वन्ध हो उसे क्रिया के संग लगाओ। जैसे मेरा घोड़ा देखने में अति सुन्दर है बुड्ढा माली पेड़ों से प्रतिदिन फल तोड़ता है॥

३६२ यदि वाक्य में कर्त्ता और क्रिया को छोड़कर और भी संज्ञा वा विशेषण रहें और उनके साथ दूसरे शब्दों के लिखने की आवश्यकता पड़े तो जो पद जिस से सम्वन्ध रखता हो उसे उसके संग जोड़ दो। जैसे ग्रामीण मनुष्य नागौरी बैल के समान परिश्रमी होते हैं दरिद्र मनुष्य को कंकरेली धरती ही रेशमी बिछौना है॥

३६३ गुणवाचक शब्द प्रायः अपनी संज्ञा के पूर्व और क्रियाविशेषण क्रिया के पूर्व आता है। जैसे बड़ी लकड़ी बहुत कम मिलती है मोटी रस्सी बड़ा बोझ भली भांति सम्भालती है॥

३६४ पूर्वकालिक क्रिया उस क्रिया के निकट रहती जिस से वाक्य समाप्त होता है। जैसे लड़का आंख मूंदकर सोता है ब्राह्मण पलथी बांधकर रोटी खाता है॥

३६५ अवधारण विशेषता वा छंद की पूर्णता के लिये सब शब्द निज स्थान को छोड़ कर वाक्य के दूसरे २ स्थानों में आते हैं। जैसे

सिया सहित रघुपति पद देखी।
करि निज जन्म सुफल मुनि लेखी॥

३६६ प्रश्नवाचक सर्वनाम को उसी स्थान पर रखना चाहिये जिसके बिषय में मुख्यता पूर्वक प्रश्न रहे और यदि वाक्य ही पूरा प्रश्न हो तो उसे वाक्य के आदि में लिखना चाहिये। जैसे क्या यह वही है जिसे तुमने देखा था यह कौन पुस्तक है उसे किसे दोगे यह क्या करती है इत्यादि॥

३६७ जहां प्रश्नवाचक शब्द नहीं रहता उस वाक्य में बोलनेवाले की चेष्टा वा उसके उच्चारण के स्वरभेद से प्रश्न समझा जाता है। जैसे वह आया है मैं जाऊं घंटा बजा है मुझे डराते हो यें हाट बन्ध हो गई ॥

३६८ सकर्मक धातु की भूतकालिक क्रिया को छोड़कर शेष क्रिया के लिङ्ग और वचन कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के समान होते हैं। यह बात केवल कर्तृप्रधान क्रिया की है। जैसे नदी बहती है लड़के खेलते हैं राजा दण्ड देगा ॥

३६९ यदि सकर्मक क्रिया हो और काल भूत हो तो पूर्वोक्त रीति के अनुसार कर्त्ता के आगे ने आवेगा और यदि कर्म का चिन्ह लुप्त हो तो क्रिया के लिङ्ग वचन कर्म के अनुसार होंगे नहीं तो कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार। जैसे लड़की ने घोड़े देखे लड़के ने पोथी पढ़ी कुक्कुटी ने अण्डे दिये बकरियों ने खेत चरा पिता ने पुत्र को पाया रानी ने सहेलियों को बुलाया इत्यादि ॥

३७० यदि एक ही क्रिया के अनेक कर्त्ता रहें और वे लिङ्ग में समान न होवें तो क्रिया में बहुवचन होगा और लिङ्ग उसके अन्तिम कर्त्ता के समान रहेगा। जैसे पृथ्वी चंद्रमा और सब ग्रह सूर्य के आस पास घूमते हैं घोड़े बैल और बकरियां चरती हैं ॥

३७१ यदि अनेक लिङ्ग में असमान कर्त्ता और क्रिया के मध्य में समुदायवाचक कोई पद आपड़े तो क्रिया पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होगी। जैसे नर नारी राजा रानी सब के सब बाहर निकले हैं ॥

३७२ जो वाक्य में कई एक संज्ञा रहें और उनके समुच्चायक से एकवचन समझा जाय तो क्रिया में एकवचन होगा। जैसे धन जन स्त्री और राज्य मेरा क्यों न गया चार मास और तीन बरस इसके करने में लगा है ॥

३७३ यदि वाक्य में एक क्रिया के अनेक कर्त्ता रहें और उनके समुच्चायक से बहुवचन विवक्षित होवे तो क्रिया में बहुवचन होगा। जैसे इसके मोल लेने में मैंने चार रुपैये सात आने छ दाम दिये हैं ॥

३७४ आदर के लिये क्रिया में बहुवचन होता है चाहे आदरसूचक शब्द कर्त्ता के साथ रहे चाहे न रहे। जैसे लाला जी आये हैं पण्डित जी गये हैं तुम क्या कहते हो ॥

३७५ जो उद्देश्य बहुतरहें और विधेय एकहो तो अन्तिमउद्देश्य का लिंगहोगा और विधेय संज्ञा हो तो विधेय के अनुसार लिंगवचन होगा। जैसे कश्मीर के लड़के लड़कियां सुन्दर होतीहैं घास पेड़ बूटी लता बल्ली बनस्पति कहाती हैं ॥

३७६ यदि एकही क्रिया के अनेक कर्त्ता हों और उनके बीच में विभाजक शब्दरहे तो क्रिया एकबचनान्त होगी। जैसे मेराघोडा वा खेत आज बेचा जायगा मुझे न भूख न प्यास लगती है ॥

३७७ यदि एकक्रिया के उत्तम मध्यम और अन्य पुरुष कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी। जैसे हम और तुम चलेंगे तू और मैं पढ़ूंगा वे और हम तुम सुनेंगे ॥

३७८ यदि किसी क्रिया के मध्यम और अन्यपुरुष कर्त्ता रहें तो क्रिया मध्यम पुरुषके अनुरोध से होगी। जैसे वह और तुम चलो वे और तुम पढ़ो ॥

विशेष्य और विशेषण का वर्णन।

३७९ वाक्यमें जो प्रधान अर्थात मुख्य संज्ञा रहतीहै उसेविशेष्य कहतेहैं और उसकेगुण बतानेवाले शब्दको विशेषण। जैसे यहयशस्वी पुरुषहै। यहां पुरुषप्रधान अर्थात मुख्य संज्ञा है इसलिये उसेविशेष्य कहते हैं और उसकेगुणका बतानेवाला यशस्वी शब्द अप्रधान अर्थात सामान्यवचाकहै इसलिये उसकोविशेषणकहतेहैं। ऐसेहीसर्वत्र जानो ॥

३८० कहीं२ केवलविशेषण आजाताहै। जैसे ज्ञानियों को ऐसा करना उचित नहींहै। यहां उसके विशेष्य मनुष्यशब्द का अध्याहार होताहै ऐसेही और भी जानो ॥

३८१ केवल आकारान्त गुणवाचक शब्दोंमें विशेषता होतीहै कि प्रधान कर्त्ता के एक वचन को छोड़कर और शेष कारकों के एकवचन बहुवचन में आ को ए होजाता है। जैसे ऊंचे पेड़ लम्बे मनुष्यों को सुन्दर स्त्री सुन्दर लड़का सुन्दर बन ॥

३८२ यदिआकारान्त गुणवाचक स्त्रीलिंग शब्दका विशेषण होकर आवे तो सब कारकोंमें उसके आ को ई होती है। जैसे मोटी रस्सी मोटी रस्सियां मोटी रस्सी से मोटी रस्सियों से ॥

३८३ जब गुणवाचक शब्द अपने विशेष्य के साथ आता है तब उस में न तो कारक न बहुवचन के चिन्ह रहते हैं केवल विशेष्य के आगे आते हैं। जैसे मोटियां रस्सियां मोटियों रस्सियों से ऐसा कहना अशुद्ध है। परंतु विशेष्य बोला न जाय और विशेषण ही दीख पड़े तो कारक के चिन्ह और आदेश भी बने रहते हैं। जैसे दीनों को मत सताओ भूखों को खिलाते हैं धनियों का आदर बहुत होता है निर्बलों की सहायता करो॥

३८४ जब कर्म कारक का चिन्ह नहीं रहता तो विशेषण कर्म के अनुसार होता है। जैसे मैंने लाठी सीधी की घोड़ी निकालके घर के साम्हने खड़ी करो। परंतु जब कर्म कारक का चिन्ह देख पड़ता है तब विशेषण कर्त्ता के अनुसार होता है। जैसे तुमने कांटों को क्यों टेढ़ा किया काठ के रङ्ग को और गहरा कर दो॥

३८५ यदि अकर्मक क्रिया के भिन्न २ लिङ्ग के अनेक कर्त्ता हों जिनका विशेषण भी मिले तो उस में अंत्य कर्त्ता का लिङ्ग होगा। जैसे उस घर के पत्थर चूना और ईंट अच्छी हैं मेरा पिता माता और दोनों भाई जीते हैं सांवला लड़का और उसकी गोरी बहिनें दौड़ती आती हैं॥

३८६ कर्तृवाचक कर्मवाचक और क्रियाद्योतक संज्ञा भी विशेषण होके आती हैं और उन में वही नियम होते हैं जो ऊपर लिख आये हैं। जैसे लिखनेवाले रामानन्द को बुलाओ गानेवाली लड़की के साथ मरा हुआ घोड़ा खेत में पड़ा है निकाला हुआ घोड़ा बाहर लाओ हिलती हुई डाली से फल गिरता है। इस में हिलती हुई क्रियाद्योतक संज्ञा है और वह अपने विशेष डाली की क्रिया बताती है ऐसे ही सर्वत्र॥

३८७ संख्यावाचक शब्द भी संख्यापूर्वक प्रत्यय आ अथवा वां के आने से संज्ञा का विशेषण होता है। और जो नियम आकारान्त गुण-वाचक के हैं सो उस में भी लगते हैं। जैसे तीसरी लड़की चौथे लड़के की पोथी सातवें मास का नवां दिन दसवीं स्त्री से॥

३८८ एक विशेष्य के अनेक अकारान्त विशेषण हों तो सब में वही लिङ्ग वचन होग जो संज्ञा का है। जैसे वड़ी लम्बी कड़ी बड़े ऊंचे पेड़ पर स्वप्न में बड़ी ऊंची डरावनी मूर्त्ति मेरे संमुख आई॥

३८९ कह आये हैं कि उस पद के समुदायक को वाक्य कहते हैं जिसके अंत में क्रिया रहकर उसके अर्थ को पूर्ण करती है। वह कर्तृप्रधान और कर्मप्रधान के भेद से दो प्रकार का होता है॥

१ कर्तृप्रधान वाक्य।

३९० कर्त्ता अपने अपेक्षित कारक और क्रिया के साथ जब रहता है तो वह वाक्य कहाता है। उस में जो और शब्दों की आवश्यकता हो तो ऐसे शब्द आवेंगे जिनका आपस में सम्बन्ध रहेगा। जैसे बढ़ई ने बड़ीसी नाव बनाई है लेखक ने सुन्दर लेखनी से मेरे लिये पोथी लिखी है इत्यादि॥

३९१ जो ऐसे शब्द वाक्य में पड़ेंगे कि जिनका परस्पर कुछ सम्बन्ध न रहे तो उन से कुछ अर्थ न निकलेगा इस कारण वह वाक्य अशुद्ध होगा॥

२ कर्मप्रधान वाक्य।

३९२ जैसे कर्तृप्रधान वाक्य में कर्त्ता अवश्य रहता है वैसे ही कर्मप्रधान वाक्य में कर्म का रहना आवश्यक है क्योंकि यहां कर्म ही कर्त्ता के रूप से आया करता है। इस से यह रीति है कि पहिले कर्म और अंत में क्रिया और अपेक्षित कारक और विशेषण सब बीच में अपने २ सम्बन्ध के अनुसार रहें। जैसे पर्वत में से सोना चांदी आदि निकाली जाती हैं बड़े बिचार से यह सुन्दर ग्रन्थ भली भांति देखा गया॥

३९३ यह भी जानना चाहिये कि जैसे कर्तृप्रधान क्रिया में कर्त्ता प्रधान रहता है और कर्मप्रधान क्रिया में कर्म वैसे ही भावप्रधान क्रिया में भाव ही प्रधान हो जाता है।

३९४ जहां अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान क्रिया के समान आता है और कर्त्ता भी करण कारक के चिन्ह से के साथ मिले वहां भावप्रधान जानो। जैसे उस से बिना बोले कब रहा जायगा मुझ से रात को जागा नहीं जाता इत्यादि॥

३९५ धातु के अर्थ को भाव कहते हैं वह एक है और पुल्लिङ्ग भी है इसलिये भावप्रधान क्रिया में भी एक ही वचन होता है और वह क्रिया पुल्लिङ्ग रहती है॥

13

३९६ यद्यपि इस क्रिया का प्रयोग हिन्दी भाषा में बहुत नहीं आता तथापि नहीं के साथ इसे बहुत बोलते हैं और इस से केवल भाव अर्थात व्यापार का बोध होता है ॥

३९७ यद्यपि ऊपर के लिखे हुए नियमों को पढ़ने से कोई ऐसी विशेष बात नहीं बच रहती जिसके निमित्त कुछ लिखना पड़े तथापि वाक्य-विन्यास में ये तीन बातें मुख्य हैं आकांक्षा योग्यता और आसत्ति जिनके बिन जाने वाक्य बनाने में कठिनता होती है ॥

३९८ १ एक पद की दूसरे पद के साथ अन्वय के लिये जो चाह रहती है उसे आकांक्षा कहते हैं । जैसे गैया घोड़ा हाथी पुरुष यह वाक्य नहीं कहाता है क्योंकि आकांक्षा नहीं है परंतु चरती दौड़ता नहाता सोता इन क्रियाओं के लगाने से वाक्य बन जाता है इसलिये कि अन्वय के लिये इनकी चाह अपेक्षित है ॥

३९९ २ परस्पर अन्वित होने में अर्थ बोध के औचित्य को योग्यता कहते हैं । जैसे यदि कोई कहे कि आग से सींचते हैं तो यह भी वाक्य न होगा क्योंकि सींचना क्रिया की योग्यता आग के साथ बाधित होती है । इस कारण जल से सींचता है यह वाक्य कहाता है ॥

४०० ३ पदों के सान्निध्य को प्रत्यासत्ति कहते हैं अर्थात जिस पद का अन्वय जिस शब्द के साथ अपेक्षित हो उनके बीच में बहुत से काल का व्यवधान न पड़ने पावे नहीं तो भोर के बोले हुए कर्तृपद के साथ सांझ के उच्चरित क्रिया पद का अन्वय हो जायगा । जैसे रामदास भोर चोर मार पीट लेन देन आग पानी घी चीनी इसको कहके सांझ को आओ हुआ पकड़ा होती है करते हैं ले जाओ ऐसा कहा यह वाक्य न कहावेगा ॥

॥ इति वाक्यविन्यास ॥

बारहवां अध्याय ॥

अथ छन्दोनिरूपण ॥

(१) छन्द का लक्षण यह है कि जिस में मात्रा या वर्ण की गिनती रहती है और प्रायः उस में चार पाद होते हैं ॥

(२) वर्ण दो प्रकार के होते हैं अर्थात गुरु और लघु एक मात्रिक को लघु द्विमात्रिक को गुरु कहते हैं ॥

(३) अनुस्वार और विसर्ग करके युक्त जो लघु है उसको गुरु कहते हैं और पद के अन्त में और संयोग के पूर्व में रहनेवाले को भी गुरु बोलते हैं और स्वरूप उसका वक्र लिखा जाता है जैसा कि ऽ यह चिन्ह है और लघु का स्वरूप एक सीधी पाई जैसे । यह है ॥

(४) वर्णवृत्तों में आठ गण होते हैं और प्रत्येक गण तीन २ वर्णों का माना गया है १ मगण २ नगण ३ भगण ४ यगण ५ जगण ६ रगण ७ सगण ८ तगण ॥

(५) तीन गुरु का मगण होता है और तीन लघु का नगण होता है और आदिगुरु भगण और आदिलघु यगण मध्यगुरु जगण मध्यलघु रगण और अन्तगुरु सगण और अन्तलघु तगण कहाते हैं ॥ इन में मगण नगण भगण और यगण ये चारों छन्द के आदि में शुभ हैं और शेष चारों अशुभ । जैसे

मगण	= ऽ ऽ ऽ	ये चारों शुभ हैं
नगण	= । । ।	
भगण	= ऽ । ।	
यगण	= । ऽ ।	
जगण	= । ऽ ।	ये चारों अशुभ हैं
रगण	= ऽ । ऽ	
सगण	= । । ऽ	
तगण	= ऽ ऽ ।	

(६) और मात्रावृत्त के पांच गण हैं अर्थात ट ठ ड ढ ण इन में छ मात्रा का टगण और पांच मात्रा का ठगण और चार मात्रा का डगण और तीन मात्रा का ढगण और दो मात्रा का णगण होता है ॥

(७) और टगण के तेरह भेद हैं और ठ के आठ और ड के पांच और ढ के तीन और णगण के दो भेद हैं ॥

जैसे छ मात्रा के टगण का उदाहरण ।

इसकी यह रीति है कि गुरु हों तो ऊपर नीचे दोनों ओर अंक देता जाय और लघु के ऊपर ही लिखे जिसका क्रम यह है कि पहिले एक लिखे फिर दो फिर एक और दो को मिलाके तीन लिखे फिर दो और तीन मिला के पांच लिखे फिर तीन और पांच मिलाके आठ लिखे फिर पांच और आठ मिलाके १३ लिखे इसी प्रकार पूर्व पूर्व का अंक जोड़ता जाय अन्त में जो अंक आवें उतने ही जाने। जैसे १ ३ ८ १ २ ३ ५ ८ १३
ऽ ऽ ऽ । । । । । ।
२ ५ १३

(८) प्रस्तार बनाने की यह रीति है कि प- ऽ ऽ ऽ
हिले सब गुरु रखना फिर पहिले गुरु के । । ऽ ऽ
नीचे लघु लिखना और आगे जैसा ऊपर । ऽ । ऽ
हो वैसा ही लिखता जाय जो मात्रा बचे । । । । ऽ
उसे पीछे गुरु लिखकर लघु लिखे यदि । ऽ ऽ ।
एक ही मात्रा बचे तो लघु ही लिखे दो ऽ । ऽ ।
बचे तो १ गुरु लिखे तीन बचे तो गुरु ऽ ऽ । ।
लिखके लघु लिखे चार बचे तो दो । । ऽ । ।
गुरु लिखे पांच बचे दो गुरु लिखके लघु । ऽ । । ।
लिखे इत्यादि । फिर उसके नीचे जो ऽ । । । ।
पहिला गुरु हो तो उसके नीचे लघु लिखे । । । । । ।
आगे ऊपर के समान जो बचे सो पूर्वोक्त
रीति से लिखे इसी प्रकार जब तक सब लघु न हो जायं तब तक बराबर लिखना चला जावे। जैसे कि पृष्ठ की दहिनी ओर पर लिखा हुआ है ॥

(६) छन्दों का मूल यह है कि वर्णवृत्त में एक वर्ण से लेकर छब्बीस वर्ण लों के एक २ चरण होते हैं उनके प्रस्तार निकालने की यह रीति है कि एक चरण में जितने अक्षर हों उन्हें लिखकर उनके ऊपर क्रम से द्विगुणोत्तर अंक लिखता जाय फिर अन्तिम वर्ण के ऊपर जो संख्या आवे उसका दुगुणा प्रस्तार का प्रमाण बतावे। जैसे मध्या का प्रस्तार वा भेद जानना है तो ऽ ऽ ऽ ऐसा लिखकर द्विगुणोत्तर अंक दिया १ २ ४ / ऽ ऽ ऽ अन्त में ४ आया उसका दूना किया तो हुए ८ इसे ही मध्या का प्रस्तार जानो॥

नष्ट अर्थात प्रस्तार में चौथा भेद जानना होवे
उसके निकालने की रीति॥

(१०) प्रत्येक वर्ण के प्रस्तार में प्रश्नकर्त्ता के प्रत्येक प्रश्नविषयिक रूप जानने की यह रीति है कि जो प्रश्न का अंक सम हो तो पहिले लघु लिखे और जो विषम हो तो गुरु लिखे फिर उसका आधा करे विषम हो तो उस में जोड़ दे फिर आधा करे और सम हो तो योंही आधा करे और आधा किये पर जब सम रहे तब लघु लिख दे और विषम रहे तो गुरु ऐसे ही बराबर आधा करता जाय और जब २ विषम आवे तब २ उस में एक जोड़ कर आधा किया करे और जब तक वर्ण संख्या पूरी न हो तब तक लिखा करे। जैसे किसी ने पूछा कि आठ वर्ण के प्रस्तार में ८६ वां रूप कैसा होता है तो ८६ सम है इसलिये पहिले १ लघु लिखा फिर आधा किया तो हुए ४३ सो विषम है इस कारण १ गुरु लिखा और विषम है इस हेतु एक जोड़ दिया तो हुए ४४ आधा किया २२ हुए सो सम है इस से फिर एक लघु लिखा और आधा किया हुए ११ यह विषम है इस निमित्त एक गुरु लिखकर एक उस में जोड़ दिया तो हुए १२ आधा किया ६ हुए सो सम है इस हेतु एक लघु लिखा आधा किया ३ हुए सो विषम है इस से एक लिखा और एक जोड़ दिया ४ हुए आधा किया २ रहे सम है एक लघु लिख लिया आधा किया १ रहा सो विषम है गुरु लिखा तो ऐसा रूप हुआ। ऽ। ऽ। ऽ। ऽ यदि प्रश्नकर्त्ता के उक्त अंक की पूर्णता न होवे और अन्त में आकर एक ही रहजाय तो उस में एक जोड़दे और आधा करे फिर उस में १ जोड़ता जाय जब

प्रश्नकर्ता के कहे हुए अंक तक पहुंचे तब बस करे । जैसे आठ वर्णों के प्रस्तार में तीसरा रूप कौन है तो ३ विषम है इस से एक गुरु ले लिया एक और जोड़ा ४ हुए आधा किया २ हुए सो सम है एक लघु लिखा आधा किया १ रहा सो विषम एक गुरु लिखा और एक जोड़ दिया तो २ हुए आधा किया १ रहा विषम है एक गुरु लिखा एक जोड़ा २ हुए आधा किया १ रहा सो विषम है इस हेतु एक गुरु लिखा एक जोड़ा इसी प्रकार जब तक आठ वर्ण पूरे न हुए तब तक लिखते गये तो ऐसा रूप हुआ । जैसे ऽ।ऽऽऽऽऽऽ

उद्दिष्ट अर्थात जब कोई रूप लिखकर पूछे कि यह कौथा रूप है तो उसके बताने की रीति ॥

(११) जब कोई पूछे कि अमुक रूप कौथा है तो उसके ऊपर द्विगुण अंक लिख दे और लघु के ऊपर के अंक में एक मिला दे फिर जितना हो उसे ही उसका रूप जाने । जैसे किसी ने पूछा कि यह

१ २ ४ ८ १६ ३२
ऽ । ऽ । ऽ ऽ

कौथा रूप है तो लघु के ऊपर दो अंक है अर्थात २ और ८ इन का योग किया तो हुए १० इस में एक मिलाया तो हुए ११ इस से जाना कि छ वर्णों के प्रस्तार में यह ग्यारहवां रूप हुआ इसे क्रिया करके उद्दिष्ट की विधि से मिलाया चाहे तो ग्यारह विषम है इससे गुरु लिखकर उस में एक जोड़ दिया १२ हुए आधा किया ६ रहे तब लघु लिखा आधा किया तो ३ रहे विषम है गुरु लिखा १ मिलाया ४ हुए आधा किया २ रहे सम है लघु लिखा फिर आधा किया १ रहा विषम है गुरु लिखा एक जोड़ा २ हुए आधा किया सम है लघु लिया इसी प्रकार छ वर्ण तक करते गये तो भी वही रूप निकला । जैसे ऽ। ऽ।ऽऽ॥

अब उन वृत्तों के प्रस्तार का नियम लिखा जाता है जो मात्रा से बनते हैं ॥

(१२) प्रश्नकर्त्ता जितनी मात्रा का प्रश्न करे उतनी मात्रा लिखले और उनके ऊपर पूर्व से युग्मांक लिखता जाय फिर चौथा रूप पूछा गया हो उस संख्या को अंत के अंक में घटा दे जो शेष रहे उस में यदि पूर्व

अंक घट सकता हो तो उसे घटा दे फिर उस अंक की अगली और पिछली कलाओं को मिलाकर नीचे गुरु लिख दे और फिर जब निश्शेष न हो और कुछ शेष बचता जाय तो ऐसे ही जो पूर्व का अंक हो और वह घट सके तो घटा दे और उसके आगे पीछे की कलाओं को मिला दे और उसके नीचे गुरु लिख दे इसी प्रकार जब तक निश्शेष न होय तब तक लिखता और ऐसा करता चला जाय तो अभीप्सित प्रस्तार निकल आवेगा। जैसे

१ २ ३ ५ ८ १३
। । । ।__। ।
ऽ

यहां अन्तिम संख्या १३ है इस में ८ घटाया तो बचे ५ में पूर्व का अंक ५ घटा दिया तो निश्शेष हो गया तो ऐसा रूप हुआ जैसे ।।। ऽ । यदि किसी ने छठा रूप पूछा तो अन्तिम संख्या १३ में गये छ रहे ७ इस में पूर्व अंकों में ५ घट सकता है इस से उसे घटा दिया रहे २ इस में पूर्व अंक जो २ उसे घटाया तो निश्शेष हो गया अब इसका रूप ऐसा हुआ। जैसे

१ २ ३ ५ ८ १३
। ।__। ।__। ।
ऽ ऽ

इसे इकट्ठा कर लिया तो ऐसा । ऽ ऽ । हुआ ऐसे ही और भी जानो छ मात्रा के प्रस्तार के आठवें रूप का यह चित्र है। और छठे रूप का चित्र यह है।

१ २ ३ ५ ८ १३	
। । । । । ।	रूप
१ २ ३ ५ ८ १३	
। । । ।__। ।	मेल
। । । ऽ । ।	फल

१ २ ३ ५ ८ १३	
। । । । । ।	रूप
। ।__। ।__। ।	मेल
। ऽ ऽ ।	फल

अब एक वर्ण से लेकर पचास वर्ण पर्यन्त जिनके एक चरण होते हैं उनके प्रस्तार के निकालने की रीति यह है॥

(१३) जिस वृत्त में जितने वर्ण एक चरण में रहें उन्हें दूना करे लघु और गुरु को पलट देवे अर्थात उत्तरोत्तर दो से गुणा कर अंकों को दुगुणा करता चला जाय इस रीति से जितनी मात्रा लघु होंगी उसकी आधी गुरु और गुरु की दुगुनी लघु मात्रा होवेंगी ऐसे जितने जिसके प्रस्तार हैं वे सब प्रत्यक्ष हो जावेंगे। जैसा आगे के चक्र में लिखा है॥

छन्द	प्रस्तार	छन्द	प्रस्तार
०	१	१९	५२४२८८
१	२	२०	१०४८५७६
२	४	२१	२०९७१५२
३	८	२२	४१९४३०४
४	१६	२३	८३८८६०८
५	३२	२४	१६७७७२१६
६	६४	२५	३३५५४४३२
७	१२८	२६	६७१०८८६४
८	२५६	२७	१३४२१७७२८
९	५१२	२८	२६८४३५४५६
१०	१०२४	२९	५३६८७०९१२
११	२०४८	३०	१०७३७४१८२४
१२	४०९६	३१	२१४७४८३६४८
१३	८१९२	३२	४२९४९६७२९६
१४	१६३८४	३३	८५८९९३४५९२
१५	३२७६८	३४	१७१७९८६९१८४
१६	६५५३६	३५	३४३५९७३८३६८
१७	१३१०७२	३६	६८७१९४७६७३६
१८	२६२१४४	३७	१३७४३८९५३४७२
		३८	२७४८७७९०६९४४

छन्द	प्रस्तार	छन्द	प्रस्तार
३९	५४९७५५८१३८८८	४५	३५१८४३७२०८८८३२
४०	१०९९५११६२७७७६	४६	७०३६८७४४१७७६६४
४१	२१९९०२३२५५५५२	४७	१४०७३७४८८३५५३२८
४२	४३९८०४६५११४०४	४८	२८१४७४९७६७१०६५६
४३	८७९६०९३०२२२०८	४९	५६२९४९९५३४२१३१२
४४	१७५९२१८६०४४४१६	५०	११२५८९९९०६८४२६२४

ऐसे ही और भी जानो ॥

अब उनके प्रस्तार के स्वरूप निकालने की रीति लिखते हैं ॥

(१३) जो जिसका रूप है उस में पहिले गुरु के स्थान में लघु लिखदे फिर ज्योंका त्यों बना रहनेदे इसी प्रकार जहां लों सब लघु न हो जाय तब तक लिखता चला जाय । जैसा आगे के चक्र में कुछ उदाहरण के लिये लिखा है ॥

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
१	उक्ता	२	ऽ १
			। २
२	अत्युक्ता	४	ऽ ऽ १
			। ऽ २
			ऽ । ३
			। । ४
३	मध्या	८	ऽ ऽ ऽ १
			। ऽ ऽ २
			ऽ । ऽ ३
			। । ऽ ४
			ऽ ऽ । ५
			। ऽ । ६
			ऽ । । ७
			। । । ८

वर्ण	छन्द	भेद	रूप
४	प्रतिष्ठा	१६	ऽ ऽ ऽ ऽ १
			। ऽ ऽ ऽ २
			ऽ । ऽ ऽ ३
			। । ऽ ऽ ४
			ऽ ऽ । ऽ ५
			। ऽ । ऽ ६
			ऽ । । ऽ ७
			। । । ऽ ८
			ऽ ऽ ऽ । ९
			। ऽ ऽ । १०
			ऽ । ऽ । ११
			। । ऽ । १२
			ऽ ऽ । । १३
			। ऽ । । १४
			ऽ । । । १५
			। । । । १६
५	सुप्रतिष्ठा	३२	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ १
			। ऽ ऽ ऽ ऽ २
			ऽ । ऽ ऽ ऽ ३
			। । ऽ ऽ ऽ ४
			ऽ ऽ । ऽ ऽ ५
			। ऽ । ऽ ऽ ६
			ऽ । । ऽ ऽ ७
			। । । ऽ ऽ ८
			ऽ ऽ ऽ । ऽ ९
			। ऽ ऽ । ऽ १०

वर्ण	छन्द	भेद	रूप	
५	सुप्रतिष्ठा		ऽ । ऽ ।	११
			। । ऽ ।	१२
			ऽ ऽ । ।	१३
			। ऽ । ।	१४
			ऽ । । ।	१५
			। । । ।	१६
			ऽ ऽऽ ऽऽ	१७
			। ऽ ऽ ऽ।	१८
			ऽ। ऽ ऽ।	१९
			। । ऽ ऽ।	२०
			ऽऽ। ऽ।	२१
			। ऽ। ऽ।	२२
			ऽ।। ऽ।	२३
			।।। ऽ।	२४
			ऽऽऽ ।।	२५
			। ऽऽ ।।	२६
			ऽ। ऽ ।।	२७
			।। ऽ ।।	२८
			ऽऽ। ।।	२९
			। ऽ। ।।	३०
			ऽ।।।।	३१
			।।।।।	३२

ऐसे ही एकवर्ण से लेकर पचास वर्णतक जैसे ऊपर लिख आये हैं उन सब के रूप इसी प्रकार क्रिया के करने से प्रत्यक्ष हो जाते हैं। यहां विस्तार के भय से और व्याकरण के ग्रंथ में उपयोगी न समझ कर उन्हें छोड़ दिया है ॥

अब वृत्तों में के भेद होते हैं उसके जानने की रीति ॥

१ समवृत्त ।

(१४) जिसके चारों चरण तुल्य होते हैं उसे समवृत्त कहते हैं ॥

२ अर्धसमवृत्त ।

(१५) जिसके दो चरण सम हों और शेष दो पाद विषम रहें तो उसे अर्धसमवृत्त कहते हैं ॥

३ विषमवृत्त ।

(१६) विषमवृत्त का लक्षण यह है कि जिस वृत्त के चारों पाद आपस में तुल्य न होवें । आगे क्रम से इन सब के उदाहरण लिखते हैं ॥

१ समवृत्त का उदाहरण ।

बोलो कृष्ण मुकुन्द मुरारे त्रिभुवन विदित काम सब सारे ।
जरासंध कंसहि प्रभु मारा त्रिभुवन विदित काम सब सारा ॥

२ अर्धसमवृत्त का उदाहरण ।

राम राम कहि राम कहि वालि कीन्ह तन त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठते गिरत न जान्यो नाग ॥

३ विषमवृत्त का उदाहरण ।

राम राम भजु राम कंचन अस तनु धरि जगत ॥
जप तप शम दम व्रत नियम निकाम । करि करि हरि पद पद्म धरि उतरि जवैया हो ॥

कुछ वृत्त अब दृष्टान्त के निमित्त आगे लक्षण और उदाहरण के साथ लिखते हैं । विद्यार्थियों को उचित है कि इन्हें सीखें तो प्रायः छन्दों की रचना में नियमानुसार अशुद्धता न रहेगी और निपुणता प्राप्त होगी ॥

इस प्रकरण में इतनी बातों का जानना अत्यन्त आवश्यक है ॥

१	छन्दोलक्षण	४	उद्दिष्ट
२	उदाहरण	५	प्रस्तार
३	नष्ट	६	प्रस्तारनाम

७	समवृत्तलक्षण	११	विषमवृत्तलक्षण
८	समवृत्त का उदाहरण	१२	विषमवृत्त का उदाहरण
६	अर्धसमवृत्तलक्षण	१३	गणागणविचार
१०	अर्धसमवृत्त का उदाहरण		

जो छन्द जितनी मात्रा का होता है और उस में ग्रन्थ के अनुसार आदि अन्त वा मध्य में जितने गुरु वा लघु लिखने की बिधि है उसी क्रम से अब हम पहिले कुछ मात्रावृत्त लिखते हैं ऊपर उनका लक्षण और नीचे उदाहरण मिलेगा ॥

पहिले बड़े बड़े छन्दों को लिखते हैं फिर पीछे से छोटे छोटे भी लिखे जायंगे ॥

३१ मात्रा का सवैया छन्द ।

(१) ३१ मात्रा का सवैया छन्द होता है उस में आदि अन्त में गुरु लघु का नियम नहीं । जैसे

अरब खरब लो लाभ अधिक जहं बिन हर हासिल लाद पलान ।
सेंतिहि लये देवैया राजी ओर हि दये न अपनो जान ।
ऐसो राम नाम को सौदा तोहि न भावत मूढ़ अजान ।
निसि दिन मोह बस दौर नकर करत सवैया जनम सिरान ॥

सोलह मात्रा का छन्द ।

(२) चतुष्पदाछन्द उसे कहते हैं जिस में १६ मात्रा हों और उसके आदि अन्त में गुरु लघु का नियम नहीं ॥ उदाहरण ॥

जामवंत के बचन सुहाये सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये ।
तब लग परिखेहु तुम मोहि भाई सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥

अड़तालिस मात्रा का सोरठा छन्द ।

(३) इसके पहिले और तीसरे में ग्यारह और चौथे दूसरे में तेरह ॥ ॥ ३० ॥ जैसे

मुक्तिजन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ हानिकर ।
जहं बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न ॥

दोहा छन्द इसी सोरठा के उलटने से दोहा बन जाता है ॥ ३० ॥

अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुक झुक परत जेहि चितवत इक बार॥

१४४ मात्रा का कुंडलिया छन्द।

(४) इसी दोहे के चौथे चरण को पुनरुक्त करके शेष मात्रा बढ़ा देते हैं॥ उ० ॥

टूटे नख रद केहरी वह बल गयो थकाय।
आह जरा अब आइ के यह दुख दयो बढ़ाय॥
यह दुख दयो बढ़ाय चहूं दिश जंबुक गाजें।
शशक लोमरी आदि स्वतन्त्र करें सब राजें॥
बरनें दीनदयाल हरिन बिहरें सुख लूटे।
पंगु भये मृगराज आज नख रद के टूटे॥

अब मात्रा सम्बन्धी छोटे छोटे छन्द लिखे जाते हैं॥

पांच मात्रा का छन्द।

(५) आदि की एक मात्रा लघु हो और अन्त की दो मात्रा गुरु हों तो उसे ससि छन्द कहते हैं॥ उ०॥ मही में। सही में। जसी से। ससी से।

प्रिया छन्द उसे कहते हैं जिसके आदि अन्त में गुरु और मध्य में लघु हो॥ उ०॥ है खरो। पत्थरो। तो हिया। री प्रिया॥

तरनिजा छन्द।

(६). जिस में आदि की तीन मात्रा लघु और सब गुरु हों॥
उ० उर धरो। पुरुष सो। वरनिजा। तरनिजा॥

पंचाल।

(७) जिसके आदि में दो गुरु और अन्त में एक लघु हो॥
उ० नाचन्त। गावन्त। दैताल। वैताल॥

बीर छन्द :

(८) जिसके आदि और अन्त की मात्रा ह्रस्व हों औ मध्य की दीर्घ हों॥
उ० हरु पीर। अरु भीर। वरधीर। रघुबीर॥

छ मात्रा का छन्द।

(९) जिस में सब गुरु हों॥ उ०॥ नव्वे है। संभूपे। बैताली।

राम छन्द ।

(१०) जिसके आदि के दो ह्रस्व हों और अन्त के दो गुरु हों ।
जग माहीं । सुख नाहीं । तजि कामें । भजि रामें ॥

नगन्निका छन्द ।

(११) जिस में एक गुरु और एक लघु होवे ॥
प्रसिद्ध हो । अघन्निका । नगिद्ध हो । नगन्निका ॥

कला छन्द ।

(१२) उसे कहते हैं जिसके अन्त में गुरु और मध्य में लघु होवे ॥
धीर गहो । आजु लहो । नन्दलला । कामकला ॥

अब वे वृत्त लिखे जाते हैं जिनकी गिनती वर्णों से होती है ॥

(१) अब उन वर्णवृत्त का नाम कहते हैं जिन में चारों पाद तुल्य होते हैं ॥

(२) एक गुरु का श्रीछन्द होता है ॥ उ० ॥ वागदेवी हैं ॥

(३) दो गुरु का कामा ॥ उ० ॥ रामाकृष्णा ॥

(४) एक गुरु और एक लघु का मही छन्द होता है ॥उ०॥ हरे हरे ॥

(५) दो लघु का मधु छन्द होता है ॥ उ० ॥ हरि हरि ॥

(६) आदि गुरु और अन्त लघु का सार छन्द होता है ॥

उ० रामकृष्ण ॥

(७) एक मगण का ताली छन्द होता है ॥ उ० ॥ कन्हाई सो भाई ॥

(८) एक रगण का मृगी छन्द होता है ॥ उ० ॥ प्रेम सों पां गिरों ॥

(९) एक यगण का शशी छन्द होता है ॥ उ० ॥ भवानी सुहानी ॥

(१०) एक सगण का रमण छन्द होता है ॥ उ० ॥ विधु की रजनी ॥

(११) एक तगण का पञ्चाल छन्द होता हैं ॥ उ० ॥ या सर्व संसार ॥

(१२) एक नगण का कमल छन्द होता है ॥ उ० ॥ कमल कुमुद ॥

(१३) एक मगण और एक गुरु का तीर्न्ना छन्द होता है ॥

उ० जै गोविन्दा जै गोविन्दा ॥

(१४) एक रगण और एक लघु का धारी छन्द होता है ॥

उ० नन्दलाल कंसकाल ॥

(१५) एक जगण और एक गुरु का नगानिका छन्द होता है ॥
उ० करो चितें न चंचले ॥
(१६) एक नगण और एक गुरुका सती छन्द होता है ॥
उ० छल तजे सुख लहे ॥
(१७) एक मगण और दो गुरु का सम्मोहा छन्द होताहै ॥
उ० श्रीराधा माधो अराधो साधो ॥
(१८) एक तगण और दो गुरुका हारित छन्द होता है ॥
उ० गौरी भवानी जै जै मृडानी ॥
(१९) एक भगण और दो गुरु का हंसी छन्द होताहै ॥
उ० मोहन माधो गावहु साधो ॥
(२०) एक नगण और दो लघु का जमक छन्द होताहै ॥
उ० मरण जग धरण नग ॥
(२१) दो मगण का शेषराज छन्द होताहै ॥
उ० गोविन्दा गोपाला केशी कंसा काला ॥
(२२) दो सगण का डिल्ल छन्द होताहै ॥
उ० प्रभु सो कहिये दुख मों हरिये ॥
(२३) दो जगण का मातली छन्द होता है ॥
उ० गुविन्द गोपाल कृपाल दयाल ॥
(२४) एक तगण और एक यगण का तनुमध्या छन्द होता है ॥
उ० मों हिय कलेशा टारो करि वेशा ॥
(२५) एक नगण और एक यगण का शशिवदना छन्द होता है ॥
उ० हरि हरि केशो सुभग सुवेशो ॥
(२६) एक तगण और एक सगण का वसुमती छन्द होता है ॥
उ० गोपाल कहिये आनन्द लहिये ॥
(२७) दो रगण का विमोहा छन्द होता है ॥
उ० देवकीनन्दनं भक्त भौ भंजनं ॥
(२८) एक रगण और एक यगण और एक गुरु का प्रमाणिका छन्द होता है ॥
उ० राम राम गाईये रामलोक पाईये ॥

(२६) एक नगण और एक जगण का वास छन्द होता है ॥
उ० भजु मन मोहन परम सुसोहन ॥
(३०) एक नगण और एक सगण और एक लघु का करहञ्च छन्द होता है ॥
उ० हरि चरण सेऊ सुख परम लेऊ ॥
(३१) दो भगण और एक गुरु का शीर्षरूप छन्द होता है ॥
उ० जै जै कृष्ण गोपाला राधामाधो श्री पाला ॥
(३२) एक मगण और एक सगण और एक गुरु का मदलेखा छन्द होता है ॥
उ० गोविन्द कहि माधो केशोजी हरि साधो ॥
(३३) दो नगण और एक गुरु का मधुमती छन्द होता है ॥
उ० भजु हरि चरना असरन सरना ॥
(३४) एक भगण और एक मगण और दो गुरु का विद्युन्माली छन्द होता है ॥
उ० जै जै जै श्री राधा कृष्णा केशो कंसाराती विष्णा ॥
(३५) एक जगण और एक रगण और एक लघु का प्रमाणिका छन्द होता है ॥
उ० भजो भजो गोपाल को कृपाल नन्दलाल को ॥
(३६) एक रगण और जगण और एक गुरु और लघु का मल्लिका छन्द होता है ॥
उ० राम कृष्णा राम कृष्णा वासुदेव विष्णा विष्णा ॥
(३७) दो नगण और दो गुरु का तुंगा छन्द होता है ॥
उ० गगन जलद छाये मदन जग सुहाये ॥
(३८) एक नगण और सगण और एक लघु और एक गुरु का कमल छन्द होता है ॥
उ० हरि हरि कहो कहो सब सुख लहो लहो ॥
(३९) एक जगण और एक सगण और एक लघु और एक गुरु का कुमारलसिता छन्द होता है ॥
उ० भजो जु सुखकन्द को हरो जु दुखदन्द को ॥

(४०) दो भगण और दो गुरु का चिचयहा छन्द होता है ॥
उ० दीनदयाल जु देवा मैं न करी प्रभु सेवा ॥
(४१) तीन रगण का महालक्ष्मी छन्द होता है ॥
उ० राधिका वल्लवं भजेई ले छिनी इन्द्र से पाइले ॥
(४२) एक नगण और एक यगण और एक सगण का सारंगिक छन्द होता है ॥
उ० हरि हरि केशो कहिये सब सुख सारा लहिये ॥
(४३) एक मगण और एक भगण और एक सगण का पाईता छन्द होता है ॥
उ० आये आली जलद समै केकी कूजे जिय भरमै ॥
(४४) दो नगण और एक सगण का कमला छन्द होता है ॥
उ० कमल सरस नयनी शशि मुखि पिक बयनी ॥
(४५) एक नगण और एक सगण और एक यगण का बिम्ब छन्द होता है ॥
उ० तुलसि बन केलिकारी सकल जन चित्तहारी ॥
(४६) एक सगण दो जगण का तोमर छन्द होता है ॥
उ० नवनील नीरदश्याम शुकदेव शोभान नाम ॥
(४७) तीन मगण का रुपमाली छन्द होता है ॥
उ० अंगा वंगा कालिंगा काशी गंगा सिन्धू संगामा भासी ॥
(४८) एक सगण और दो जगह और एक गुरु का संयुत छन्द होता है ॥
उ० हरि कृष्ण केशव वामना वसुदेव माधव पावना ॥
(४९) एक भगण और एक मगण और सगण और गुरु का चंपकमाला छन्द होता है ॥
उ० कंसनिकन्दा केशव कृष्णा वामन माधो मोहन विष्णा ॥
(५०) तीन भगण और एक गुरु का सारवती छन्द होता है ॥
उ० राम रमापति कृष्ण हरी दीनन के सुविपत्ति हरी ॥
(५१) एक तगण और एक यगण और एक भगण और एक गुरु का सुखमा छन्द होता है ॥
उ० राधा रमना बाधा हरना साधो शरना माधो चरना ॥

(५२) एक नगण और जगण और एक नगण और एक गुरु का अमृतगति छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि केशव कहिये सुरसरि तीर जुरहिये ॥

(५३) एक रगण और एक नगण और एक भगण और दो गुरु का सुपथ छन्द होता है ॥

उ० वासुदेव वसुदेव सहायी श्रीनिवास हरि जय यदुरायी ॥

(५४) तीन भगण और दो लघु का नीलस्वरूप छन्द होता है ॥

उ० गोबिंद गोकुल गोप सहायी माधो मोहन श्री यदुरायी ॥

(५५) एक नगण और दो जगण और एक लघु और एक गुरु का सुमुखी छन्द होता है ॥

उ० हरि हरि केशव कृष्ण कहो निश दिन संगति साधु गहो ॥

(५६) तीन नगण और एक लघु और एक गुरु का दमनक छन्द होता है ॥

उ० अमल कमल दल नयनं जलनिधि जलकृत शयनं ॥

(५७) एक रगण और एक जगण और एक रगण और एक लघु और एक गुरु का श्योनिका छन्द होता है ॥

उ० कृष्ण कृष्ण केशिकंस कन्दना देहु सुख नन्दनन्दना ॥

(५८) तीन मगण और दो गुरु का मालती छन्द होता है ॥

उ० रामा कृष्णा गायिये कन्ता केसौ कहिये श्री अनन्ता ॥

(५९) दो तगण और एक जगण और दो गुरु का इन्द्रवज्रा छन्द होता है ॥

उ० गोविन्द गोपाल कृपाल कृष्ण माधो मुरारी व्रजनाथ विष्णु ॥

(६०) एक जगण और एक तगण और एक जगण और दो गुरु का उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है ॥

उ० गुपाल गोविन्द मुरारी माधो रामेश नारायण साच साचो ॥

(६१) एक रगण और एक नगण और एक भगण और दो गुरु का उपजाति छन्द होता है ॥

उ० राम राम रघुनन्दन देवा बीरभद्र मम मानहु सेवा ॥

(६२) चार यगण का भुजंगप्रयात छन्द होता है ॥

उ० घरे चन्द्रमाथे महाजोति राजे चढ़ी चण्डिका सिंह संग्राम गाजे ॥

(६३) चार सगण का तोटक छन्द होता है ॥

उ० शिवशंकर शम्भु त्रिशूल धरं शितिकंठ गिरीश फणीन्द्र करं ॥

(६४) चार रगण का लक्ष्मीधर छन्द होता है ॥

उ० श्रीधरे माधवे रामचंद्रं भजो द्रोह को मोह को क्रोध को जू तजो ॥

(६५) सारंग छन्द उसे कहते हैं जिस में चार भगण हो रहते हैं ॥

उ० गोपाल गोविन्द श्रीकृष्ण कंसारी केशो कृपा सिंधु मो पाप संहारी ॥

(६६) जिस में चार जगण रहते हैं उसे मौक्तिकदाम छन्द कहते हैं ॥

उ० गुपाल गोविन्द हरे नदनन्दन दयाल कृपाल सदा सुखकन्दन ॥

(६७) तोटक छन्द का लक्षण यह है जिस में चार भगण होवें ॥

उ० केशो कृष्ण कृपाल कर । मूरति मैन मुकुन्द मनोहर ॥

(६८) तरलनयनी छन्द में चार नगण होते हैं ॥

उ० कलुष हरन हरि अघ हर कमल नयन कर गिरिधर ॥

(६९) सुन्दरी उसे कहते हैं जिस में एक नगण दो भगण एक रगण हों ॥

उ० मदन मोहन माधव कृष्ण जू गरुड़ वाहन वामन विष्णु जू ॥

(७०) एक सगण एक जगण और दो सगण का प्रमिताक्षरा छन्द होता है ॥

उ० बृजराज कृष्ण कर पक्षधरं रघुनाथ रामपद देववरं ॥

यद्यपि यहां सब वृत्त नहीं लिखे गये हैं तो भी इतने लिखे हैं कि प्राय: प्रयोजन न अड़ेगा और व्याकरण के ग्रन्थ में सब छन्दों का लिखना उचित भी नहीं है इस कारण साधारण से कुछ लिख कर बहुत से छोड़ दिये हैं ॥

गति अर्थात जिन में राग रहता है जैसे सूरसागर के भजन आदि होते हैं उनकी रचना भी इसी प्रकार हुआ करती है ॥

॥ इति छन्दोनिरूपण ॥

सूचीपत्र ॥